UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182695
UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Librar

H82
Call No G 72S
Accession No.
PGH 2253

Author गोविन्द दास

Title शशशाङ्क

This book should be returned on or before th
marked below.

शेरशाह

गोविन्द दास

प्रगति प्रकाशन,
दिल्ली

प्रथमावृत्ति

मूल्य ढाई रुपये

कापीराइट

प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स, ७/२३, दरियागंज, दिल्ली द्वारा प्रकाशित
जयहिन्द प्रेस, जबलपुर में मुद्रित।

पात्र—स्थान—समय

मुख्य पात्र

फ़रीद—बाद मे शेरखाँ, बाद में शेरशाह

निज़ाम—फरीद का छोटा भाई

हसन—फरीद का पिता

ब्रह्मादित्य गौड़—फरीद का मित्र

रहमान—निजाम का नौकर

ईसा खाँ शेरवानी—एक पठान अमीर

लाड बानू—बाद मे लाड मलिका, चुनार के सूबेदार ताज खाँ की बेगम, बाद मे शेरशाह की बेग़म

नसीम—लाड मलिका की मैना

हुमायूं—मुगल सम्राट

स्थान

सहसराँ—बिहार प्रान्त मे एक कसबा

जौनपुर

आगरा

बिहार शरीफ--बिहार प्रान्त की राजधानी

चुनार

रोहतास गढ

शाहचा, चौसा } बिहार प्रान्त के दक्षिण मे दो गाँव

गौड--बगाल की राजधानी

कन्नोज

दिल्ली

समय

सन् १५११ से १५४१ ईस्वी तक

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—सहसराँ मे हमन के मकान मे निजाम का कमरा

समय—प्रात:काल

[एक छोटा सा कमरा है। कमरे के तीन ओर की दीवाले दिखती है, जो सफेद पुती हुई है। दीवालों में कुछ छोटे-छोटे दरवाजे है, जिनकी चौखटें और किवाड़ भद्दे से है। छत पर कपडे की चाँदनी है और उससे कुछ काँच की हाँडियाँ लटक रही है। जमीन पर क़ालीन है, जिसका रंग भद्दरंग हो गया है। क़ालीन पर सफ़ेद चादर से ढकी हुई गद्दी है और गद्दी पर श्वेत खोलियो से आच्छादित कुछ मसनद। दीवालो पर फ़रीद की कई तस्वीरे लगी हुई है; ये सब हाथ से बनायी गयी है और सब मे उसकी अवस्था लगभग सोलह वर्ष की होते हुए भी तस्वीरें अलग अलग ढंग की है। कुछ चित्र प्राकृतिक दृश्यो के भी लगे है। निज़ाम बैठा हुआ फ़रीद का ही एक चित्र और बना रहा है। निज़ाम के निकट कई प्याले रक्खे है, जिनमें भिन्न भिन्न प्रकार के रंग घुले हुए है और क़लमे पडी हुई है। निजाम की अवस्था सोलह वर्ष के लगभग है। वह गोरे रंग का ऊँचा-पूरा, किन्तु कुछ दुबला, बहुत ही

न्दर लड़का है, उम्र से वह कुछ ज्यादा का जान पड़ता है। सर पर पट्टे हैं और ऊपर के ओठ पर रेख निकल रही है। ह सफेद कुरता और पायजामा पहने हुए है। चित्र बनाते हुए ह गा भी रहा है।]

गीत

ससार मे कैसे जीना है
बस प्रेम का प्याला पीना है

जब प्रेम नही तो कुछ भी नही
यह नियम नही तो कुछ भी नही
ससार मे कैसे जीना है

मै प्रेम सिखाऊँगा सब को
इस राह पे लाऊँगा सब को
ससार मे कैसे जीना है

मै रंग जमाये जाता हूँ
तस्वीर बनाये जाता हूँ
ससार मे कैसे जीना है

[हसन का प्रवेश। हसन की उम्र क़रीब पचपन साल की है। वह गेहुएँ रंग का, ऊँचा-पूरा, मोटा-ताज़ा आदमी है। सिर पर पट्टे हैं। चेहरे पर बड़ी बड़ी मूँछें और-लम्बी दाढ़ी। बाल यत्र-तत्र श्वेत हो चले हैं। वह सफ़ेद रंग का अँगरखा और पायजामा पहने है। सिर पर मुसलमानी ढग की पगड़ी लगाये है। हसन को देखकर निज़ाम गाना और चित्र बनाना बन्द कर बड़ा हो जाता है।]

हसन—जा र ा हूँ, बेटा, और अहद करके जा रहा हूँ कि बिना फरीद को लिये वापस न लौटूंगा ।

निजाम—खुशी की बात है, अब्बा, पर अफ़सोस यही है कि आपको जाते-जाते इतना वक्त लग गया । उन्हे गये दस साल गुजर गये, अब्बा ।

हसन—**(लम्बी साँस लेकर)** हाँ, मुद्दत दराज के बाद जा रहा हूँ इसमे शक नही, लेकिन, बेटा, पहले तो उसका पता ही न लगा, जब मुशकिल से पता चला कि वह जौनपुर मे है, तब यहाँ जागीर की इतनी झझटे बढो कि निकलना ही न हो सका, पता लगने के बाद खत तो न जाने कितने भेजे ।

[निजाम कोई उत्तर न देकर घृणा से हँस देता है ।]

हसन—**(ध्यान पूर्वक निज़ाम को देखते हुए)** तू समझता है, मै उससे मुहब्बत नही करता ?

[निज़ाम फिर भी कुछ न कह उसी प्रकार हँस देता है ।]

हसन—**(निज़ाम की ओर उसी तरह देखते हुए)** बाप का दिल तू क्या जाने, निजाम ? बाप होने पर ही बाप का दिल जाना जा सकता है । रोज़-रोज़ उसकी तस्वीरे बनाकर तू समझता है कि तू उसे मुझसे ज्यादा चाहता है ? मै तुझ जैसा मुसव्विर नही, न शायर हूँ, लेकिन, बेटा, उसकी तस्वीर खिची हुई है मेरे दिल पर, उसके गाने गाया करती है मेरी रूह । इन दस सालो मे एक दिन भी मै चैन से सो नही सका हूँ, एक वक्त भी पेट भर खाना नही खा सका हूँ । हाँ, इतना ज़रूर है कि मेरे लिए जैसा फरीद है वैसा

ही तू और तेरे दोनो भाई। मुझे सबके ही आराम, तकलीफ की तरफ देखना पडता है। जागीर को न देखूं तो तुम सब खाओ क्या, पहनो क्या, रहो कहाँ ? गुजश्ता सालो मे जागीर मे झझटे रही है उनके सबब से इसके पहले सहसराँ छोडना ही मेरे लिए गैर मुमकिन था।

निज़ाम--मैं तो इतना ही कह सकता हूँ, अब्बा, कि अगर आज आप न जाते तो मैंने जाना तय कर लिया था।

हसन--**(कुछ क्रुद्ध हो)** और तू समझता है कि तेरे जाने से वह आ जाता ? मेरे खत उसे ला न सके और तू उसे ले आता ?

निज़ाम--अगर वह न आते तो मै वही रह जाता।

हसन--**(और क्रोध से)** तू भी वैसा ही गुस्ताख होता जा रहा है जैसा कि वह हो गया था। 'वही रह जाता !' रह जाता तो मालूम होता ! उसी को खाने और पहनने के लाले पडे होगे, तुझे वह खिलाता पिलाता, यह तनजेब और चिकन पहनाता ! तुम्ही लोगो के लिए दिन रात मरा जा रहा हूँ, कभी तीसरे पहर खाता हूँ तो कभी शाम को, कभी फाका ही हो जाता है, कभी आधी रात को सोता हूँ तो कभी पूरी की पूरी रात जागते-जागते ही गुजर जाती है, और कैसे एहसान-फरामोश निकले तुम दोनो भाई !

[हसन का पैर पटकते हुए जल्दी से प्रस्थान। निज़ाम कुछ देर तक उसी ओर देखता है जिस तरफ से हसन गया है। एकाएक उसकी आँखों में आँसू आ जाते है। कुछ रुककर कुरते की जेब से रूमाल निकाल वह आँखें पोंछ डालता है। कुछ

देर पश्चात् वह घूमते हुए एक एक कर फ़रीद के सब चित्रों को देखता है और गाना आरम्भ करता है।]

गीत

तुम्हारी जुदाई मुसीबत है मुझको
यह दुनिया मे अच्छी कयामत है मुझको
तुम्हारे लिए क्या से क्या हो गया हूँ
हकीकत यही है कि मैं खो गया हूँ
इन आँखो से दिन रात आँसू है जारी
यह तस्वीर कहती नही कुछ तुम्हारी
मेरे दर्द के दुख का चारा यही है
मेरी जिन्दगी का सहारा यही है
बहुत याद अब तेरी आती है मुझको
कहूँ किस तरह अब सताती है मुझको

[गाते-गाते निज़ाम फिर बैठ कर जो चित्र बना रहा था, उसी को बनाने लगता है।]

लघु-यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—जौनपुर मे फरीद के मकान का एक कमरा

समय—दोपहर

[कमरे की बनावट सहसराँ के निज़ाम के कमरे के सदृश होते हुए भी यह उससे बहुत बड़ा है और चौखट दरवाज़े

वैसे छोटे तथा भद्दे नहीं। सजावट भी वहाँ से अधिक है। गद्दी पर मसनद के सहारे फ़रीद बैठा हुआ है। वह हुक्का पी रहा है। उसकी अवस्था लगभग पच्चीस वर्ष की है। वह गेहुएँ रंग का ऊँचा-पूरा, दुहरे शरीर का व्यक्ति है। सहसराँ में निज़ाम की बनायी हुई तस्वीरों से उसका मुख मिलता अवश्य है, परन्तु मूँछें कुछ बड़ी हो जाने तथा ख़सख़सी दाढ़ी रख लेने के कारण उसमें यथेष्ट अन्तर पड़ गया है; फिर अवस्था भी दस वर्ष बढ़ गयी है। वह कीमती तनजेब का, बहुत अच्छा सिला हुआ, अँगरखा और पायजामा पहने हुए है। सिर खुला हुआ है, जिस पर पट्टे हैं। उसके निकट ही ब्रह्मादित्य गौड़ बैठा हुआ है। ब्रह्मादित्य की अवस्था फ़रीद से कुछ कम दिखती है। वह गौर वर्ण ऊँचा-पूरा, कुछ मोटा व्यक्ति है। सिर के बाल छोटे छोटे हैं और छोटी छोटी मूँछें। वह अँगरखा और धोती पहने है; गले मे दुपट्टा लिये है और सिर पर गोल पगड़ी लगाये है। ललाट पर उसके त्रिपुन्ड है।]

फ़रीद—हाँ, आज दसवाँ साल खत्म होता है, पडित।

ब्रह्मादित्य—और ये दस वर्ष आपको दस दिनों के सदृश जान पडते होगे ?

फ़रीद—दस दिन के मानिन्द तो क्या, लेकिन वक्त बहुत जल्द गुजरा, इसमे शक नही। घर छोडने के पहले दिन और हफ्ते ही नहीं, महीनो दिल बेताब सा रहा। न जाने क्या-क्या सोचा, कैसे-कैसे खयाल आये। (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ

छोड़ते हुए) जब कभी नयी माँ कुछ कह देती, तबियत होती फौरन भाग चलूं, पर बच्चा ही था, न जाने कैसी कैसी मुसीबते उठानी पडे, यह सोच, फिर रुक जाता। पडित, कितना अच्छा हुआ कि हिम्मत कर चला आया ।

ब्रह्मादित्य——इसम कोई सन्देह है ? जौनपुर आपके लिए बडी से बडी पाठशाला सिद्ध हुआ ।

फ़रीद——बेशक, दुनिया का शायद कोई मदरसा मुझे ऐसी तालीम न दे सकता था, जैसी जोनपुर ने दी । पढा, लिखा, इतना ही नही, पर इस सूबे का सच्चा सवाल समझ लिया । यह सूबा खेती करने वालो का है । उनकी भलाई ही सूबे की सच्ची खिदमत है । **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआं छोडते हुए)** वह पैदा करते है और हुकूमत उनकी हिफाज़त । हुकूमत का फर्ज है यह देखना कि उनके पैदाइश के काम मे तरक्की हो और वह चेन से रहे । इसीलिए काश्तकारो की पैदाइश का कुछ जुज सल्तनत को मिलता है। कम से कम वसूल कर उसके ज्यादा से ज्यादा हिस्से को आम लोगो की बहबूदी और आराम के लिए खर्च करना ही फर्ज मन्सबी है ।

ब्रह्मादित्य——परन्तु आपके आने के पहले यहाँ क्या हो रहा था ? उत्पत्ति करने वाले किसानों और रक्षा करने वाले राज्य का परस्पर कैसा सम्बन्ध था ? अगणित के परिश्रम पर उँगलियो पर गिने जाने वाले मनमाने सुख भोग रहे थे, और यह अगणित को दुखी रख कर । किसान अपने कर्त्तव्यो का

पालन कर रहे थे, पर राजकर्मचारी नही । रक्षक भक्षक बने हुए थे । उत्पन्न करने वालो के पास न पूरा भोजन था, न वस्त्र, न सुविधाजनक घर । पर इतने पर भी राजकर्मचारियो को किसी भी वस्तु की कमी न थी ।

फरीद––अहलेकार अपने फर्ज को ठीक तरह अदा करे. इसी काम की जरूरत थी, पडित, और ज्यो ही यह हुआ त्यो ही दस साल मे क्या हो गया !

ब्रह्मादित्य––सूबेदार से जितना काम आपको मिला और आपने जिस योग्यता मे किया, उसमे एक बात और सिद्ध हो जाती है ।

फ़रीद––क्या ?

ब्रह्मादित्य––यह कि यदि अपको अवसर मिले तो आप इसी प्रकार सारे देश का प्रबध कर सकते है ।

फ़रीद––(**मुस्करा कर**) तमाम मुल्क का इन्तजाम ! न मालूम तुमने मुझ जैसे नाचीज मे क्या-क्या उम्मीदे बाँध रखी है ।

ब्रह्मादित्य––इसका कारण है ।

फरीद––क्या ?

ब्रह्मादित्य––कार्य के लिए अत्यधिक तत्परता और त्याग के अतिरिक्त आपमे भेद भाव नही, आपके लिए जैसे मुसलमान है वैसे ही हिन्दू ।

फ़रीद––हिन्दू मुसलमानो का फर्क तो मेरी समझ मे ही

नहीं आता। सच्चे खादिम के दिमाग मे हिन्दू-मुस्लिम सवाल नही उठ सकता। (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) खेती मुसलमान भी करते है और हिन्दू भी, चाहे एक मस्जिद मे नमाज पढे और दूसरे मन्दिर मे पूजा करे। फिर मेरे तो सबसे बडे दोस्त, तुम, हिन्दू हो, जिसकी मदद के बिना मै कुछ भी न कर सकता था।

ब्रह्मादित्य—एक बात मैने आपमे और देखी है; जानते है ?

फ़रीद—कौन सी ?

ब्रह्मादित्य—भेद-भाव से रहित इस सेवा मे आपको एक विचित्र प्रकार का सुख मिलता है, एक अद्भुत ढग का सन्तोष होता है। आप इस कार्य मे ऐसे तल्लीन हो जाते है कि अपने घर द्वार और जागीर को ही नही, अपने आपको भी भूल जाते है।

फरीद—(**कुछ सोचते हुए**) शायद तुम ठीक कहते हो, पडित। पर फिर भी ऐसे वाकये कम नही आते, जब मुझे सहसरॉ की याद आ जाती है।

ब्रह्मादित्य—पर पहले जैसी नही, अब तो अधिकतर यह इसलिए होता है कि जो आपने जौनपुरमे किया वही आप अपनी जागीर मे करना चाहते है।

[**एक नौकर का प्रवेश।**]

नौकर—(**सलामकर**) हूजूर के वालिदे बुजुर्ग तशरीफ़ ला रहे है।

फ़रीद--(**चौंककर खड़े होते हुए** (वालिद. .. वालिद (**नौकर से**) हुक्का उठाकर लेजा ।

[ब्रह्मादित्य भी खड़ा हो जाता है । नौकर हुक्का उठाकर जाता है । हसन का शीघ्रता से प्रवेश । फरीद जल्दी से आगे बढ़ जमीन तक झुककर हसन के क़दम लेता है । हसन उसे गले लगा लेता है । ब्रह्मादित्य हसन को सलाम करता है । हसन सलाम का उत्तर देता है ।]

हसन--बेटा, इतने सगदिल हो गये कि इतने ख़तूत पर भी न आये और आखिर इस बुढ़ापे मे मुझे खिचकर आना पडा ।

फरीद--सगदिल सगदिल तो क्या, अब्बा, लेकिन सूबेदार ने यहाँ इतना काम सौप रक्खा है कि आने की फ़ुरसत ही नही मिलती । आप अच्छे तो है ?

हसन--हाँ, जिन्दा हूँ ।

[सब लोग बैठते है ।]

ब्रह्मादित्य--आपके साहबजादे ने तो जौनपुर की काया ही पलट दी है ।

हसन--ऐसा ! बहुतखुशी हुई मुझे यह सुनकर ।

फ़रीद--पर, अब्बा जान, जो कुछ मैं यहाँ पर कर सका वह सब इनके सबब से ।

हसन--यह तुम्हारे दोस्त है ?

फ़रीद--सबसे बडे ।

हसन--(**चारों तरफ़ देखते हुए**) यहाँ कोई तकलीफ

नो तुम्हे नजर नही आती ।

फरीद—बहुत आराम से हूँ ।

हसन—लेकिन अब तो तुम्हारे आराम मे खलल पडेगा, तुम्हे सहसराँ चलना है ।

फ़रीद—क्यो, सहसराँ में सब अच्छे तो है ? निजाम तो अच्छा है ?

हसन—हाँ, सब अच्छे है, पर जब तक कोई बुरी बात न हो, तब तक क्या घर लौटा नही जाता ?

फ़रीद—नही, सो तो नही, पर . . .

हसन—**(बीच ही में)** बेटा, मै बूढा हो रहा हूँ। मुझसे अब जागीर का काम नही होता । तुम्ही सबसे बडे हो । तुम्ही को अब जागीर देखनी है, तुम्ही को घर । जागीर की झझटो के सबब से ही तो मै अब तक आ नही सका । तुम्हारे दोस्त कहते है कि तुमने जौनपुर की काया पलट दी । यही चलकर अपनी जागीर में करो । यहाँ तो सब कुछ दूसरो के लिए करते हो; वहाँ अपने लिए करोगे ।

[फ़रीद कुछ न कहकर ब्रह्मादित्य की ओर देखता है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

हसन—उनकी तरफ क्या देखते हो ? वह तुम्हारे ऐसे दिली दोस्त है तो वह भी तुम्हारे साथ चलेंगे । बिरहमन जान पडते है ।

ब्रह्मादित्य—जी हाँ, ब्राह्मण हूँ ।

हसन—तो अलहदा मकान का इन्तजाम हो जायगा, और सारे सरो-सामान का भी। यहाँ कोई काम होगा तो दरम्यान मे यहाँ भी आप आ सकते है। (**कुछ रुककर फरीद से** (और फिर निजाम तो तुम्हारे बिना दीवाना हो जायगा।

फरीद—अच्छा, वह मुझे बहुत याद करता है ?

हसन—याद तो तुम्हे सभी करते ह, तुम्हारी वालिदा क्या तुम्हे कम याद करती है, सुलेमान और अहमद भी, ऐसा कोई दिन नही, जब तुम्हे न पूछते हो। खुदा जानता है, तुम्हारे आने के बाद नीद और खाना दोनो मेरे लिए हराम हो गये थे। पर निजाम की तो बात ही कुछ अलग है।

फ़रीद—अच्छा !

हसन—वह मुसव्विर और साथ ही शायर हो गया है। दिन रात तुम्हारी तस्वीरे बनाया करता है और तुम्ही पर शायरी।

फ़रीद—ओफ ! ओह !

[कुछ देर कोई कुछ नही बोलता।]

हसन—हाँ, तो हुक्म दो नौकर को कि असबाब बाँधे। (**ब्रह्मादित्य से**) और आप भी तैयार होइए, पडित जी।

फ़रीद—लेकिन, अब्बा जान, मुझे सूबेदार से इज़ाजत लेनी होगी, मै उनका नौकर हूँ।

ब्रह्मादित्य—(**मुस्कराते हुए**) यद्यपि सूबेदार इन्हे बहुत चाहते है, पर घर जाने की आज्ञा लेने मे कोई

कठिनाई न होगी ।

[हसन और फरीद दोनो दो प्रकार की दृष्टियो से ब्रह्मादित्य की ओर देखते हैं ।]

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—सहसराँ मे निजाम का कमरा

समय—प्रात काल

[दीवालो पर फरीद की पुरानी तस्वीरो के साथ अब नये चित्र भी लग गये हैं । निज़ाम बैठा हुआ फरीद का एक चित्र और बनाते हुए गा रहा है ।]

गीत

रहेगा दूर कब तक मेरे भाई
मुसीबत हो गयी तेरी जुदाई
तेरा ही ध्यान है दिन रात मुझको
नही है और कोई बात मुझको
मुझे दीदार तू अपना दिखाजा
बहुत दिन हो गये आजा अब आजा
तुझे देखूँ तो मै आराम पाऊं
गले से और सीने से लगाऊँ

[फरीद का प्रवेश । फरीद को देख निज़ाम चित्र

बनाना और गाना बद कर, खड़े हो, उसकी ओर बढ़ता है। दोनों आकर गद्दी पर बैठते हैं।]

फरीद—(जो चित्र बन रहा है, उसे देखते हुए) मेरी एक और तस्वीर बन रही है, निज़ाम ?

[निज़ाम कुछ न कहकर फ़रीद की ओर देखता है। फ़रीद का सिर झुक जाता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

फरीद—(सिर उठाते हुए) निज़ाम, तुम मुझे कितना चाहते हो !

[निज़ाम फिर भी कुछ नहीं कहता। फरीद का सिर फिर झुक जाता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता।]

फ़रीद—(फिर सिर उठाते हुए) शायद मेरा दिल तुम्हारे जैसा नहीं है, निजाम, उसमें शायद मुहब्बत ही नहीं है।

निज़ाम—(जल्दी से) नहीं-नहीं, ऐसा . .आपका ऐसा दिल हो नहीं सकता। मुहब्बत से खाली दिल तो रेगिस्तान जैसा होता है, भाईजान; आपका दिल तो ऐसा सरसब्ज़ है कि जहाँ भी आप जाते हैं चारों तरफ सरसब्ज़ी ही सरसब्जी नजर आने लगती है। जौनपुर में जो हुआ था उसे सुना ही था पर यहाँ आपके लौटने पर जो हुआ है उसे देख रहा हूँ।

फरीद—(विचारते हुए) लेकिन, निजाम, मैं देखता हूँ, जितना तुम मुझे चाहते हो, उतना मैं तुम्हें नहीं। जिस वक्त मैं जौनपुर गया, उस वक्त तुम बच्चे थे। आडी टेढी लकीरें तब भी अक्सर खींचते रहते थे। कुछ गुनगुनाने की भी आदत

थी। पर होश सँभालते ही मेरी एक पुराना तस्वार और अपनी याददाश्त पर मेरी कितनी तस्वीरें बना बना कर, मुझ पर शायरी लिख-लिख कर, तुमने मेरी जुदाई का वक़्त निकाला। जब यहाँ आया, देखा, मेरे साथ रहने के सिवा तुम्हें कोई बात ही अच्छी नही लगती। इस साथ से कभी कभी, चाहें मे ही ऊब उठता होऊँ झुँझला पडता होऊं, पर तुम..... ।

निज़ाम—(बीच ही मे भर्राये हुए स्वर से) इसका सबब है भाई साहब।

फ़रीद—(उत्सुकता से) क्या ?

निज़ाम—(उसी प्रकार के स्वर में) आपके दिल मे मुहब्बत की कमी नही, लेकिन उसे आपने बेशुमार निजामो मे बाँट दी है।

[फरीद का सिर झुक जाता है। निज़ाम उसकी तरफ़ देखता रहता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

फ़रीद—(सिर उठाते हुए) और तुम ऐसा नही कर सकते ?

निज़ाम—(गम्भीरता से सोचते हुए) शायद नही।

फ़रीद—यह क्यो ?

निज़ाम—(उसी प्रकार गम्भीरता से विचारते हुए) ठीक तो नही कह सकता, पर शायद इसलिए कि आपका दिल दरिया है और मेरा एक छोटा सा चश्मा।

आपके एक लमहा भी मै कही आराम मे गुजार सकत हूँ ?

लघु-यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—आगरे का एक उद्यान

समय—सन्ध्या

[दूर पर यमुना का प्रवाह दृष्टिगोचर होता है। उद्यान का एक मार्ग दिखायी दे रहा है। दृश्य डबते हुए सूर्य के प्रकाश से आलोकिक है, उद्यान के इस भाग को देखते ही यह ज्ञात हो जाता है कि उद्यान सोलहवीं शताब्दी का है। पीछे की ओर कुछ दूर पर उद्यान के बाहरी कोट का कुछ हिस्सा दिखायी पड़ता है, जो हरी लताओ से आच्छादित है। उसके निकट ही ऊँचे-ऊँचे फलो के वृक्ष है। उनके पश्चात् फूलो की क्यारियाँ है। क्यारियों के चारो ओर पक्की, पर सकरी-सकरी सडकें तथा बैठने के लिए यत्र-तत्र छोटे-छोटे पक्के चबूतरे है। बाईं ओर के एक चबूतरे पर चित्र बनाने का तिपाया रक्खा है, उस पर चित्र–पट है। इस चित्रपट में उद्यान के दृश्य का ही एक अधूरा चित्र है। तिपाये के ठीक सामने लकडी की एक खाली चौकी रखी हुई है। इस चौकी के समीप ही लकड़ी की एक दूसरी चौकी पर कांच के अनेक प्यालों में भिन्न–भिन्न प्रकार के रंग घले है और चित्र बनाने की कलमे पड़ी है। दृश्य खुलते समय

उद्यान के इस भाग में कोई नहीं दिखता। नेपथ्य में गान की ध्वनि सुन पड़ती है, जो समीप आती हुई मालूम होती है। शीघ्र ही दाहिनी ओर से काँच की एक सुराही में पानी लिये हुए निजाम आता है। निज़ाम आकर सुराही का पानी कुछ प्यालों में डाल, खाली चौकी पर बैठकर चित्र बनाना आरम्भ करता है। उसकी पीठ दाहिनी ओर हो जाती है। उनका गान चलता रहता है और कुछ ही देर में जान पड़ता है कि वह गान और चित्र बनाने मे एकदम तल्लीन हो गया है।]

गीत

मै प्रेम पुजारी बन जाऊँ
उस दर का भिखारी बन जाऊँ
यह प्रम की दुन्निया क्या कहिये
दिन रात उसी मे बस रहिये
मैं प्रेम पुजारी बन जाऊं
जीना है यही, मरना है यही
ससार मे बस करना है यही
मै प्रेम पुजारी बन जाऊँ

[दाहिनी ओर से लाड बानू का चार सहेलियों के साथ प्रवेश। लाड बानू की अवस्था लगभग सोलह सत्रह वर्ष की है, पर वह अवस्था से कुछ अधिक की जान पड़ती है। वह गौर वर्ण की, ऊँची-पूरी, भरे हुए शरीर की अत्यन्त सुन्दर युवती है। रेशमी सलवार पहने है और दुपट्टा ओढ़े है। उसके

अगो मे देदीप्यमान रत्नो के आभूषण है । उसकी सहेलियो की उम्र भी सोलह और बीस वर्ष के बीच मे है । दो सलवार पहने ओर दुपटटा ओढे है और दो साड़ी तथा लूका पहने है । चारों स्वर्ण के आभूषणो से अलंकृत है । पाँचो युवतियो की दृष्टि चित्रपट और चित्रकार की पीठ पर पडती है । लाड दाहिने हाथ को तर्जनो को ओठो पर रखकर अपनी सहेलियो को चुप रहने का सकेत करती है । पहले कुछ देर पाँचो युवतियाँ खडो रह कर दूर से ही बनते हुए चित्र को देखती हुई निजाम का गान सुनती रहती है । फिर धोरे–धोरे निज़ाम की चौकी के निकट जाकर, चुपचाप खडी हो, निकट से चित्र देखने लगती है । निजाम चित्र बनाने तथा गाने मे इतना तल्लीन है कि उसे इन युवतियो के आने और इस प्रकार खड़े रहने का भान भी नही होता । कुछ देर मे एक प्याले मे कलम डालते हुए निजाम के हाथ का धक्का उस प्याले को लगता है और वह चौकी पर से पीछे की ओर गिर कर फूटता है उसका रग उचट कर लाड की सलवार पर पड़ता है । वह चीख सी उठती है––'उफ' । प्याले का गिरना, टूटना और लाड की चीख, तीनो प्रायः साथ–साथ होते है । निज़ाम चौक कर उठता है । उसका गान बद हो जाता है और वह पीछे की ओर घूम इन युवतियो को देखकर चकित सा रह जाता है । लाड की चारो सहेलियाँ खिलखिला कर हँस पड़ती है ।]

निजाम––(लाड बानू से) माफ कीजियेगा, आपके कप

खराबै हो गये ।

[लाड निजाम के पीछे की ओर घमते ही एकटक निजाम की तरफ देखने लगी थी । निजाम का यह पहला वाक्य पूरा होते होते उसकी दृष्टि नीचे की ओर झुक जाती है ।]

निजाम—(कुछ रुक कर) मुझे मालूम ही नही हुआ कि कब आप सब तशरीफ लायी, और किस वक्त से इस तरह खडी होकर तस्वीर देख रही थी ।

एक सहेली—लेकिन, मुसाव्विर, तुम्हे इस कुसूर की सजा दी जायगी ।

निजाम—(कुछ आश्चर्य से) सजा कुसूर ! हाँ, कुसूर तो मुझसे जरूर हुआ, पर अनजान मे ।

वही सहेली—कुसूर, कुसूर ही है, चाहे वह कैसे ही क्यो न हो ।

निजाम—(कुछ गम्भीरता से) अगर बात यही है तो बन्दा सजा का हकदार है ।

वही सहेली—तो दू तुम्हे सजा ?

निजाम—सजा तो अहलकार देते है, क्या आपही सजा भी देगी ?

वह सहेली—जी हाँ, आपका जुर्म ऐसा है कि इसकी सजा देने के लिए मै खुद को काबिल अहलकार समझती हूँ ।

निजाम—तो फिर कर दीजिए मेरा फैसला ।

वही सहेली—तुम्हारी सजा है ।—(लाड बानू की ओर

सकेत कर) हमारी इस सहेली की तस्वीर बना देना ।

तीनों सहेली--(एक साथ) हाँ, हाँ, मुनासिब .मुनासिब मजा है ।

लाड--(सकुचाते) क्या तुम सब दीवानी हो गयी हो ?

पहली सहेली—अलहकार का हुक्म कोई नही टाल सकता ।

तीनो सहेली—कोई नही कोई नही ।

[चारो सहेलियाँ फिर खिलखिला कर हँस पड़ती है । इसके पश्चात् कुछ देर निस्तब्धता ।]

पहली सहेली--(निजाम से) तुमने मेरा फैसला मजूर किया है न, मुसव्विर ? **(चित्रपट की अधूरी तस्वीर की ओर संकेत कर)** हटाओ इसे, और बनाओ मेरी सहेली की तस्वीर ।

लाड—लेकिन . लेकिन .....

पहली सहेली—तुम चुप रहो, बानू ।

[फिर कुछ देर निस्तब्धता ।]

पहली सहेली--(निजाम से) तो शुरू करो ।

निजाम--(हिचकिचाते हुए) पर पर, मैंने मैंने कुदरती नजारो ओर और मेरे भाई जान के सिवा और कभी किसी की तस्वीर नही बनायी ।

पहली सहेली—यह तो गुनाह की सजा है । **(कुछ रुककर लाड बानू की ओर मुड़कर,जल्दी से उसके गले से एक हार उतारते हुए)** और और अगर मेहनताना चाहते हो तो यह लो । **(हाथ निजाम की ओर बढ़ाती है, पर निजाम चुप खड़ा रहता है ।)**

यह है सिर्फ पेशगी, मुसव्विर, पूरा मेहनताना तो हमारी सहेली देगी। तुम शायद जानते नही कि मै तुम्हे किसकी तस्वीर बनाने के लिए कह रही हूँ। लाड बानू आगरे की सबसे दौलतमद साथ ही सबसे खूबसूरत शाहज़ादी है। **(हाथ और आगे बढ़ाती है।)**

निज़ाम—**(कुछ पीछे हटते हुए)** गुस्ताखी माफ हो, सच्ची मुसव्विरी का मेहनताना सबसे दौलतमद शहजादी क्या दुनिया का बडे से बडा शहशाह भी अदा नही कर सकता। फन की कीमत ही नही होती। लेकिन सजा मै मजूर कर चुका हूँ, आपका हुक्म सर आँखो पर।

पहली सहेली—शुक्रिया।

तीनो सहेली—**(एक साथ)** सबकी तरफ से।

निज़ाम—**(लाड से)** आपको कम से कम तीन दिनो तक रोजाना यहाँ तशरीफ लाना होगा। चौथे दिन मै तस्वीर दे सकूँगा।

सब सहेलियाँ—**(एक साथ जल्दी)** हाँ, हाँ, हम सब तीन दिनो तक बराबर आयेगी।

निज़ाम—**(लाड से, जिस चौकी पर स्वय बैठा था, उसकी ओर संकेत कर)** आप इस पर तशरीफ रक्खे।

पहली सहेली—फिर तुम कहाँ बैठोगे ?

निज़ाम—मै खडे खडे ज्यादा अच्छी तरह से बना सकूँगा।

[लाड सिर झुकाये हुए चुपचाप खड़ी रहती है, चौकी

पर नही बटती ।]

पहली सहेली---(लाड को खींचकर जबरदस्ती चौक की ओर ले जाते हुए) शादी होने जा रही है, और तस्वीर बनवाने मे भी आता है इन्हे शर्म ।

[तीनो सहेलियाँ भी पहली सहेली की सहायता करती है । लाड बानू जबरन चौकी पर बिठायी जाती है, पर वह सिर झुका लेती है । चारो सहेलियाँ उसके निकट खड़ी हो जाती है । निज़ाम तिपाये को थोड़ा सा हटाकर, उस पर दूसरा कागज लगा, लाड की बगल मे खड़ा होकर कलम उठाता है ।]

निज़ाम----(लाड की ओर देखते हुए) आप थोड़ा सिर उठाकर अपने सामने के उस चम्पे की दरख्त की तरफ देखिए ।

चारो सहेली---(एक साथ) हाँ उठाओ उठाओ सिर ।

निज़ाम---और यह यकीन रखियेगा कि कपड़े पर पड़े हुए रग के दाग तस्वीर पर न आयेगे ।

[सहेलियाँ फिर खिलखिला कर हँसती है । लाड बानू जब फिर भी सिर नही उठाती तब पहली सहेली उसकी ठुड्डी पकड़कर उसका सिर ऊँचा कर देती है । सहेलियाँ फिर हँस पड़ती है । इस बार निज़ाम भी मुस्कराने लगता है और वह लाड की तरफ देखते हुए कलम चित्रपट पर चलाना आरम्भ करता है । अब सहेलियाँ कभी लाड, कभी निज़ाम और कभी चित्रपट की ओर देखती है ।]

लघु-यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—आगरे में फरीद के मकान में फरीद का कमरा

समय—प्रात काल

[कमरा उस समय के अन्य कमरों के सदृश ही है, पर अब तक के देखे हुए सब कमरों से बडा और सबसे अधिक सजा हुआ। फरीद और ब्रह्मादित्य बैठे हुए बातें कर रहे हैं। फरीद हुक्का पी रहा है।]

फरीद—इतना वक्त गुजर जाने पर भी हम आगरे में कुछ न कर सके, पडित ।

ब्रह्मादित्य—हाँ, क्योंकि यहाँ हम हैं एक अमीरदौलत खाँ के नौकर, जिसके हाथ में कोई अधिकार नहीं। जौनपुर के सदृश आप न यहाँ के सूबेदार के नौकर हैं, और न सहसराँ के समान जागीर के मालिक ।

फरीद—तो यह तय है कि बिना अख्तियारात के आदमी समझने पर भी कुछ नहीं कर सकता ।

ब्रह्मादित्य—इसमें क्या सदेह है ? यहाँ की भी सभ्यता तो वही है जो जौनपुर और सहसराँ की थी । आपको अधिकार होते तो जौनपुर और सहसरा में किया हुआ कार्य आप यहाँ बहुत कम समय में कर डालते ।

फ़रीद—(विचारते हुए) हाँ, क्योंकि यहाँ मेरी हालत मदरसे में शागिर्द की न होकर उस्ताद की है, और इसमें तो शक

ही नही कि जौनपुर, सहसराँ और यहाँ, सब जगह, सवाल वही के वही है। (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआ छोड़ते हुए**) पडित, हिन्दुस्तान के पायेतख्त मे आकर तो मुझे यह पक्का यकीन हो गया कि इस मुल्क मे सब जगह सवाल यक साँ है ।

ब्रह्मादित्य—और अब तो आप मेरा वह कहना भी मानेगे कि यदि आपको अवसर प्राप्त हो तो आप समस्त देश मे वही कर सकते है, जो आपने जौनपुर और अपनी जागीर मे किया है ।

फ़रीद—(**गम्भीरता से विचारते हुए**) शायद, लेकिन, पडित, तुम न जाने मेरे लिए कैसे कैसे ख्वाब देखा करते हो, मुझे कभी ऐसा मौका नही मिल सकता ।

ब्रह्मादित्य—हमारे सस्कृत मे एक कवि ने कहा है "पुरुषस्य भाग्ये देवो न जानाति कुतो मनुष्य "।

फरीद—याने ?

ब्रह्मादित्य—याने यह कि पुरुष के भाग्य मे क्या है, यह भगवान भी नही जानता तो मनुष्य क्या जानेगा ।

फ़रीद—(**मुस्कराते हुए**) हर बात मे मुझे बढावा देना यह तो तुम्हारा काम ही है ।

ब्रह्मादित्य—(**कुछ अप्रसन्न**) यह कहकर तो आप मेरा अपमान कर रहे है ।

फ़रीद—(**कुछ चिन्तित होकर**) तुम्हारी बेइज्जती ! यह तुम क्या कह रहे हो ? (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआं छोड़ते**

हुए) अपने सबसे बडे दोस्त की बेइज्जती ! कभी मुझसे यह हिमाकत भी हो सकती है ?

ब्रह्मादित्य—यदि आपको बढावा देना ही मेरा काम है तब तो मुझसे अधिक बुरा मनुष्य हो ही नही सकता । फिर तो मै आपका परम मित्र न होकर यथार्थ मे घोर शत्रु हूँ । समय-समय पर क्या मै आपके दोषो की ओर भी सकेत नही करता रहता ?

फ़रीद—क्यो नही ।

ब्रह्मादित्य—तो फिर आपने यह कैसे कहा कि हर बात मे आपको बढावा देना ही मेरा काम है ? यदि एक ओर मै आपका ध्यान दोषो की ओर खीचता हूँ, तो दूसरी ओर आपके गुणो की याद दिलाकर आपको उत्साहित करते रहना भी मेरा कर्त्तव्य है । आपको मै हिन्दुओ के कुछ ग्रन्थ रामायण, महाभारत आदि सुना चुका हूं । आपको कर्ण और शाल्य का आख्यान स्मरण है ?

फरीद—हाँ, हाँ, अच्छी तरह । (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) वही न, जिसमे अर्जुन से लडने को जाते वक्त कर्ण के सारथी होते हुए भी शाल्य ने कर्ण की बुराइयो की झडी लगा दी थी ?

ब्रह्मादित्य—हाँ, वही । महाभारत मे उसे कर्ण का तेजोवध कहा है । कृष्ण की सम्मति से युधिष्ठिर ने शाल्य से यह करन के लिए प्रार्थना की थी । फल यह हुआ कि युद्ध के पूर्व ही कर्ण का तेज क्षीण हो गया और वह अर्जुन से पूरे पराक्रम के साथ लड ही न सका ।

सच्चा मित्र, मित्र का तेजोवध नही कर सकता; उसका कार्य यदि दोष दिखाना है तो गुण भी, ओर गुण अधिक। हाँ, गुण सच्चे होने चाहिए। मुझे आपमे जो सच्चे गुण दिखे है, उन्ही की मैने प्रशसा की है, उन्ही के कारण मैने आपको उत्साह दिलाया है। वह गुण ही ऐसे है, जिनसे मेरा विश्वास है कि आप इस देश म न जाने क्या-क्या कर सकेगे। कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जो सूर्य के उदय होने पर ही उसकी पूजा करते है पर सच्चे ब्राह्मण उसके प्रकाश फैलने के पूर्व, उस काल म ही उसे अर्घ्य दे लेते है।

[हाथ मे एक खुली चिट्ठी लिए, आँसू बहाते हुए, विव्हल निजाम का शीघ्रता से प्रवेश।]

निजाम---(भर्राये हुए स्वर मे) भाई साहब! भाई साहब! अब्बा अब्बा जान चल बसे!

[फ़रीद और ब्रह्मादित्य खड़े हो जाते है। फ़रीद की आँखों मे आँसू भर आते है। तीनों कुछ देर तक चुपचाप खडे रहते है।]

निजाम---(उसी प्रकार की मुद्रा और स्वर मे) तो हमे फौरन सहसराँ चलना चाहिए।

फरीद---(रूमाल से आँखें पोछते हुए) हाँ, चलना ही होगा।

निजाम---(उसी प्रकार की मुद्रा और स्वर म) असबाब बँधवाने का इन्तज़ाम करूँ?

ब्रह्मादित्य---(कुछ रुक-रुक कर) अच्छा, अभी बैठिए तो

निज़ाम---(उसी प्रकार मुद्रा और स्वर मे) यह वक्त बैठन

का है, पडित जी ?

ब्रह्मादित्य---सभी वक्त बैठने और खडे रहने, दोनो के रहते है ।

निजाम---**(उसी प्रकार की मुद्रा और स्वर में)** पडित जी, यह वक्त तो चलने का है, फौरन से पेश्तर चलने का ।

ब्रह्मादित्य---**(दोनों भाइयो को बारी-बारी से देखते हुए)** देखिए,केवल भावुकता मे बहकर कोई काम करना अच्छा नही होता । मै यथेष्ट समय तक आपकी जागीर मे रहकर सब कुछ देख आया हूँ । मेरी ही सम्मति से आप दूसरी बार जागीर छोडकर आगरा आये । आप लोगो के विरुद्ध वहाँ जैसे जैसे षड्यत्र रचे जाते थे, उनकी सूचना समय-समय पर मैने (**फरीद** की ओर देखकर) आपको दी थी । जो होना था हो चुका । आप वहा जाकर ही क्या कर लेगे ? अब आपके पिता भी नही रहे । पिता के न रहने के कारण वहाँ जाने पर आप लोगो पर जैसी आपत्ति की आ सकती है जिसकी हम लोग कल्पना तक नही कर सकते । (**कुछ रुककर**) बैठिए बैठ तो.....

[तीनो बैठ जाते है ।]

फरीद---**(विचारते हुए)** पर चलना तो होगा, पडित ।

निजाम---**(जल्दी से)** जरूर, जरूर ।

ब्रह्मादित्य---**(गम्भीरता से विचारते हुए)** यदि चलना ही है तो सारा प्रबन्ध करके चलना होगा ।

फरीद---क्या क्या इन्तजाम करने होगे ?

ब्रह्मादित्य---**(उसी प्रकार विचारते हुए)** सब तो मै यकायक

नही बता सकता, पर सबसे पहले एक बात तो करनी ही होगी।

फरीद—क्या ?

ब्रह्मादित्य—आप बडे है, पिता के पश्चात् जागीर पर आपका अधिकार है; अत अपने मालिक दौलत खाँ की मार्फत प्रयत्न कर आपके नाम जागीर का शाही फर्मान लेकर तब चलना होगा।

निज़ाम—(**खड़े होते हुए**) उफ ! तब ... तब तो हमारे चलने मे बहुत वक्त लगेगा।

ब्रह्मादित्य—पर जैसी परिस्थिति है उसे देखते हुए मेरी समझ मे ही नही आता कि जाने मे जल्दी की आवश्यकता ही क्या है ?

[**निज़ाम कोई उत्तर न देकर सिर झुका लेता है। उसके आँसू अभी भी नहीं रुकते। फ़रीद और ब्रह्मादित्य दोनो उसकी ओर देखते है।**]

लघु-यवनिका

छठवाँ दृश्य

स्थान—आगरे का उद्यान

समय—सन्ध्या

[**दृश्य वही है जो चौथे दृश्य में था। लाड बानू अपनी चारों सहेलियों के साथ इधर-उधर घूम रही है। उसकी चाल और मुद्रा दोनों में बेचैनी दृष्टि गोचर होती है, परन्तु जान**

पड़ता है कि वह इस बेचैनी को प्रकट न होने देने का भरसक प्रयत्न कर रही है।]

पहली सहेली—रोजाना इससे तो बहुत पेश्तर वह मुसव्विर आ जाया करता था।

दूसरी—बेशक !

तीसरी—हाँ, हाँ, कहीं पेश्तर।

चौथी—लेकिन आज वह आयगा जरूर। कल तस्वीर करीब करीब खत्म हो चुकी थी। आज ही तो देने का वादा था।

पहली—पर तस्वीर उसने कमाल की बनायी है। कल ही ऐसा नजर आता था जैसे मुँह से बोल रही हो।

दूसरी—और कल खत्म कहाँ हुई थी ? पूरी होते-होते तो और न जाने कैसी हो जावेगी।

तीसरी—मेरे एक रिश्तेदार भी मुसव्विर थे। मैंने उन्हें तस्वीर बनाते देखा है। कोई भी तस्वीर पूरी बना चुकने पर भी न जाने वह घटों तक उसमे क्या देखा करते थे। देखते-देखते इधर-उधर कलम से छूते से जाते थे। हालाँकि वह छोटी-छोटी दुरुस्तियाँ अलग-अलग न दिखायी देती थी, लेकिन उनका यकजा नतीजा यह होता था कि तस्वीर मे जान सी पड जाती थी।

चौथी—इसी कारगुजारी मे इस मुसव्विर को भी देर हुई होगी।

पहली—जो कुछ हो, इन्तजार तो हमें करना ही होगा, क्योंकि कल से तो शादी की रस्में शुरू हो जायेंगी। फिर तो शहजादी

आ न सकेंगी। (लाड से) क्यों बानू ?

लाड--(**बेचैनी को दबाने का पूर्ण प्रयत्न करते हुए**) मैं कुछ नहीं जानती।

पहली--ओ हो! बडी भोली भाली! क्या पूछना ?

लाड--इसमें भोली भाली की क्या बात है ? तस्वीर बनवाकर एक आफ़त मोल ले ली। अब जब मिल नहीं रही है तब बेचैनी से सब की सब इधर से उधर घूम रही हो।

दूसरी--और तुम्हे थोडे ही बेचैनी है ?

लाड--मुझे ? मुतलक़ नहीं।

तीसरी--तुम्हे दुहरी बेचैनी है, सुना, दुहरी।

लाड--(**खीझकर**) दुहरी ? क्या मतलब है तुम्हारा ?

तीसरी--(**मुस्कराते हुए**) मेरा मतलब है हमे सिर्फ तस्वीर देखने की बेचैनी है और तुम्हे तस्वीर और मुसव्विर दोनों के देखने की।

[**चारो खिलखिला कर हँस पड़ती हैं।**]

लाड-- (**दाहिनी ओर बढ़ती हुई कुछ क्रोध से**) चलो, हम चलेंगी, मुझे तस्वीर नहीं चाहिए।

[**चारों सहेलियाँ झपट कर लाड को पकड़ लेती हैं।**]

तीसरी--लो, तुम तो मज़ाक-मज़ाक में नाराज़ हो गयी।

चौथी--(**लाड की ओर कातर दृष्टि से देखते हुए**) क्यों नाराज़ हो गयी ?

दूसरी--सचमुच नाराज हो गयी ?

पहली—भला कही सहेलियों से भी नाराज हुआ करते हैं ?

[लाडबानू प्रयत्न कर हँस पड़ती है, परन्तु वह प्रयत्न करके हँसी है, यह उसकी हँसी से ज्ञात हो जाता है ।]

पहली—(कुछ ठहर कर) अच्छा देखो हम सब कोई अच्छा सा गाना गाये; तब तक वह जरूर ही आ जायगा ।

तीनों—(एक साथ) यह ठीक है । यह ठीक है ।

[गाना आरंभ होता है, पहली पंक्ति पहली सहेली गाती है, दूसरी सब मिलकर और दूसरी पूरी होने पर पहली भी सब मिल कर । अब एक एक अन्तरा एक एक गाती है और फिर पहली और दूसरी पंक्तियाँ सब मिलकर । लाड बानू भी इस गान में सहेलियों का साथ विवश सी होकर देती है, परन्तु उसकी दृष्टि बार-बार वाहिनी ओर दौड़ जाती है और जब वहाँ से कोई आता हुआ नहीं दीखता तब उसकी दृष्टि की बेचैनी छिपाने का प्रयत्न करने पर भी नहीं छिपती ।]

गीत

दीदार दिखादे प्यारे
ससार नही भाता मुझको
अब चैन नही आता मुझको
दीदार दिखादे प्यारे
रह रह कर तेरी याद मुझे
कर जाती है बरबाद मुझे
दीदार दिखादे प्यारे

जलदी से अब आजा आजा
दिल तड़प रहा है समझा जा
दीदार दिखादे प्यारे

पहली—(**गान पूर्ण होने पर चारो ओर होते हुए अँधेरे को देखकर**) अब तो सचमुच ही मुसव्विर के आने की बहुत कम उम्मीद रह गयी ।

दूसरी—(**उसी प्रकार चारो ओर देखकर**) हाँ, अँधेरा हो चला और अब तक भी पता नही ।

तीसरी—हमने उसका न नाम पूछा न पता ।

चौथी—बेशक, यह बडी भारी गलती हुई ।

[कुछ देर निस्तब्धता ।]

पहली—(**कुछ देर पश्चात् लाड से**) क्यो, बानू, चला जाय ?

लाड—(**बेचैनी को रोकने का अत्यधिक प्रयत्न करते हुए**) चला चला जाय ? (**कुछ रुक कर अपने सिर पर हाथ फेरते हुए**) पर···पर मेरा सर कुछ भारी भारी सा मालूम होता ह, थोडा ओर ठहरा जाय । (**हताश सी होकर जहाँ तस्वीर बनवाने के समय बैठती थी, उस स्थान पर बैठते हुए**) कैसी ठन्डी ठन्डी हवा चल रही है ।

पहली—(**मुस्कराते हुए**) गाना गाने की मेहनत से सर मे अक्सर दर्द हो जाया करता है ।

दूसरी—(**जो इसी बीच मे जहाँ निज़ाम खड़ा होकर**

तस्वीर बनाता था, निजाम के सदृश ही खडी हो गयी है) खामोश (निज़ाम के सदृश स्वर में) आप थोडा सर उठाकर अपने सामने के उस चम्पे के दरख्त की तरफ देखिए ।

तीनों सहेली--(एक साथ) हाँ, उठाओ उठाओ सर ।

[पहली सहेली आगे बढकर लाड की ठुड्डी पकड़कर सिर ऊँचा कर देती है और सब सहेलियाँ हँस पडती है ।]

लाड--(सहेली का हाथ झटकते हुए) हद हो चुकी मजाक की; बस भी करो ।

[लाड की आँखों में आँसू छलछला आते है । उसकी मुद्रा से जान पडता है कि वह इन आँसुओं को रोकने मे अपनी पूरी शक्ति खर्च कर रही है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

लाड--(एकाएक खडे होकर भर्राये हुए स्वर में) चलो अब चले ।

पहली--और मुसव्विर ?

लाड--(रूखी हँसी हँसकर) मुसव्विर ! मुसव्विर अब नही आयगा कभी नही आयेगा ।

[लाड अन्तिम वाक्य कहती हुई निर्जीव सी दाहिनी ओर आगे बढती है । अब उसकी सहेलियाँ उसे नही रोकती। वे सब एक प्रकार की निराश दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखती हुई उसके पीछे पीछे जाती है ।]

लघु–यवनिका

सातवाँ दृश्य

स्थान--सहसराँ मे फरीद का कमरा

समय--दोपहर

[फरीद, निज़ाम और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं। फरीद हुक्का पी रहा है।]

ब्रह्मादित्य--पर देख लिया न आपने, लडाई तथा रक्तपात की जितनी चर्चायें सुनी थी, वे सब मिथ्या सिद्ध हुयी। न एक बूंद खून बहा और न एक मनुष्य की हिंसा हुई।

निज़ाम--इसका सबब है आपकी बुजुर्गाना सलाह। हम अगर जागीर के मुताल्लिक आगरे से शाही फरमान लेकर न आते तो खून की नदियाँ बह जाती।

ब्रह्मादित्य--उस फरमान ने हमे सहायता दी, इसमें सदेह नही, पर. निज़ाम, इसका मख्य कारण कुछ दूसरा ही है।

निज़ाम--और क्या सबब हो सकता है ?

ब्रह्मादित्य--इसका मुख्य कारण है तुम्हारे भाई साहब द्वारा की हुई प्रजा की सेवाएँ। इन्होने जौनपुर से लौटकर, यहाँ सच्चे हृदय से अगणित कष्ट उठा और नाना प्रकार के त्याग कर, बिना किसी भेद भाव के, प्रजा की जो सेवाएं की है, इनके कारण हर जाति तथा समुदाय का बच्चा-बच्चा इनके साथ है। शाही फरमानो और सेनाओ से चाहे संपत्ति पर क्षणिक अधिकार प्राप्त हो जाये, पर बिना सच्ची सेवा के हृदय पर अधिकार नही हो सकता और बिना हृदय

पर अधिकार हुए किसी वस्तु पर भी स्थायी अधिकार नही रह सकता।

फ़रीद––लेकिन, पडित, सुलेमान और अहमद के भाई होते हुए भी उनके दिलो पर मेरा कोई असर नही। **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुंआँ छोड़ते हुए)** वह चाँद के सूबेदार मोहम्मद खाँ सूर के पास मदद के लिये गये हैं। उन्हे मोहम्मद खाँ अपने भाई से ज्यादा मानता है।

ब्रह्मादित्य––इसका कारण स्वार्थ है। स्वार्थ-पूर्ण-हृदय पर भी सच्ची और निस्वार्थ सेवा अधिकार न कर सके, यह नही, पर उसमे समय लगता है। आपके सदृश भाई के प्रति सुलेमान और अहमद का हृदय भी परिवर्तित होगा।

फ़रीद––(गम्भीरता से विचारते और हुक्का का धुआँ धीरे-धीरे नाक से निकालते हुए) पडित, तुम शायद इन्सान के दिल की अच्छाई की तरफ ही देखते हो।

ब्रह्मादित्य––ऐसा ..... ? ऐसा तो नही। बिना शाही फरमान के मै यहाँ आना ही नही चाहता था। मै मनुष्य-हृदय के दोनो पहलुओ की ओर दृष्टि रखना चाहता हूँ।

यवनिका

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान--सहसराँ मे निजाम का कमरा

समय--रात्रि

[निजाम बैठा हुआ आगरे में बनाये गये लाड बानू के चित्र को देखते हुए सितार बजाकर गा रहा है।]

गीत

क्या तुमने दिल पर वार किया
बरछी की अनी को पार किया
तस्वीर से बाते करता हूँ
मौ जान से इस पर मरता हूँ
क्या तुमने. ....
हम किससे मुहब्बत कर बैठे
ली सर पे मुसीबत घर बैठे
क्या तुमने .....
क्या खूब तुम्हारी सूरत है
यह जैसे हुस्न की मूरत है
क्या तुमने.... .....

निज़ाम--(गान पूरा होने पर सितार रख, एकटक चित्र को देखते हुए, चित्र को ही सम्बोधित कर) बानू ! .. बानू ! मुझे मालूम है, सुना, अच्छी तरह मालूम है कि तुम चुनार के सूबेदार ताज खाँ के हरम मे चली गयी हो । . लोग तुम्हे लाड मलिका, हाँ, लाड मलिका कहने लगे है, . पर मेरे . मेरे सामने, मलिका. मलिका तुम मलिका नही, वही हो, वही बानू, हाँ, भोली भाली बानू, जो आगरे के बाग मे तस्वीर बनवाने के लिए बैठी थी । चुप थी तुम, चुप था मै, . लेकिन . लेकिन मुझे क्या मालूम था कि उसी, हाँ, उसी वक्त मेरी तक्दीर मेरी कलम मे बैठकर तस्वीर पर मेरी आइन्दा जिन्दगी के ख्वाबो को भी रग रही थी, गर्क हो गया था मै । . दूसरे दिन तुम मेरा रास्ता सा देखती जान पडी, मै बेसब्र सा हो उठा । तीसरे दिन मेरी कलम चल रही थी. .... चल रही थी वहते जी से । आफताब हाँ, आफताब सिर पर आ गया और मोती के कुछ दाने तुम्हारे रुखसारो को चूम कर दामन मे छुप गये, लेकिन तुम तुम, बानू, हिली तक नही, खो गया था मै, खो गयी थी तुम । तस्वीर कैसे पूरी हुई, जान ही न सका । . चौथे दिन तस्वीर देने का वादा था, लेकिन बेजान इस तस्वीर मे ही तुम जानदार हो उठी थी, . . दे न सका . और. ... . और उस दिन. . उस दिन के बाद तुम लाड मलिका होने पर भी मुझसे बोलती, . . हाँ, बोलती रहती हो, लाड बानू ही की तरह । **(कुछ देर चुप चाप एकटक**

तस्वीर को देखता रहता है और फिर सितार बजाकर गाना आरम्भ करता है।)

गीत

तुम्हारी याद अब तक आ रही है
मुझे अच्छी तरह तड़पा रही है
खुदा जाने मुझे क्या हो गया अब
तबीयत खुदबखुद घबरा रही है
तेरी तस्वीर से मैं बोलता हूँ
वह चुप होकर बहुत शर्मा रही है
वह चेहरा और वह सूरत गुलाबी है
मुझे बेसुध बनाये जा रही है
मुझे दम भर का आता ही नहीं चैन
तेरी याद और मुझको आ रही है

[फ़रीद का प्रवेश। निज़ाम चित्र और गान में इतना मग्न है कि वह न फ़रीद को देख पाता है और न उसके आने की आहट सुन पाता है। फ़रीद नज़दीक आता है। उसकी नज़र तस्वीर पर पड़ती है। वह चौंक सा पड़ता है।]

फ़रीद—(कड़े स्वर में) निज़ाम!

[निज़ाम फ़रीद का स्वर सुन, हक्का बक्का सा हो, सितार को छोड़, खड़े हो, तस्वीर पर फ़ौरन पर्दा डाल देता है। गाना बन्द हो जाता है।]

फ़रीद—(निज़ाम की ओर देखते हुए) तो तुम्हारी

मुसव्विरी मे अब नया रंग आ रहा है, शायरी नयी शक्ल अख्तियार कर रही है ।

[निज़ाम कुछ न कहकर सिर झुका लेता है। फरीद चुपचाप कुछ देर निज़ाम की ओर देखता है।]

फरीद——(लम्बी साँस लेकर बैठते हुए) बैठो, निजाम।

[निज़ाम कुछ न कहकर चुप चाप बैठ जाता है और सिर झुका लेता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

फरीद——(गम्भीरता से) याद है, निजाम, एक मर्तबा मैंने तुमसे क्या कहा था ?

[निज़ाम कुछ न कहकर, सिर उठा, फरीद की ओर देखता है।]

फ़रीद——अपने दिल की मुहब्बत के मुताल्लिक मैंने तुमसे कहा था कि मेरी मुहब्बत शायद पाक मुहब्बत है। तुम यकायक नाराज से होकर कह उठे थे कि तुम्हारे दिल मे मेरी जो मुहब्बत है, वह क्या नापाक है ? (**कुछ रुककर**) वह .वह नापाक है यह तो मै नही कह सका, लेकिन लेकिन, .. **निज़ाम,** उस उस तरह की मुहब्बत आखिर यह यह शक्ल ले लेती है। जो जो

[फ़रीद ढकी हुई तस्वीर के पर्दे को उठाने के लिए हाथ बढ़ाता है, पर निजाम जल्दी से बीच मे आ जाता है।]

फरीद——(निज़ाम की ओर देखते हुए) मुझे इतना चाहने पर भी मुझसे कुछ छिपाकर रखना चाहते हो ?

[निज़ाम कुछ न कहकर फिर सिर झुका लेता है। फ़रीद निज़ाम की ओर देखता रहता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

फ़रीद—(**निज़ाम की तरफ़ ही देखते हुए**) किस औरत की यह तस्वीर है, यह अगर मुझे कह दो, और वह अगर तुम्हारी शादी के काबिल हो, तो, मैं उसमे तुम्हारी फौरन शादी कर दूंगा।

[निज़ाम फिर भी कुछ नहीं बोलता। मूर्ति के सदृश बैठा रहता है। फ़रीद उसकी ओर देखता रहता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता।]

फ़रीद—(**निज़ाम का हाथ अपने हाथ मे लेते हुए प्रेम भरे स्वर में**) निज़ाम ! अगर तुम मुझे इतना चाहते हो तो मैं भी तुम्हारा भाई हूँ, तुम खुद कह चुके हो कि मेरा दिल भी रेगिस्तान नही। तुम मुझे दिल खोलकर सारा हाल क्यो नही कहते ? मैं वादा करता हूँ कि यह औरत तुम्हारी शादी के काबिल हुई तो मैं उसके साथ तुम्हारी शादी जरूर जरूर कर दूंगा।

निज़ाम—(**धीरे धीरे सिर उठाकर भर्राये हुए स्वर में**) लेकिन.... . लेकिन इसकी शादी हो चुकी है, भाई जान।

फरीद—(**चौंककर**) उफ ! तो तुम्हारी मुहब्बत ने अब यह रास्ता लिया है ! (**निज़ाम का हाथ छोड देता है।**)

[निज़ाम कुछ न कहकर फिर सिर झुका लेता है। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगते हैं। फ़रीद उसकी ओर देखता रहता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

फ़रीद—(**कुछ देर बाद**) इस मुसव्विरी और शायरी का

आखिर यही नतीजा निकलता है। इस तरह की खयाली मुहब्बतो न न जाने कितनी जिन्दगियाँ तबाह कर खाक मे मिला दी है।

[निज़ाम कुछ न कहकर उसी तरह रोता रहता है। फरीद निज़ाम को तरफ़ देखता रहता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता।]

फरीद—(**दृढ़ता से**) निजाम, तुम्हे बचाने के लिए मुझे अब तुम्हारी शादी का इन्तजाम करना होगा।

निज़ाम—(**यकायक सिर उठाकर दृढ़ता से**) यह तो गैर मुमकिन है, भाई साहब।

फरीद—(**आश्चर्य से**) गैर मुमकिन है ? तुम शादी नही करोगे ?

निज़ाम—(**आँसू पोंछते हुए**) कतई गैरमुमकिन। मैंने आज तक इस मसले पर सोचा ही न था। आज आपने यकायक यह बात मुझसे कही। जिस कदर जल्दी आपने की उसी कदर जल्दी मेरे दिल ने फैसला कर दिया। मे शादी हरगिज नही करूँगा।

फरीद—लडकपन कर रहे हो, निजाम। मै तुम्हे इस तरह तो जिन्दगी बरबाद नही करने दे सकता। (**कुछ रुककर**) खैर, इस मामले पर फिर गौर किया जायगा। इस वक्त मै तुम्हारे पास एक दूसरे ही काम से आया था।

निज़ाम—(**स्वस्थ होने का प्रयत्न करते हुए**) हुक्म दीजिए।

फ़रीद—देखो, वालिदे मरहूम के इन्तकाल को काफी वक़्त गुज़र चका है। इतने दिनो में जागीर का जैसा चाहिए वैसा इन्तज़ाम हो

गया। सुलेमान और अहमद मोहम्मद खाँ से जागीर पर हमला भी न करा सके, लेकिन जो हालात हिन्दुस्तान की हुकूमत के सुनने मे आ रहे है उनसे सिर्फ शाही फरमान के भरोसे पर हम अपनी जागीर शायद ही रख सकेंगे।

निज़ाम--(**फरीद की ओर देखते हुए**) अच्छा!

फरीद--हमे किसी न किसी बाहरी ताकत से ताल्लुक रखना बहुत जरूरी है, नही तो किसी दिन जागीर ही नही हम जान से भी हाथ धो सकते है।

निजाम--ऐसा ?

फ़रीद--बेशक। इसलिए मने तय किया है कि मै बिहार शरीफ जाकर वहा के सूबेदार के यहाँ रहूं।

निजाम--और मै ?

फ़रीद--तुम अब काफी बडे हो गये हो। तुम यहाँ जागीर का काम सँभालो।

निज़ाम--(**कुछ घबराकर**) बगैर आपके मै यहाँ रहूँ ?

फ़रीद--(**निजाम का हाथ अपने हाथ मे लेते हुए**) बचपन की यह बाते अब खत्म करो, और बन्द करो यह मुसव्विरी और शायरी भी। तुम एक जागीरदार के लडके हो। तुम्हारी रगो मे पठानी खून है। दुनियाँ मे तुम भी कुछ काम करने आये हो। जौनपुर मेरा मदरसा हुआ था, यह जागीर तुम्हारा मदरसा हो।

निज़ाम--लेकिन अकेले . . .

फ़रीद--(**बीच ही में**) जब तक अकेले काम न देखोगे, जब

काम का बोझ और जिम्मेदारी सिर पर न पड़गी, तब तक न काम पूरा सीख ही सकोगे और न कर ही सकोगे। बिहार शरीफ सहसराँ से कुछ दूर नहीं, जब चाहो तब वहाँ आ सकते हो। मैं भी यहा आता जाता रहूँगा। (कुछ रुककर) और देखो, बिहार शरीफ में किसी अच्छे खानदान की किसी अच्छी लड़की से तुम्हारी शादी का भी इन्तजाम करूँगा।

[निज़ाम कोई उत्तर न देकर सिर झुका लेता है। फरीद निज़ाम की ओर देखता रहता है।]

लघु-यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—चुनार के किले में लाड मल्लिका के कमरे का बरामदा

समय—प्रात काल

[दाहिनी ओर बरामदे का कुछ भाग दिखायी देता है। बाईं तरफ़ नज़र बाग़ का कुछ हिस्सा दिखायी पड़ता है। पीछे की ओर किले की सफ़ीत और उसके ऊपर आकाश है। बरामदे में पीछे की ओर दीवाल है और सामने खम्भों पर महराबें। दीवाल में कमरे के अन्दर जाने के कुछ दरवाजे हैं और उनसे भीतर के एक सजे हुए कमरे का कुछ भाग दिखता है। सबसे निकट की मेहराब के बीच में सोने के एक अत्यन्त सुन्दर पिंजड़े में नसीम मैना टंगी है।

उसके नज़दीक लाड मलिका खड़ी हुई मैना की ओर देखते हुए गा रही है। बीच बीच में मैना भी सीटी बजा देती है तथा कभी कभी कुछ बोल भी देती है।]

गीत

मेरी तस्वीर बनाकर मुझे अपनाया था
हाय वह वक्त कि दिल तुझ पे मेरा आया था
एक जादू था कि दिल हो गया बेबस अपना
तू मुझे पहली नजर मे जो नजर आया था
आज क्या बात है क्यो इतना है दिल बेकाबू
इससे पहले तो यह दिल इतना न घबराया था
चार सू अब नजर आते है दुखो के बादल
पहले दुनिया पे मसर्रत का घना साया था
बेहया रूह न उस वक्त भी तन से निकली
जब कोई अपना बनाकर मुझे ले आया था

लाड---(गीत पूरा होने पर आँखों में आँसू भर, एक लम्बी साँस लेकर) नसीम! प्यारी नसीम! **(चुप होकर मैना की ओर इस प्रकार देखती है मानो उससे उत्तर चाहती है।)**

नसीम---(कुछ देर पश्चात्) मलिका! मलिका!

लाड---मलिका नही, तू तो बानू, सिर्फ बानू कह, सहेली।

नसीम---सहेली!

लाड—हाँ, यह...यह बानू से भी अच्छा है। देख, सहेली, अब इसके बाद मुझे गाने को कभी भी न कहना।

[नसीम पिंजरे के एक सिरे से दूसरे सिरे पर कूदकर सीटी बजाती है।]

लाड—कहेगी .. जिस तरह तू मीठी-मीठी सीटियाँ मुझे सुनाती है, उसी तरह मैं भी तुझे मीठा-मीठा गाना सुनाऊँ।

[नसीम फिर उसी प्रकार कूदकर सीटी बजाती है।]

लाड—ठीक, लेकिन, प्यारी सहेली, इस गाने से मेरे न जाने कितने पुराने ..कितने सूखे हुए जख्म नये हो जाते हैं, ताजे हो जाते हैं।

नसीम—मुसव्विर !

लाड—हाँ, मुसव्विर उसी मुसव्विर की याद करके, नसीम··। ...मेरे दिल की ऐसी बात ही कौन सी है जो तू न जानती हो ?

नसीम—सहेली ! सहेली !

लाड—हाँ, हाँ, जानती हूँ, तू मेरी सहेली है, सच्ची सहेली, सहेली दिल की बात न जाने यह कैसे हो सकता है ?...तो...तो, सहेली, गाने से मुसव्विर की याद आती है। उस...उस मुसव्विर की जो इन्सान न होकर फरिश्ता था।

नसीम—फ़रिश्ता !

लाड—हाँ, फ़रिश्ता, प्यारी नसीम,...मेरी तस्वीर बनायी थी, बोलती हुई तस्वीर! ...तस्वीर के मेहनताने की पेशगी में मेरी

सहेली उसे मेरा एक हार देना चाहती थी, लेकिन इन ककर पत्थरो, इन बेजान चीज़ो की जरूरत रहती है इन्सानो को, वह तो फरिश्ता था।

नसीम—फरिश्ता ! फरिश्ता !

लाड—हाँ, सच्चा फरिश्ता, नसीम, सच्चा फरिश्ता। हार... मामूली हार नही कीमती हार था, पर उसने उसे ठोकर मार दी।...

नसीम—मुसव्विर !

लाड—हाँ, उस फरिश्ते मुसव्विर ने और... और, प्यारी सहेली, उस हार को वापिस कर उसने ले क्या लिया, जानती है ?

नसीम—बानू! बानू!

लाड—बानू, हाँ, बानू को,.....बानू के दिल को, बानू के सब कुछ को।.....वह....मेरे सूबेदार शौहर की मानिन्द मेरी दौलत को नही, मेरे दिल को चाहता था, और मैंने..... मैंने भी आँखो के रास्ते दिल उसकी नजर कर दिया। (**कुछ रुककर**) यह..... यह सब हो गया, नसीम, आगरे के उस बाग मे, उन तीन ही दिनो के अन्दर, जब मेरी तस्वीर बन रही थी।

[नसीम कूदकर फिर सीटी बजाती है।]

लाड—हाँ, कभी कभी तेरी इस मीठी तान की मानिन्द हमारी बाते भी हो जाया करती थी. लेकिन असली काम लफ्जों ने नही, आँखो ने किया था। तस्वीर बनते वक्त सामने के चम्पे के दरख्त को देखते-देखते कभी-कभी पुतलियाँ उसकी तरफ भी

घूम जाती . ..

नसीम—मुसव्विर !

लाड—हाँ, उससे मेरा मतलब मुसव्विर ही है। पर वह कनखियो तक ही रहती ।

नसीम—सहेली ! सहेली !

लाड—शायद सहेलियो के ही डर से, लेकिन इतने पर भी कभी-कभी अचानक चार नज़रे हो ही जाती। उस. ..उस वक्त, नसीम, कितनी.....कितनी शर्म आती मुझे, कैसा झुक जाता मेरा सर ।

[नसीम सीटी बजाती है ।]

लाड—हाँ, उस वक्त तेरी सीटी के मानिन्द ही मीठी आवाज़ से वह मुझे सर उठाने को कहता ।

[नसीम बार बार सीटी बजाती है ।]

लाड—हाँ, हाँ, उसी की आवाज के साथ गूंज उठते मेरी सहेलियो के भी मीठे-मीठे फिकरे। मुझे सर उठाना पडता; . ....तस्वीर बन रही थी न ... .उन तीन..... .हाँ, उन तीन दिनों मे न जाने कितनी दफा सर का यह झुकना और उठना..... कितनी मर्तबा नजरो की यह लुका छिपी हुई। चौथे दिन उसने तस्वीर देने का वादा किया था ।

नसीम—मुसव्विर !

लाड—मुसव्विर . मुसव्विर ही ने तो, प्यारी सहेली. लेकिन चौथे दिन वह आया ही नही । रोज़मर्रा तीसरे पहर....कभी

कभी इसके भी पहले आ जाता था, पर.....पर उस दिन शाम तक न आया, शब होने तक न आया। कैसी.....कैसी बेचैनी से उस दिन मैंने उसका रास्ता देखा था।

नसीम—सहेली! सहेली!

लाड—मेरी सहेलियाँ भी कम बेचैन न थी, पर...पर वह न आया। (**कुछ रुककर**) शायद वह डरकर भागा था।

नसीम—मुसव्विर!

लाड—हाँ, मुसव्विर ही, नसीम। इस डर के निशान तो दूसरे दिन से ही उसके चेहरे पर नज़र आने लगे थे, और..और तीसरे दिन तो वह इस कदर बढे कि मैं तक सहम गयी। उसकी खामोशी मुझसे गुफ्तगू कर उठी। चौथे दिन डर हकीकत बन गया। मुसव्विर आया ही नही। दिल ने दास्ताँ को छिपा लिया। दुनिया ने, हकीकत को पहचाना ही नही।

[**नसीम जोर जोर से सीटी बजाती है।**]

लाड—ठीक, इसी.....इसी तरह शादी के बाजे बजे शोर गुल हुआ, मैं आगरे से आ गयी चुनार।

नसीम—मुसव्विर!

लाड—मुसव्विर कहाँ है, मैं नही जानती, नसीम। न उसका नाम जानती हूँ, न पता। और....और तू.....हाँ, पिंजरे में बन्द तू मेरे दर्द को जान सकती है।

नसीम—मलिका! मलिका!

लाड—(**क्रुद्ध होकर**) उफ्! बेरहम! फिर तीर

चलाया तूने मलिका कहकर !

[लाड चल देती है। नसीम 'बानू' ! 'बानू' ! बोलने लगती है।]

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान---बिहार शरीफ मे फरीद के मकान का एक कमरा

समय---तीसरा पहर

[कमरा जौनपुर के कमरे से मिलता जुलता है। फरीद और ब्रह्मादित्य बैठे हुए है। फरीद हुक्का पी रहा है।]

ब्रह्मादित्य---तो आप मानते है कि बिहार मे आप जौनपुर तथा अपनी जागीर से भी अधिक काम कर सके, और बहुत कम समय मे ?

फ़रीद---हाँ, क्योकि काम करीब करीब उसी तरह का था, जैसा जौनपुर और जागीर मे था। फिर सूबेदार बहार खाँ अब तो मुझे नौकर न समझ कर दोस्त समझने लगा है। सभी तरह के अख्तियारात मुझे हासिल है। **(धीरे धीरे धुआं नाक से निकालता है।)**

ब्रह्मादित्य---आपने उसकी शेर से जान बचायी है।

फ़रीद---लेकिन न जाने क्यो, पडित, उसका दिया हुआ यह नया नाम शेरखाँ मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझे अपना छोटा सा फरीद नाम ही पसन्द था।

ब्रह्मादित्य--परन्तु आपकी पसन्दगी से क्या होता है ? अब तो आपका नया नाम ही प्रसिद्ध हो गया है। **(कुछ रुककर)** एक बात आप जानते है ?

शेरखाँ--क्या ?

ब्रह्मादित्य--राज्याभिषेक के समय अनेक आर्य सम्राटो का नाम बदल दिया जाता था।

शेरखाँ--**(मुस्कराते हुए)** तो मेरी तख्त नशीनी हुई है ?

ब्रह्मादित्य--अभी तो नही हुई, पर भविष्य मे होने वाली अवश्य है।

शेरखाँ--**(हँसते हुए)** और नाम बदल गया अभी से; तख्त नशीनी के पेश्तर ही ?

ब्रह्मादित्य--सिंहासन मिलने वाला है, उसका यह प्रारम्भिक शकुन है।

[शेरखाँ कोई उत्तर न देकर गम्भीरता से कुछ सोचने लगता है। ब्रह्मादित्य उसकी ओर देखता रहता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

शेरखाँ--अच्छा, यह मजाक तो छोडो; मै आज तुमसे एक खास बात कहना चाहता हूँ।

ब्रह्मादित्य--मै समझ गया आप क्या कहना चाहते है।

शेरखाँ--क्या समझे ?

ब्रह्मादित्य--मुगलो के आक्रमण से ही सबन्ध रखने वाली

कोई बात होगी, क्योकि आजकल वही विषय आपकी दिवस को चिन्ता और रात्रि का स्वप्न है ।

शेरखाँ--हाँ, उसी के मुताल्लिक है । तुम मेरे दिल की बात न जानो यह मुमकिन ही नही । (**हुक्का गुड़ गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए**) देखो, पडित, मुगल चाहे मुसलमान हो, लेकिन उन्हे मै इस मुल्क के लिये लुटेरा समझता हू । इस मुल्क की दौलत ने न जाने कितनी बाहरी कौमो को यहाँ आने के लिए ललचाया है ।

ब्रह्मादित्य--हाँ. सबसे पहले यवन आये । वे लूट खसोट कर चले गये । उनके पश्चात् शक और हूण आये, पर देश उन्हे पचा गया । फिर गजनी और गौर के मुसलमान आये, ऐसी लूट मार हुई जैसी उसके पहले कभी न हुई ।

शेरखाँ--लेकिन आखिर मे शको और हूणो के मानिन्द पठानो ने इस मुल्क को ही अपना वतन मान लिया था ।

ब्रह्मादित्य--हाँ, यह मै मानता हूं, आप ही इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

शेरखाँ--और बाहरी कौमो का आना अभी भी नही रुका है। कुछ अरसे पहले मुगल तैमूर का हमला हुआ था। जो उसने किया वही बाबर करेगा। और मुझे तो यह खौफ है कि बाबर कही महमूद गजनवी के मानिन्द न हो जाय ।

ब्रह्मादित्य--इसमे सन्देह नही कि बाहरी जातियो के ये आक्रमण इस देश के इतिहास की महान दारुण और दुख पूर्ण घटनाये है ।

शेरखाँ--और आगे भी अगर यहाँ यही होता रहा, तो ऐसे सरसब्ज़ मुल्क की जैसी हालत होनी चाहिए वैसी कभी भी न हो सकेगी । **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए)** हम इस मुल्क के अन्दरूनी हालात तो ठीक करने की कोशिशो में मशगूल है, लेकिन इसके पहले अब इन बाहरी हमलो को रोकना जरूरी है ।

ब्रह्मादित्य--यही सोचकर सुल्तान इब्राहीम लोदी की हार के पश्चात् भी राणा साँगा इस प्रयत्न मे दत्तचित्त है ।

शेरखाँ--मेरी सारी हमदर्दी राना के साथ है । इस वक्त अगर मेरी तैयारी होती तो मै भी बाबर के खिलाफ राना के एक छोटे से मातहत की हैसियत से उनके मददगारो मे होता ।

ब्रह्मादित्य--और यही तैयारी आप करना चाहते है ?

शेरखाँ--हाँ, यही तैयारी मै करना चाहता हूँ। मै चाहता हूँ इस मुल्क के हिन्दू मुसलमान दोनो मिलकर इस बाहरी कौम का मुकाबला करे । **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए)** फिर यह काम यहाँ के सुल्तानो और राजाओ पर ही न छोडा जाय, बल्कि यहाँ की आम रिआया को भी इस काम में शामिल किया जाय । साथ ही बाबर की नौकरी मे कोई ऐसा शख्स रहे जो ऐन मौके पर उसकी फौज मे बलवा करा दे ।

ब्रह्मादित्य--तो हिन्दू मुसलमानों के सगठन का काम पक्ष पर छोडकर आप बाबर की नौकरी करना चाहते है ?

शेरखाँ--**(ब्रह्मादित्य की हथेली पर हाथ मारते हुए)** किस

कदर जल्दी हर तरह के मामलो को समझ लेते हो तुम !

ब्रह्मादित्य—(गम्भीरता से सोचते हुए) परन्तु यह काम बहुत बडा काम है। मुगल इस समय बहुत शक्तिशाली है। हमे जो कुछ करना है उसमे बहुत धैर्य रखना होगा; बिना पूरी तैयारी और ठीक अवसर के हम कुछ न कर बैठे इसके लिए अत्यधिक सयम से काम लेना होगा , अन्यथा फल उल्टा निकल सकता है।

शेरखाँ—इसमे क्या शक है ? साथ ही हमे अपने कुल काम और अरमान पोशीदा रखने होगे और बडी से बडी तकलीफ बरदाश्त करने को भी तैयार रहना होगा।

[शेरखाँ और ब्रह्मादित्य दोनों गम्भीरता से सोचने लगते है। दोनो के सिर झुक जाते है।]

लघु-यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—सहसरां मे निजाम का उद्यान

समय—प्रात काल

[उद्यान आगरे के उद्यान की बनावट का ही है, परन्तु उससे बहुत छोटा है। निकट के एक चबूतरे पर निज़ाम बैठा हुआ सितार बजाकर गा रहा है।]

गीत

क्यों प्रेम सिखाया था मुझको

अब दूर नजर से रहती हो
कुछ दिल की बात भी कहती हो
क्यो प्रेम ...
एक बार जरा दर्शन देजा
दिल तेरा है लेजा लेजा
क्यो प्रेम ...
छल कपट नही अच्छा होना
यह पहले ही समझा होना
क्यो प्रेम ...

[रहमान का प्रवेश। रहमान की अवस्था पैंसठ वर्ष से कम नही। वह साँवले रग का ऊँचा, किन्तु दुबला, मनुष्य है। सिर और बड़ी बड़ी मूछो तथा दाढी के बाल सन के समान सफ़ेद हो गये है। सफ़ेद कुरता और पायजामा पहने है। उसके हाथ पर पीतल की एक छोटी सी तश्तरी मे पीतल का एक छोटा सा गिलास है, जो ढक्कन से ढका हुआ है।]

रहमान--छोटे मियाँ ! छोटे मियाँ !

निज़ाम--**(गाना बन्द कर)** उफ ! यहाँ तक भी तूने पीछा न छोडा।

रहमान--**(बहरे मनुष्य के सदृश थोड़ा सा सिर उठा कर)** क्या क्या कहा तुमने ?

निज़ाम--**(चिल्लाकर)** कुछ नही, मै दूध नही पियूंगा। **(साधारण स्वर मे)** तूने गोद मे खिलाया क्या है, आफत हो गयी।

रहमान--नही कैसे पियोगे ? दुबले हो गये तो मै बडे मियाँ को क्या जवाब दूंगा ? दिन रात तस्वीरे और गज़ल ! न खाने का ठिकाना है, न पीने का ।

निज़ाम--(**गुस्से से**) जो भाई साहब ने कहा था वही तू भी कह--शायरी करना छोड दो, मुसव्विरी करना छोड दो, और करूँ क्या ? दिन रात दूध पियूं, बढिया बढिया चीज़े खाऊँ और यह सब खा पीकर जिन्दा क्यो रहूँ ? सोने चाँदी के टुकडो को इकट्ठा करने के लिए । मै जागीरदार का लडका हूं न ! रगो मे पठानी खून है न ! दुनिया मे कुछ काम करने आया हू न !

रहमान--क्या . क्या कहा तुमने ?

निज़ाम--खाने पीने, इन बेजान टुकडो को इकट्ठा और खर्च करने से बेहतर तुम लोगो की नजर मे और कोई काम है ही नही । जागीरदार, सूबेदार, नवाब, सुल्तान इन सब के तमाम कामो की बुनियाद यही है ।

रहमान--गजले फिर बनाना, पहले दूध पी लो ।

निज़ाम--(**चिल्लाकर**) नही पियूंगा ।

रहमान--(**चबूतरे पर बैठते हुए**) जब तक न पियोगे, मै जाने वाला नही ।

निज़ाम--(**कुछ देर पश्चात् मुस्कराकर, सितार रखते हुए**) अभी भी तू मुझे बच्चा ही समझता है । अच्छा ला, पी लेता हूँ ।

रहमान--क्या . . . क्या कहा तुमने ?

निज़ाम--(**चिल्लाकर**) तेरे बहरेपन के मारे तो और नाकों

दम है। मैंने कहा–ला, पी लेता हूँ। (**हाथ बढ़ाता है।**)

रहमान––(**खुश हो, उठकर दूध का गिलास निज़ाम को देते हुए**) वारी जाऊँ तुम पर! (**दोनों हाथों को कानों पर लगाता है।**)

निज़ाम––(**दूध के कुछ घूंट पीकर**) क्यो, रहमान, यह सब अमीर उमरा खा पीकर इस बेजान दौलत को इकट्ठा कर क्या करते है?

रहमान––क्या क्या कहा तुमने?

निज़ाम––वह अपनी तरह-तरह की खाहिशे पूरी करते है। ऐयाशी मे मुब्तिला रहते है।

रहमान––फिर गजले शुरू हुई। मै कहता हूँ पहले दूध तो पूरा पी लो।

निज़ाम––(**थोड़ा सा दूध और पीकर**) पर क्यो, रहमान, ऐसा भी कोई है जिसकी खाहिश ही मुहब्बत हो; बदला न मिलने पर भी चाहना?

[**एक प्रौढ़ अवस्था के अहलकार का प्रवेश। वह अँगरखा और पायजामा पहने है। सिर पर गोल पगड़ी है और गले में दुपट्टा। ललाट पर त्रिपुंड लगा है। वह आगे बढ़कर निज़ाम को झुककर सलाम करता है। निज़ाम पूरा दूध पीकर, गिलास रहमान को दे, सलाम का उत्तर देता है। रहमान का प्रस्थान।**]

निज़ाम––कहिए अहलकार साहब।

अहलकार––हुज़ूर, आज बहुत ही बुरे सम्वाद सुनाने को

उपस्थित हुआ हूँ ।

निज़ाम—(**घबड़ा कर जल्दी से**) क्यो, भाई जान तो अच्छे है ?

अहलकार—बिहार शरीफ मे जागीरदार साहब नही है । कहाँ गये, कोई नही जानता ।

निज़ाम—(**अत्यन्त चिन्ता से**) अच्छा (**कुछ रुककर**) वह कहाँ जा रहे है, इसकी इत्तला भी उन्होने मुझे भेजना जरूरी नही समझा ।

[**अलहकार कोई उत्तर नहीं देता । कुछ देर निस्तब्धता ।**]

निज़ाम—और दूसरी खबर क्या है ?

अलहकार—मुहम्मद खाँ सूर जागीर पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ है ।

निज़ाम—(**और भी घबड़ाकर**) उफ !

[**कुछ देर निस्तब्धता ।**]

निज़ाम—पडित ब्रह्मादित्य जी की कोई खबर है ?

अहलकार—उनकी खबर लेने मैंने बिहार शरीफ आदमी भेजा है ।

[**निज़ाम सिर झुकाकर गम्भीरता से सोचने लगता है । अहलकार निज़ाम की ओर देखता है ।**]

पाँचवाँ दृश्य

स्थान––बनारस के निकट बाबर का शिबिर

समय––रात्रि

[चाँदनी के प्रकाश में दूर पर, दूर-दूर तक फैले हुए बाबर शिविर के डेरे दृष्टिगोचर हो रहे है । दृश्य धुँधला सा है; स्पष्ट नहीं । निकट ही एक डेरे के सामने उसकी परछी मे शेरखाँ और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं । शेरखाँ हुक्का पी रहा है । परछी के बाहर मशाल जल रही है, जिससे यहाँ का दृश्य अधिक स्पष्ट है ।]

शेरखाँ––तो.....तो आखिर सुल्तान इब्राहीम लोदी और राणा साँगा के मानिन्द ही सुल्तान महमूद लोदी की हार हो गयी और बाबर की जीत !

ब्रह्मादित्य––बहुत जल्दी की गयी । मैंने कहा कि हमे अत्यधिक सयम से काम लेना होगा, अन्यथा फल उल्टा निकल सकता है । मेरा सगठन नही हुआ था और आप बलवा कराने की तैयारी नही कर सके थे ।

शेरखाँ––लेकिन हमारी गलती नही, पडित, महमूद माना ही नही ।

ब्रह्मादित्य––हमने गलती की उसे सहायता देकर, बडी बात यही हुई कि हमारी सहायता गुप्त रही, अन्यथा हम कही के न रहते ।

शेरखाँ––लेकिन....लेकिन, पडित, जिस हालात मे मैं हूँ,

उनमे सब्र रखना भी आसान बात नही है ।

ब्रह्मादित्य—मानता हूं ।

शेरखाँ—जिसे मैं लुटेरा समझता हूँ, मुल्क का बडे से बडा दुश्मन, उसी को मालिक बनाना पडा है। जिससे दिलोजान से नफरत करता हूँ उसी के सामने सर झुकाना पडता है , उसी की खुशामद करना पडती है । **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए)** वह मेरा हम मजहब है। कई वक्त नमाज तक उसी के साथ पढी जाती है । लेकिन उस वक्त भी दिली नफरत नही जाती, खुदा की ठीक इबादत ही नही होती, और अपने खेमे मे लौटकर फिर से नमाज पढता हूँ । **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए)** तुम हिन्दू हो, तुम्हारी सन्ध्या, पूजा, प्रार्थना मे मैं शरीक नही हो सकता. पर जब कभी तुम्हे सध्या पूजा करते देखता हूं, दिल मे ईश्वर के लिए मुहब्बत और इज्जत पैदा होती है ।

ब्रह्मादित्य—जानता हू ।

शेरखाँ—बाबर के साथ नमाज पढने के वक्त तो बाबर के लिए जो नफरत है, उसके सबब मे खुदा को भी भूल जाता हू । **(कुछ रुककर)** फिर तुम्ही कहो सब्र रहे कैसे ? **(धीरे धीरे नाक से धुआं निकालता है ।)**

ब्रह्मादित्य—इन दिनो निरन्तर आपके साथ न रहने पर भी मैं आपकी मानसिक अवस्था का अनुमान कर सकता हूं । मैंने सदा कहा और फिर कहता हूं कि हमे हर दशा मे अत्यधिक सयम रखना होगा । यदि इस स्थिति मे रहना आपकी शक्ति के बाहर

है तो चलिए यहाँ से, पर जल्दी कोई काम न कीजिए। कहीं अब फिर हमने जल्दी की तो बार-बार किया गया काम छिप नही सकता।

शेरख़ाँ--**(विचारते हुए)** हाँ, यह तो है ही।

ब्रह्मादित्य--और फिर तो हम कही के न रहेगे।

[एक दरबान का प्रवेश। वह आकर सलाम करता है।]

दरबान--हुजूर, निजाम नाम के एक शख्स सरकार से मिलना चाहते है।

शेरख़ाँ--**(जल्दी से)** उन्हे फौरन भेज दो।

[दरबान का सलाम कर प्रस्थान।]

शेरख़ाँ--एकाएक निजाम कैसे, पडित ?

ब्रह्मादित्य--**(सोचते हुए)** अभी मालूम हो जायगा।

[निज़ाम का प्रवेश। शेरख़ाँ उठकर आगे बढता है ब्रह्मादित्य भी उसके पीछे पीछे जाता है। निज़ाम शेरख़ाँ के सामने सिर झुकाता है। शेरख़ाँ उसे हृदय से लगा लेता है। ब्रह्मादित्य और निज़ाम भी एक दूसरे का अभिवादन करते है।]

शेरख़ाँ--तो आखिर तुमने मेरा पता लगा ही लिया, अच्छे तो हो ?

निज़ाम--बडी मुश्किल मे पता लगा सका हूँ। जागीर खोकर आ रहा हूँ, भाई साहब।

[शेरख़ाँ के मुँह से कोई उत्तर नहीं निकलता, परन्तु एकाएक उत्पन्न हुआ उसका मानसिक उद्वेग उसके मुख से झलकने

लगता है। वह सिर झुका लेता है। निजाम ब्रह्मादित्य की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

निजाम--(सहमे हुए स्वर में अटक-अटक कर) आप यह न समझिएगा कि इसमे मेरी कोई गलती है। जागीर के बचाने मे मैंने कुछ न उठा रखा, लेकिन मोहम्मद खाँ सूर के हमले का सामना करने के लिए हमारी तैयारी न थी, आपका और पडितजी का पता न लगा और बिहार से कोई मदद न मिली।

[फिर कुछ देर निस्तब्धता।]

शेरखाँ--(सिर उठाते हुए) आज ही महमूद लोदी की हार की खबर मिली और आज ही यह खबर! **(कुछ रुककर एकाएक प्रसन्नता के स्वर में)** लेकिन लेकिन कोई हर्ज नही बाबर मुझसे इतना खुश है कि उसकी मदद से मै अपनी जागीर तो फौरन वापस ले सकता हूँ। निजाम, तुम दिल छोटा न करो। शेरखाँ इस दफा सच्चा शेर होकर सुलेमान, अहमद, उनकी वालिदा और मोहम्मद खाँ सूर सब ..... को खो जायगा, सुना, खा जायगा।

[शेरखाँ बेचैनी से इधर-उधर टहलता है। निजाम और ब्रह्मादित्य दोनों उसकी ओर देखते हैं।]

लघु-यवनिका

छठवाँ-दृश्य

स्थान--सहसराँ मे निजाम का कमरा

समय--सध्या

[दृश्य खुलते समय कमरे में कोई नहीं है। कुछ ही देर में निज़ाम और रहमान का प्रवेश। रहमान के सिर और कन्धों पर निज़ाम का सामान है। निज़ाम का मुख अत्यन्त म्लान है। निज़ाम इधर-उधर घूमकर कमरे के सामान को व्यवस्थित सा करते हुए गाने लगता है। रहमान अपना बोझ उतारकर सामान जमाने लगता है।]

गीत

ए धन पर मिटने वालो
दौलत को पूजने वालो
यह धन दौलत की पूजा ही हमे नफरत सिखाती है
गला भाई से भाई का यह दौलत ही कटाती है
नशा दौलत का कर देता है अधा आँख वालो को
इसी की चाह हर इन्सान को हैवाँ बनाती है
ए धन पर मिटने वालो
दौलत को पूजने वालो
दुनिया मे ज़रा देखो तो
एक बार मुहब्बत करके
मुहब्बत दूर ले जाती है नफरत और अदावत से
मुहब्बत को नही कुछ वास्ता दुनिया की दौलत से
मुहब्बत तो बुराई से हमे बचना सिखाती है
मुहब्बत तो खुदा के भी हमें नज़दीक लाती है

दुनिया मे ज़रा देखो तो
एक बार मुहब्बत करके,
ए धन पर.. .....
दौलत को..... .... . .

[निज़ाम गाना समाप्त कर रहमान को देखता है ।]

निज़ाम—रहमान !

[रहमान जो अपनी कमर सीधी कर सुस्ता सा रहा है, नहीं सुनता ।]

निज़ाम—(ज़ोर से) रहमान !

[रहमान सुनकर निज़ाम के निकट आता है ।]

निज़ाम—रहमान, इस मर्तबा भी बिना लडाई के ही हमें अपनी जागीर वापिस मिल गयी ।

रहमान—तो मैं क्या करूँ ?

निज़ाम—तुझसे कुछ करने के लिए थोड़ा ही कह रहा हूँ लेकिन न मुझे पहली मर्तबा सुलेमान और अहमद के भागने से खुशी हुई थी, और न इस दफा हुई ।

रहमान—बडी हमदर्दी है, तो, छोटे मियां, जाकर उन्हें वापस बुला लाऊँ ?

निज़ाम—(और अधिक उदासी से) काश यह मेरे अख्तियार मे होता या भाई जान के पास शायर का दिल होता ..... .

रहमान—(उँगली उठाकर, जल्दी से) देखो, छोटे

मियाँ,. . .. देखो, छोटे मियाँ.. .

निज़ाम—(**व्यगपूर्ण हँसी से**) अपनो से दुश्मनी और दुश्मनो से इमदाद, यह मेरी समझ मे नही आता ।

रहमान—क्या. . . .क्या कहा तुमने ?

निज़ाम—कैसी. ...कैसी है यह दुनिया.. .. .

रहमान—... ..गइया ? ... .

निज़ाम—(**रहमान की ओर देखकर, कुछ देर रुककर मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए**) हाँ.... हाँ, गइया ! मुझे आज दूध नही पिलायेगा ?

रहमान—(**खुश होकर**) गइया अब लगेगी, छोटे मियाँ, देखता हूँ और जल्दी दूध लाना हूँ, खाने मे तो अभी बहुत देर होगी (**जल्दी से जाता है।**)

[निज़ाम जिस ओर रहमान गया है उसकी ओर देखते हुए लम्बी साँस लेकर बैठता है । कुछ देर निस्तब्धता । अब निज़ाम सितार को सन्दूक से निकाल उसे बजाते हुए गाना आरम्भ करता है ।]

गीत

क्या पता तुझको मुझे भूलने वाले ए दोस्त
मुझको तडपाती है किस दरज़ा मुहब्बत तेरी
कितनी मुद्दत हुई सहते हुए गम के सदमे
कितने दिन हो गये देखे हुए सूरत तेरी

हद मे बढ़ता है जुनू जब तेरे दीवाने का
तेरी तस्वीर से करता है शिकायत तेरी

लघु–यवनिका

सातवाँ दृश्य

स्थान–सहसराॅ मे शेरखाॅ का कमरा

समय–प्रात काल

[शेरखाँ अत्यधिक उद्विग्नता से इधर उधर टहल रहा है। उसका हुक्का भरा हुआ रक्खा है, पर उसकी ओर भी उसका ध्यान नहीं है। बार-बार वह द्वार की ओर देखता है, जिससे जान पड़ता है कि उत्कठा से किसी की प्रतीक्षा कर रहा है। कुछ ही देर में ब्रह्मादित्य का प्रवेश। ब्रह्मादित्य को देखकर शेरखाँ खड़ा हो जाता है।]

शेरखाँ––जितनी बेसब्री से आज मै तुम्हारा रास्ता देख रहा था, उतनी बेसब्री से शायद मैने जिन्दगी मे कभी किसी का रास्ता नही देखा।

ब्रह्मादित्य––ज्योही आपका दरबान पहुँचा, त्योही मै आ गया।

शेरखाँ––हाॅ, लेकिन दरबान के जाने और तुम्हारे आने तक का वक्त भी मै बड़ी मुश्किल से गुज़ार सका। **(गद्दी पर बैठते हुए)** बैठो, तुमसे आज मुझे बहुत ज़रूरी बाते करनी हैं।

ब्रह्मादित्य---(**बैठते हुए**)सो तो आपकी मुद्रा से ही जान पडता है ।

शेरखाँ--पडित, मुगलो की मदद से अपनी जागीर वापस पाकर मुझे जितना अफसोस हो रहा है, उतना आज तक कभी न हुआ था ।

ब्रह्मादित्य--यह होना अस्वाभाविक नही है और जिस प्रजा का आपने इतना भला किया था, उसी प्रजा के मुख से होने वाली अपनी बुराइयो के सम्वाद सुन-सुन कर आपका दुख और बढ रहा होगा ।

शेरखाँ--दर असल इन खबरों ने ही मेरी आँखे खोली है। शेरखाँ इतना खुद गरज हो गया है कि उसने मुल्क के दुश्मनो की मदद से अपने भाइयो को भगवाया। वह पठान नही अब मुगल है मुगल। (**हुक्का गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए**) यह और इसी तरह के दूसरे अलफाज की ठोकरो से मेरी नज़र के सामने का पर्दा फटा है! पडित, अब मै इस जागीर को एक लमहा भी नही रख सकता। मेरा सहसराँ मे रहना गैर मुमकिन है ।

ब्रह्मादित्य--तो इस जागीर का क्या कीजियेगा ?

शेरखाँ--मै सुलेमान और अहमद को खत लिखना चाहता हूँ कि वह मय अपनी वालिदा के वापस आ जायँ। (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**)इस गुनाह के कफ्फारा या प्रायश्चित के लिए मै तमाम जागीर सुलेमान और अहमद को देकर निज़ाम के साथ हमेशा के लिए सहसराँ छोड देना चाहता हूँ ।

[ब्रह्मादित्य सिर झुकाकर सोचने लगता है। शेरखाँ ब्रह्मादित्य की ओर देखता है। कुछ देर निस्तब्धता]

शेरखाँ--तुम चुप क्यो हो ? अपनी राय क्यो नही दे रहे हो ?

ब्रह्मादित्य--**(सिर उठाते हुए)** इस संबन्ध में मुझे कुछ भी कहना बहुत ही कठिन जान पडता है ।

शेरखाँ--**(कुछ आश्चर्य से)** मुझसे भी कहना ?

ब्रह्मादित्य--हाँ, आपसे भी कहना ।

शेरखाँ--**(और भी आश्चर्य से)** पडित, तुम तो आज अजीब बात कर रहे हो ।

ब्रह्मादित्य--देखिए, इस प्रकार के घरेलू प्रश्न बडे नाजुक हुआ करते है । जब आपके पिता का देहान्त हुआ , उस समय भी मै नही चाहता था कि आप सहसराँ लौटे ।

शेरखाँ--**(सोचते हुए)** हाँ, तुम तो नही चाहते थे ।

ब्रह्मादित्य--पर जब मैने देखा कि निज़ाम और आप बिना लौटे मानने वाले नही, तब, जागीर आपकी है, इस शाही फरमान के बिना मैने आप लोगों का लौटना आपकी कुशलता की दृष्टि से उचित नही समझा ।

शेरखाँ--बहुत दूरन्देशी की समझ थी ।

ब्रह्मादित्य--इस बार जब आपने कहा कि आप बाबर की सहायता से अपनी जागीर लौटा लेंगे, तब भी मै उसके पक्ष में न होने के कारण चुप रहा ।

शेरखाँ--(विचारते हुए) हाँ, उस वक़्त तुम कुछ नही बोले थे ।

ब्रह्मादित्य--आपने अपने जीवन के सम्मुख जिन आदर्शो और उद्देश्यो को रखा है, उनके सामने यह जागीर अत्यन्त तुच्छ वस्तु है, किन्तु प्राचीन पुश्तैनी सम्पत्ति होने के कारण बहुत बडी चीज़ भी । जिनकी सहायता से आपने फिर इसे प्राप्त किया है वे आपके शत्रु है, देश के भी शत्रु है । इसलिए आज उसके रखने मे आपको विराग हो रहा है, परन्तु सम्भव है कि फिर से राग की उत्पत्ति हो । इसीलिए मै चुप था और अभी भी इस विषय मे निशक होकर आपको कोई सम्मत्ति नही दे सकता ।

शेरखाँ--(गम्भीरता से सोचते हुए) अच्छा !

ब्रह्मादित्य--किन्तु आप जो भी निर्णय करेगे, उस निर्णय को कार्य रूप मे परिणित करने के लिए यदि मेरी किसी सहायता की आवश्यकता होगी, तो वह देने को मै तैयार हूँ ।

शेरखाँ--(हँसते हुए) पडित, अपनी कोई राय न देते हुए भी तुमने मेरे दिल का पर्दा हटा दिया । रिआया ने गालियाँ देकर मेरी नजर के सामने के पर्दे को फाडा, लेकिन तुमने कुछ न कहते हुए भी, सब कुछ कहकर, मेरे दिल का पर्दा टुकडे टुकडे कर दिया । **(हुक्का गुड़ गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए)** छोटी-सी होने पर भी पुश्तैनी चीज़ इतनी बडी होती है, इसे मै आज महसूस कर रहा हूँ । अरे ! मैने उसे वापस लेने के लिए, जिनसे मै दिलो जान से नफ़रत करता हूँ, उन दुश्मनो तक की मदद ली । ज़रा सी चीज़

के लालच मे रिआया को की हुई बडी बडी खिदमात को मिट्टी में मिला दिया। मै इसे हमेशा के लिए छोड देना चाहता हूँ, नही तो जिन्दगी के तमाम मकसद ही बरबाद हो सकते है। **(हुक्का गुड़ गुड़ाकर धुआं छोड़ते हुए)** तुम्हे मेरे खत के साथ जाना होगा और जिस तरह भी हो भागे हुए सुलेमान और अहमद को तलाश कर लाना होगा। मै खानदानी झगडो को खतम करना चाहता हूँ, बगैर इस यकीन के हम कभी नही लौटेगे वह कभी नही आयंगे। और तुम्हारे सिवा यहयकीन उन्हे कोई नही करा सकता। जब तक खानदानी झगडो का हमेशा के लिए खातमा न हो जायगा तब तक हम बडे-बडे काम हरगिज न कर सकेगे।

ब्रह्मादित्य--(गम्भीरता से सोचते हुए) मै जाने को तैयार हूं।

[शेरखाँ प्रसन्नता से उठ खड़ा होता है। ब्रह्मादित्य भी खड़ा हो जाता है।]

लघु-यवनिका

आठवाँ दृश्य

स्थान--सहसराँ मे निजाम का कमरा

समय--रात्रि

[निजाम अपना सामान बन्द करते हुए गा रहा है

उसी के निकट रहमान भी अपना सामान बांध रहा है ।]

अब दूर वतन से जाना है
किस्मत क्या रग दिखाती है, परदेश हमे ले जाती है
अब दूर वतन से जाना है
दिन अपने है यह रात नही, यह अपने बस की बात नही
अब दूर वतन से जाना है

निज़ाम--(गाना पूर्ण होने पर) रहमान !

[रहमान नहीं सुनता, अपने काम में दत्त चित्त रहता है ।]

निज़ाम--(ज़ोर से) सुनता है, रहमान ।

रहमान--क्या... क्या कहा तुमने ?

निज़ाम--(सामान बांधते हुए) मैं कहता हूँ इस मर्तबा मुझे भाई साहब की कार्रवाई समझ मे आती है। मुगलो की मदद से भाइयो को निकाल कर जागीर हासिल करना मेरी समझ मे न आया था, लेकिन भाइयो को वापस बुलाकर जागीर के कुल हकूक उन्हें दे देना मेरी समझ मे आता है ।

रहमान--हूँ !

निज़ाम--मैं ...मैं भी सुलेमान और अहमद से लडा था, पर भाई जान के डर से, और इसीलिए हार भी गया। जो अपने है वह मुझे अपने लगते है, रहमान ....

रहमान--अपने ?

निज़ाम--हाँ, अपने, पर दूसरो को अपना कैसे समझूं, यह मेरी समझ में नही आता, इसीलिए भाई साहब की रिआया की

खिदमत में कभी भी न समझ सका, और रिआया ने भी उन्हे क्या समझा ?

रहमान--है !

निज़ाम--जिस रिआया के लिए उन्होने सब कुछ किया और उन्ही के कदम-कदम पर पैरवी करने की मैंने भी कोशिश की उसी का रुख मुगलो से मदद लेते ही कैसा बदल गया ।

रहमान--बदल गया ?

निज़ाम--एक दम । मुहब्बत अपनो से हो सकती है ।

रहमान--अपनो से ?

निज़ाम--हाँ, अपनों से, या, ... या फिर (**धीरे से**) बानू से ।

रहमान--क्या. .. क्या कहा तुमने ?

निज़ाम--(**हँसते हुए**) कुछ नही । (**सिर हिलाते हुए**) यही . . . यही यही, रहमान. कि यह सैकडो, हजारो, लाखो की मुहब्बत मेरी समझ के बाहर की चीज़ है । भाई जान इस मुहब्बत को पाक समझते है, और जैसी मुहब्बत मेरे दिल मे है, उसको नापाक....... .

रहमान--(**बनावटी गम्भीरता से**) तुम्हारी मुहब्बत को ?

निज़ाम--हाँ, मेरी मुहब्बत को, पर जिसको वह नापाक समझते है वही अब उनकी निगाह मे भी झलकने लगी है । एक हिन्दू शायर ने सच कहा है– "ये न छिपाये छिपें सजनी, इक नेह के नैन

शेरखाँ--(**विचारते हुए**) हाँ, उस वक़्त तुम कुछ नही बोले थे ।

ब्रह्मादित्य--आपने अपने जीवन के सम्मुख जिन आदशा और उद्देश्यो को रखा है , उनके सामने यह जागीर अत्यन्त तुच्छ वस्तु है, किन्तु प्राचीन पुश्तैनी सम्पत्ति होने के कारण बहुत बडी चीज़ भी । जिनकी सहायता से आपने फिर इसे प्राप्त किया है वे आपके शत्रु है, देश के भी शत्रु है । इसलिए आज उसके रखने मे आपको विराग हो रहा है, परन्तु सम्भव है कि फिर से राग की उत्पत्ति हो । इसीलिए मै चुप था और अभी भी इस विषय मे निशक होकर आपको कोई सम्मत्ति नही दे सकता ।

शेरखाँ--(**गम्भीरता से सोचते हुए**) अच्छा !

ब्रह्मादित्य--किन्तु आप जो भी निर्णय करेगे, उस निर्णय को कार्य रूप मे परिणित करने के लिए यदि मेरी किसी सहायता की आवश्यकता होगी, तो वह देने को मै तैयार हूँ ।

शेरखाँ--(**हँसते हुए**) पडित, अपनी कोई राय न देते हुए भी तुमने मेरे दिल का पर्दा हटा दिया । रिआया ने गालियाँ देकर मेरी नजर के सामने के पर्दे को फाडा, लेकिन तुमने कुछ न कहते हुए भी, सब कुछ कहकर, मेरे दिल का पर्दा टुकडे टुकडे कर दिया । (**हुक्का गुड़ गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए**) छोटी-सी होने पर भी पुश्तैनी चीज़ इतनी बडी होती है, इसे मै आज महसूस कर रहा हूँ । अरे ! मैने उसे वापस लेने के लिए, जिनसे मै दिलो जान से नफ़रत करता हूँ, उन दुश्मनो तक की मदद ली । ज़रा सी चीज़

निज़ाम—मेरी बनायी हुई कुछ तस्वीरे । मुझे माल्रोजर कुछ नही चाहिए, लेकिन वक्त-वक्त पर जिन तस्वीरो में अपने तमाम दिली जज़बात भरे है, उन उनके बिना तो मै ज़िन्दा नही रह सकता ।

शेरखाँ—(**विचारते हुए**) हाँ, उन्हे तुम ले चल सकते हो, क्योकि वह किसी के काम की नही ।

यवनिका

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान–बिहार शरीफ मे शेरखाँ के मकान मे शेरखाँ का कमरा

समय––तीसरा पहर

[कमरा वही है जो दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में था। शेरखाँ सिर झुकाये हुए इधर उधर बेचैनी से टहल रहा है। हुक्का भरा हुआ रखा है। ब्रह्मादित्य का प्रवेश।]

ब्रह्मादित्य––महमूद लोदी के दूत का कहना है कि बाबर के स्वर्गबास मे सन्देह का कोई स्थान नही। यदि यह न होता तो सुल्तान महमूद लोदी मुगलो पर आक्रमण करने की बात भी न सोचता।

शेरखाँ––पडित, याद है जब पहली मर्तबा महमूद हारा तब हम लोगो ने क्या तय किया था ?

ब्रह्मादित्य––अच्छी प्रकार स्मरण है। हम लोगो ने जल्दी न करने और पूरे संयम रखने के अपने पहले निश्चय को और भी दृढ़ता से पालन करने का निश्चय किया था। **(दोनों बैठ जाते है।)**

शेरखाँ––बाबर मर गया है। बिहार के सूबेदार बहार

खाँ के मर जाने और उसके लड़के जलाल खाँ के बचपन के सबब बिहार के सारे अख्तियारात मेरे हाथ में है। (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) लेकिन इतने पर भी क्या तुम यह समझते हो कि हम मुगलो से लडने के काबिल है।

ब्रह्मादित्य--सर्वथा नही। बाबर नही, तो उसका लडका हुमायूँ है। बिहार के सब अधिकार आपके हाथ मे है, फिर भी हमारी वैसी तैयारी नही कि हम मुगलो से इस समय लड सके।

शेरखाँ--मेरी भी यही राय है जो तुम्हारी। मै अब इस मामले मे ज़रा भी जल्दी करने वाला नही हूँ।

[**निज़ाम का प्रवेश।**]

निज़ाम--(**दोनों को गम्भीर मुद्रा को देखते हुए**) शायद महमूद लोदी के एलची को जवाब देने के मामले पर सलाह हो रही है। (**बैठ जाता है।**)

शेरखाँ--हाँ, उसी के मुताल्लिक। कहो, तुम्हारी क्या राय है ?

निज़ाम--मै ऐसे मामलात मे राय देने की अक्ल ही नही रखता।

शेरखाँ--लेकिन दुनिया मे तस्वीरे बनाना और शायरी करना ही सब कुछ नही है; इन बातो की तरफ तुम्हे खयाल दौडाना ही चाहिए।

ब्रह्मादित्य--आपके साथ रहते-रहते ऐसा कौन है जो इन बातो मे दक्ष न हो जाय। आपकी अनुपस्थिति मे जागीर का कार्य

इन्होने जिस योग्यता से किया था, उससे मुझे विश्वास है कि यह राजनैतिक विषयो मे भी पटु हो जायँगे ।

[**कुछ देर निस्तब्धता ।**]

शेरखाँ—(**निज़ाम से**) निज़ाम, हम लोगो ने तय किया है कि हम महमूद लोदी को कोई मदद नही दे सकते । (**धीरे-धीरे नाक से धुआँ निकालता है ।**)

निज़ाम—क्यो ? जिसके लिए आप घूम फिर कर, फिर से बिहार आकर रहे, मुगलो को निकालने का वह मकसद आप भूल जाना चाहते है ? मुगलो के लिए अब आपके दिल मे वैसी नफरत नही रह गयी ।

शेरखाँ—हरगिज नही, बल्कि इस मुल्क और यहाँ के बाशिन्द-गान के मुताल्लिक बाबर ने जैसी गन्दी बाते लिखी है, उन्हे पढने के बाद तो मै उनसे और भी ज्यादा नफरत करने लगा हूँ ।

निज़ाम—लेकिन अब बाबर नही है, हुमायूँ है, क्यो ?

शेरखाँ—इससे क्या, इन बाप बेटो मे जैसी मुहब्बत थी वैसी तो शायद ही किसी बाप बेटे मे हो, और जिस तरह हुमायूँ पर सदके होकर बाबर मरा है, उससे तो मरहूम बाबर पर हुमायूँ की मुहब्बत जीते हुए बाबर से भी ज्यादा हो गयी होगी । (**हुक्का गुड़ गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए**) बाबर ने यहाँ के लिए जो कुछ लिखा है उसे हुमायूँ बाबर की वसीयत मानेगा । वह भी इस मुल्क और यहाँ के आदमियो से हमेशा नफरत करता रहेगा;

क्यों, पंडित ?

ब्रह्मादित्य--मैं आपसे पूर्णतया सहमत हूं ।

शेरखाँ--हुमायूं की आँखे भी अपने मुल्क की तरफ ही लगी रहेगी। हिन्दुस्तान को वह कभी अपना वतन नही समझ सकता, और बिना यह समझे, उसके हाथ से इस मुल्क और यहाँ के रहने वालो की क्या भलाई हो सकती है ?

ब्रह्मादित्य--खून की नदियाँ यहाँ सदा बहती अवश्य रह सकती हैं ।

शेरखाँ--मैं हूं हिन्दी, इसी मुल्क मे पैदा हुआ, यही की आबोहवा मे पला, यही की मिट्टी से बना और इसी मिट्टी मे मिलूंगा। यहाँ से बाहर देखने के लिए मेरे पास कुछ नही। हिन्दुस्तान ही मेरे लिए सब कुछ है। यहाँ के रहने वाले चाहे वह किसी भी मजहबो मिल्लत के हो, मेरे भाई बिरादर है ।

ब्रह्मादित्य--आपने अब तक के अपने कामो से यह प्रमाणित कर दिया है ।

शेरखाँ--जो हिन्दुस्तान और यहाँ के रहने वालो से नफरत करता है, चाहे वह मेरा हम मजहब ही क्यो न हो, मैं उससे नफरत करता हूं ।

ब्रह्मादित्य--धन्य है ।

शेरखाँ--हुमायूं को निकालना भी मैं उतना ही जरूरी समझता हूं जितना बाबर को निकालना था। **(धीरे धीरे नाक से धुआँ निकालता है।)**

निज़ाम--तब आप महमूद लोदी के एलची को खाली हाथ क्यो लौटाना चाहते है ?

ब्रह्मादित्य--इसलिए कि मुगलो से लडने की हमारी अभी वैसी तैयारी नही जैसी होनी चाहिए। उनसे लडकर हम हारना नही चाहते, नही तो फिर उन्हे निकालना और कठिन हो जायगा। पूरी तैयारी कर, ठीक अवसर पर हम उनसे भिडेगे। (**शेरखाँ से**)तो महमूद लोदी के दूत को आपके निर्णय की सूचना दे दूं ?

शेरखाँ--फौरन, ऐसे मामलात मे साफ-साफ कह देना ही ठीक रास्ता है।(**ब्रह्मादित्य जाने लगता है।**)हाँ, देखो, मुगलो को निकालने की तैयारी के मुताल्लिक ही आज मैंने एक नयी बात सोची है, वह और सुनते जाओ।

ब्रह्मादित्य--(**फिर बैठते हुए**) अच्छी बात है।

शेरखाँ--इस काम के लिए इस वक्त तो हमारी सबसे बडी जरूरत दौलत ही है न ?

ब्रह्मादित्य--हाँ, हमारे साध्य के लिए वही इस समय सबसे बडा साधन है।

शेरखाँ--तुम जानते हो कि चुनार के सूबेदार ताज ख़ाँ की बेगम लाड मलिका बहुत दौलतमन्द है ?

[लाड मलिका का नाम सुनते ही निज़ाम के मुख पर एक विचित्र प्रकार का रंग आ जाता है।]

ब्रह्मादित्य--हाँ, सुना है उसके पास रत्तियो, तोलो, सेरों

और पन्सेरियों नही, मनो मोती और सोना है ।

शेरखाँ--बाबर के मरने के सबब से इस वक्त हुमायूँ बहुत दूर तक नजर न फेंक सकेगा। बिहार की सारी ताकत मेरे हाथ मे है। (**हुक्का गुड़ गुड़ाकर धुआं छोड़ते हुए**) मै चुनार पर चढाई कर ताज खाँ को कत्ल कर लाड मलिका से शादी करने की बात सोच रहा हूं ।

[जैसे जैसे शेरखाँ के प्रस्ताव का एक के बाद एक शब्द निज़ाम के कान में पड़ता है, उसके मुख के विद्युत्गति से परिवर्तित होते हुए भाव उसके हृदय की विलक्षण स्थिति का अनुमान करा देते है, परन्तु उसकी ओर न शेरखाँ का ध्यान जाता है और न ब्रह्मादित्य का ।]

ब्रह्मादित्य--(**हँसते हुए**)तो इस अवस्था मे आपके हृदय मे नये प्रेम की उत्पत्ति हुई है और आपको नये विवाह करने की सूझी है ?

शेरखाँ--प्रेम व्रेम मै नही जानता, पडित । इस तरह के इश्क वगैरह से ज्यादा फालतू और नुकसान देह चीज़ मै दुनिया मे कोई नही मानता, लेकिन... (**हुक्का गुड़ गुड़ाकर धुआं छोड़ते हुए**) लेकिन यह शादी मुल्क की भलाई के लिए मै ज़रूरी समझता हूँ। लाड मलिका की दौलत मुगलो को निकालने में बहुत मददगार होगी ।

[शेरखाँ और ब्रह्मादित्य एक दूसरे की ओर देखते है; निज़ाम किसी की ओर नहीं ; वह अपने सामने की तरफ़ इस

प्रकार देखता है मानों किसी बहुत दूर की वस्तु को देख रहा हो। उसकी दृष्टि में अब नितान्त शून्यता है।]

लघु-यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान--चुनार के किले में लाड मलिका के कमरे का बरामदा

समय--प्रात काल

[दृश्य वैसा ही है जैसा दूसरे अंक का दूसरा दृश्य था। लाड नसीम मैना का खाना प्याले में लिये हुए कमरे के बाहर आती है। उसकी वेष-भूषा एकदम बदल गयी है। वह एक काले रंग की साड़ी और सलूका पहने है। कोई भूषण उसके शरीर पर नहीं है। उसका मुख एकदम उदास है। वह चुपचाप आकर मैना के पिंजरे का दरवाजा खोल, प्याला पिंजरे मे रखती है। नसीम खाने पर झपटती है, पर उसकी चोंच प्याले में न जाकर लाड की उँगली पर लगती है। उँगली से खून निकलने लगता है। लाड 'उफ़' कह हाथ निकाल कर उँगली देखती है।]

लाड--(कुछ देर उँगली देखने के पश्चात्, मैना की ओर देखते हुए) नसीम !

[नसीम बेरुखी से केवल 'टें टें' करती है, और खाती रहती है।]

लाड--(नसीम को ही देखते हुए) समझी, तू भी मालिक के

मरने पर मातम मना रही है । (**उँगली को देखते हुए**) पर मुझ पर हमला क्यो ? (**फिर मैना की ओर देखकर**) मैं...मैं तो बेकसूर हूँ, नसीम, मैंने नही, मेरी दौलत ने उन्हे कत्ल कराया है । (**फिर उँगली की तरफ देखकर**) फिर भी यह सजा ! ..... काश, मेरे खून के यह चन्द कतरे उस खून के सारे दरिया को नाप लेते, जो मेरी दौलत के लिए चुनार मे बहा है। ....उफ ! (**पास ही एक चौकी पर बेबस सी बैठ जाती है और आँखो को पोंछती है जो सजल हो गयीं थीं ।**)

नसीम--(**खा चुकने पर**) मलिका !

लाड--(**गुस्से से**) फिर फिर मलिका !

[**नसीम बार बार सीटी बजाती है ।**]

लाड--(**उठकर नसीम के पास आकर**)तो फिर . फिर से बाजे बजेगे ? फिर फिर से मेरी शादी होगी ? मेरी जिस दौलत के लिए पहली शादी हुई थी, उसी दौलत के लिए दूसरी ?

नसीम--मुसव्विर ! मुसव्विर !

लाड--मुसव्विर से नही, नसीम । वही...वही कही हो सकती, तब. . तब तो.....(**कुछ रुक कर**)दौलत मन्द की शादी तो दौलत मन्द से ही होती है; दर असल यह शादी होती है ककर पत्थरो, हीरो, पन्नो, लालो, गौहर की, पत्थरों की; सोने चाँदी की, दिल की नही । (**फिर कुछ रुककर**) और... और शादी होते ही मातम की यह पोशाक भी उतर जायगी ।

नसीम––सहेली !

लाड––(**अपनी पोशाक को देखकर, नसीम की ओर देखते हुए**) इस पोशाक मे तेरी सच्ची सहेली नज़र आती हूँ, न ? जब यह याद करती हूँ, तेरे नज़दीक आती हूँ, तब चाहती हूँ, यह न उतरे, हम दोनो सहेलियाँ एक सी रहे.....लेकिन इस पोशाक को देखकर जब शौहर मरहूम याद आते हैं तब.. .तब.....

नसीम––मलिका ! मलिका !

लाड––फिर मलिका बनना चाहती हूँ ? नही, नही.....

नसीम––बानू !

लाड––ठीक, बानू.. .फिर से बानू जरूर बनना चाहती हूँ.. .. आगरे के बाग से उन तीन दिनो की ज़िन्दगी के बाद की ज़िन्दगी की तवारीख़ के काले हरफो को मिटाकर फिर.... फिर से ...

नसीम––फरिश्ता !

लाड––हाँ, उस फरिश्ते के साथ नयी.. .बिलकुल नयी ज़िन्दगी...

[नसीम सीटी बजाती है।]

लाड––तेरी इस मीठी तान के मानिन्द ही नयी..... बिलकुल नयी ज़िन्दगी बसर करना चाहती हूँ ।

[नसीम लगातार सीटियाँ बजाती है ।]

लाड––जानती हूं वह..... वह न हो सकेगा । सितार न बजेगा, इसराज न बजेगा, तान न उठेगी । ढोल पिटेगे, शोरोगुल

होगा। ताकतवर के अरमानो को कौन.. कौन रोक सकता है ? और जो रोक सकते है, उनमे भी एक खास तरह की कूवत. .. .सुना कूवत रहती है ।

नसीम—सहेली ! सहेली !

लाड—तेरी सहेली कमजोर....एकदम कमजोर है, तभी तो एक ताकतवर उसे आगरे से चुनार ले आया और दूसरा चुनार से बिहार ले जायगा ।

नसीम—मुसव्विर !

लाड—उसका नाम पता भी होता तो शायद मुझमे भी कूवत आ जाती, लेकिन इतनी. इतनी बडी दुनिया मे बिना नाम पते के मै औरत जात कहाँ....कहाँ ढूढूं उसे ?

नसीम—मुसव्विर ! मुसव्विर !

लाड—मुसव्विर ! सगदिल मुसव्विर ! ..... मुसव्विर सिर्फ़ मुसव्विर निकला ! छोड .....छोड इस नाम को; भूल ... भूल जा उसे। वह तो ज़िन्दगी का एक ख्वाब था....चार दिनो की चाँदनी थी । (**उँगली को देखकर नसीम को देखते हुए**) कमबख्त ! तूने तो नाराज होकर उँगली पर छोटा सा जख्म किया है, जिसे तू देख सकती है, थोड़ा सा ही खून बहाया है, लेकिन उसने....उसने तो मुहब्बत कर दिल मे जख्म किया है , ऐसा जो दिख तक नही सकता, ऐसा जख्म जो बढ़ते बढ़ते नासूर .....ऐसा .. हाँ, ऐसा नासूर हो गया है, जो अन्दर से तो सुर्ख खून बहाता है और आँखो से सफ़ेद !

[लाड की आँखों से आँसू बहने लगते है। नसीम पिंजरे में फुदक-फुदक कर सीटियाँ बजाती है।]

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान--बिहार शरीफ मे शेरखाँ के मकान मे निज़ाम का शयनागार

समय--रात्रि

[शयनागार में अत्यन्त मन्द प्रकाश है, इतने पर भी यह मालूम हो जाता है कि शयनागार भी अन्य कमरो के सदृश ही है; फर्क इतना ही है कि इसमें दाहिनी ओर की दीवाल के निकट एक पलंग बिछा हुआ है। पलंग पर कोई सो रहा है, पर प्रकाश मन्द होने के कारण उसे पहचाना नहीं जाता। एकाएक पीछे की दीवाल पर धुंधला सा प्रकाश दिखायी पड़ता है और इस प्रकाश में दिखता है कि दो निज़ाम एक दूसरे की ओर मुख किये हुए खड़े है। दोनों का पूरा मुख तो नहीं दिखायी देता, पर जितना दिख पड़ता है उससे दोनों के निज़ाम होने का अनुमान हो जाता है।]

एक निज़ाम--ताजखाँ मारा गया, चुनार भाई जान को मिल गया, लेकिन.....लेकिन क्या लाड मलिका का दिल भी उन्हे मिल गया होगा ?

दूसरा निज़ाम--इससे क्या ? इश्क को तो वह सिर्फ

फालतू ही नही, नुकसान देह चीज भी समझते है । उन्हे लाड का दिल नही, उसकी दौलत चाहिए ।

पहला—ताजखाँ ने भी शायद उसकी दौलत के लिए ही उससे शादी की थी, भाई साहब भी उसकी दौलत के लिए उससे शादी करना चाहते है !

दूसरा—लेकिन ताजखाँ ने वह दौलत अपने लिए चाही थी, भाई जान उसे मुल्क के लिए चाहते है ।

पहला—माना कि वह मुल्क के लिए दौलत चाहते है फिर भी उन्हे एक भोली-भाली, सीधी-सादी औरत की जिन्दगी को खिलवाड बनाने का क्या हक है ? क्या औरत आदमी के लिए खिलौने से ज्यादा कुछ भी नही है , जो चाहे जिस तरह उससे खेले ? मुहब्बत के लिए शादी जायज है, दौलत के लिए भी शादी सुनी थी, लेकिन मुल्क के लिए शादी तो एक अजीबो गरीब चीज़ है ।

दूसरा—पर भाई साहब के लिए मुल्क के सिवा और कुछ है ही नही ।

पहला—**(गम्भीरता से सोचते हुए)** उसकी शादी अगर मेरे साथ होती तो भी उसकी दौलत तो मुल्क के लिए काम आ सकती थी ।

दूसरा—यह बात भाई जान से कही क्यो नही ?

पहला—कहता कैसे ? शायद भाई साहब उससे मुहब्बत करते हो ?

दूसरा—**(आश्चर्य से)** मुहब्बत करते हों ? उन्होंने कभी

उसे देखा भी है ? मुहब्बत कैसे करेगे ?

पहला—शायद मेरी बनायी हुई तस्वीर देख ली हो, एक दिन उनकी निगाह तो उस पर पड हो गयी थी ।

दूसरा—पर जब तक उसके पहले उसकी और कोई तस्वीर उन्होने न देखी हो, साथ ही यह न जानते हो कि वह लाड की तस्वीर है, तब तक यह उन्हे मालूम कैसे हो सकता है कि फलाँ तस्वीर लाड की ही है ।

पहला—(**गम्भीरता से सोचते हुए**) नही, नही, वह ज़रूर उससे मुहब्बत करते है, इसीलिए तो चुनार की लडाई पर मुझे ले नही गये ।

दूसरा—फिजूल का शक है, जग पर न ले जाने का सबब है— प्यार !

पहला—तो फिर उन्होने यह क्यो नही कहा कि लाड से मै शादी कर लूं; उन्हे तो मेरी शादी की बडी फिक्र रहती थी ।

दूसरा—वाह ! वाह ! उनसे न जाने कितने मर्तबा शादी करने का इन्कार किया गया , बार-बार के इस इन्कार के बाद वह चुप हो गये । किस मुंह से फिर शादी करने के लिए कहते ?

पहला—(**और गम्भीरता से विचार करते हुए**) तो मुल्क के लिए तो लाड की दौलत उसकी मुझसे शादी होने पर भी काम आ सकती है । अभी भी शायद उनकी लाड से शादी न हुई हो । चल दूं चुनार, और खोलकर रख दूं अपना दिल भाई जान के सामने ?

दूसरा—ज़रूर जिस भाई को इतना चाहते हो उसके सामने

दिल खोलकर रखने मे हर्ज ही क्या है ? अभी भी शायद लाड मिल जाय ।

[बीच की दीवाल का धुँधला प्रकाश लुप्त हो जाता है; दोनों निज़ाम अब नहीं दिखते ।]

पलग पर सोया मनुष्य--(एकाएक उठते हुए) लाड ! .... लाड मिल जायगी ? **(बैठते हुए)** लाड ! .....लाड ! **(खड़े होते हुए)** बानू !.... बानू ! **(दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए)** बानू ! मै अभी आता हूं.... ...अभी आता हू, बानू !.... इन्तज़ार....हाँ, इन्तज़ार करना । **(प्रस्थान ।)**

[यद्यपि अत्यन्त मन्द प्रकाश के कारण यह मनुष्य पहचाना नहीं जाता, परन्तु स्वर से मालूम होता है कि निज़ाम है । कुछ ही देर में आगे-आगे शमादान लिये हुए रहमान और उसके पीछे-पीछे निज़ाम का उसी दरवाज़े से प्रवेश, जिस दरवाज़े से निज़ाम गया था ।]

निज़ाम--(ज़ोर से) हाँ, जल्दी.....जल्दी बाँध सामान, रहमान, मै फौरन चुनार जा रहा हूं ।

रहमान--(बिस्तर की ओर बढ़ते हुए) लेकिन.. .. लेकिन छोटे मियाँ, अभी तो सुबह होने मे काफी देर है ।

निज़ाम--(गुस्से से) तुझे.. .. तुझे इससे क्या ?

रहमान--पर ... रात. ....रात को तुम्हारा.....अधेरे में तुम्हारा जाना.....

निज़ाम--(और गुस्से से) तो क्या मै अभी भी

बच्चा हूँ ? (कुछ रुककर, डाँटते हुए) बाँध, तू तो जल्दी सामान बाँध।

[रहमान एक लम्बी साँस लेकर बिस्तर उठाना आरम्भ करता है।]

लघु-यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—चुनार के किले का आँगन

समय—रात्रि

[आँगन के तीन ओर किले की इमारतें दिखायी देती हैं, पर रात्रि के कारण धुंधली। आँगन में चारों तरफ़ चिरागों से रोशनी की गयी है। बीच का स्थान शादी के लिए सजा हुआ है। शेरखाँ दूल्हे के वेष में है। उसके सिर पर फूलों का सहरा और मुख पर सेहरे की फूल मालाएँ हैं। लाड मलिका भी दुलहिन के वेष में है। काजी शादी की रस्म अदा कर रहा है। ब्रह्मादित्य तथा कई हिन्दू मुस्लिम सरदार आँगन में हैं। नेपथ्य से शहनाई की ध्वनि आ रही है। शादी की रस्म पूरी होने पर लाड को लौंडियाँ अन्दर ले जाती हैं। सब लोग आगे बढ़-बढ़ कर शेरखाँ को मुबारकबाद देते हैं। नर्तकियाँ आती हैं और नाच तथा मुबारकबाद का गान आरम्भ होता है।]

गीत

गाओ गाओ मुबारकबादी
गाओ गाओ मुबारकबादी

हर तरफ आज छायी बहार है
सारी दुनिया बनी गुलजार है
किस मुबारक घडी मे है शादी

गाओ गाओ मुबारकबादी
गाओ . .. ..

[निज़ाम का जल्दी से प्रवेश। वह इस दृश्य को देखकर ठिठक कर खड़ा रह जाता है। उसके मुख का सारा रंग ही उड़ जाता है, पर अपने को संभालने का पूर्ण प्रयत्न करते हुए वह शेरखाँ की ओर बढ़ता है।]

निज़ाम--(सिर झुकाकर सलाम करते हुए) भाई जान ! मै भी चुनार की फतह और शादी की मुबारकबाद देने को हाजिर हो गया हूँ ।

शेरखाँ--(निज़ाम को गले लगाकर) निहायत खुशी हुई तुम्हारे आने से। **(दोनों अलग हो जाते हैं। कुछ रुककर)** तुम्हारी भाभी अभी-अभी अन्दर गयी है, उन्हे भी मुबारकबाद दे आओ ।

लघु-यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—चुनार के किले मे लाड मलिका के कमरे का बरामदा

समय—रात्रि

[बरामदे में शमादानों का प्रकाश है । नसीम का पिंजरा गिर पड़ा है । उस पिंजरे पर एक बिल्ला झपट रहा है । नसीम फड़फड़ा रही है । लाड मलिका का दुलहिन के वेष में प्रवेश । बिल्ले उठाकर की इस लीला को देख, झपट कर वह उसे भगाती है और पिंजरा उसे टाँगते हुए कहती है ।]

लाड—नसीम ! मैंने ..मैंने तेरी जान तो बिल्ले से बचा दी, लेकिन मुझ..... मुझ पर जो यह नया शेर झपटा है, इससे मुझे कौन.....

[निज़ाम का प्रवेश । लाड की निगाह निज़ाम पर पड़ती है । वह ठिठक कर रह जाती है ।]

लाड—(अत्यन्त आश्चर्य भरे स्वर में) मुसव्विर.....! मुसव्विर ! तुम कहाँ !

निज़ाम—(सिर झुकाते हुए, भर्राये हुए स्वर में) मुसव्विर नही, मै आपका देवर हूँ, भाभी । भाई जान और आपको इस शादी की मुबारकबाद देने के लिए बिहार शरीफ से हाज़िर हुआ हूँ ।

लाड—(ध्यान पूर्वक निजाम को देखते हुए, उसी प्रकार के आश्चर्य भरे स्वर में ।) लेकिन.....लेकिन.....

निज़ाम--(उसी प्रकार झुके हुए और वैसे ही भर्राये हुए स्वर में) आप अपने देवर को दुआ भी न देंगी, भाभी ?

[लाड कुछ देर उसी प्रकार खड़ी रहती है। उसकी मुद्रा से जान पड़ता है कि उसकी समझ में ही नहीं आता कि वह किसे देख रही है और उसे क्या करना चाहिए।]

निज़ाम--(उसी दशा में और वैसे ही स्वर में) दुआ.. .. दुआ दीजिए, भाभी।

[लाड के मुख से कुछ नहीं निकलता। वह अपना काँपता हुआ दाहिना हाथ निज़ाम के सिर पर रखती है। निज़ाम की आँखों से दो बूँद आँसू लाड के पैरो पर गिरते हैं। वह चौंक पड़ती है। निज़ाम का अपने मुख को छिपाने का प्रयत्न करते हुए शीघ्रता से प्रस्थान।]

[लाड अपने पैरो को देखती है। पैरो पर पड़े हुए आँसुओं को देख वह और भी भौंचक्की सी रह जाती है। एकाएक उसके पैर लड़-खड़ाने लगते हैं और वह एकदम से बैठकर अपने दोनो घुटनों के के बीच में अपना मुख छिपा लेती है। उसके हिलते हुए कन्धों से जान पड़ता है कि वह रो रही है।]

लघु-यवनिका

छठवाँ दृश्य

स्थान--चुनार मे शेरखाँ का कमरा

समय--दोपहर

[कमरा उस समय के अन्य कमरों सदृश ही है; उसी प्रकार सजा हुआ। शेरखाँ और ब्रह्मादित्य बैठे हुए बातचीत कर रहे हैं। शेरखाँ हुक्का भी पीता जाता है।]

शेरखाँ—तो पठानो की मुगलो से दर्राह मे हार हुई ?

ब्रह्मादित्य—जी हाँ, दर्राह मे ।

शेरखाँ—**(गम्भीरता से विचारते हुए)** पंडित, सुल्तान महमूद लोदी अब हमेशा को खत्म हो गया। इतना ही नही, उसने पठान कौम को बडा धक्का पहुँचाया। **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए)** गनीमत यही हुई कि इस लडाई मे हम लोग शामिल नही हुए, नही तो फिर मुगलो के निकालने की बात ही खत्म हो जाती।

ब्रह्मादित्य—परन्तु युद्ध मे सहायता न देने के कारण हमारी अकीर्ति भी कम नही हो रही है। लोग कहते है पठान आपकी सहायता न मिलने के कारण हारे ।

शेरखाँ—यह तो मै जानता हूँ। जब लडाई चल रही थी तभी, जब यह बाते शुरू थी, तो जग खत्म होने पर तो और ज्यादा हो गयी होगी। **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए)** लेकिन मुझे अब इस तरह की बातो की मुतलक परवाह नही रह गयी है। मुझे खयाल है अपने मकसद का,उसे पूरा करने का। अगर वह पूरा हो गया तो आज जितनी बदनामी है, कल उतनी ही नेकनामी हो जायगी । **(धीरे-धीरे धुआँ नाक से निकालता है।)**

ब्रह्मादित्य—आपके हृदय के इस धीरे-धीरे होने वाले

परिवर्तन को देखकर मुझे जितना हर्ष होता है, वह मैं शब्दो मे नही कह सकता।

शेरखाँ—कैसा रद्दो बदल ?

ब्रह्मादित्य—याद कीजिए उस समय को जब आपने अपनी जागीर छोडी थी ।

शेरखाँ—**(सोचते हुए)** अच्छा ।

ब्रह्मादित्य—जिस प्रकार की चर्चाओ ने आपसे अपनी पुश्तैनी जागीर छुडवा दी उसी प्रकार की चर्चाएं आज आपके हृदय पर कोई प्रभाव नही डाल रही है ।

शेरखाँ—**(गम्भीरता से सोचते हुए)** हाँ, यह तो है ।

ब्रह्मादित्य—आज आपको इन क्षणिक बुराइयो की परवाह न होकर अपने उद्देश्य पूर्ण करने की ही चिन्ता है। यह भविष्य के लिए अच्छे से अच्छे लक्षण के अतिरिक्त और कुछ नही हो सकता ।

[दरबान का प्रवेश ।]

दरबान—**(सलाम कर)** हुजूर, बादशाह हुमायूँ के एक सरदार सरकार से मुलाकात करने के लिए तशरीफ लाये है ।

शेरखाँ—**(आश्चर्य से)** अच्छा ! **(कुछ रुककर)** उन्हे इज्जत के साथ अन्दर ले आओ ।

[दरबान का सलाम कर प्रस्थान ।]

शेरखाँ—**(चिन्ताकुल स्वर मे)** पडित, क्या माजरा है ?

ब्रह्मादित्य—**(गम्भीरता से विचारते हुए)** कहना

कठिन है, किन्तु अभी मालूम ही हुआ जाता है ।

[दरबान के साथ हुमायूँ के सरदार का प्रवेश । सरदार अधेड़ अवस्था और गेहुँए रंग का, ऊँचा-पूरा, मोटा-ताज़ा आदमी है । वेशभूषा शेरख़ाँ आदि से मिलती जुलती है । उसके हाथ में उस समय की बादशाही रीति के अनुसार काग़ज़ के एक सुन्दर पोंगरे में बादशाही पत्र है । पोगरे पर फ़ारसी के बड़े बड़े अक्षरों में नाम लिखा है और दोनों ओर मुहरें लगी है । दरबान का सरदार को पहुँचा, सलाम कर प्रस्थान । शेरख़ाँ और ब्रह्मादित्य खड़े होकर सरदार का स्वागत करते हैं । दोनों ओर से आदाब बजाये जाते है, और तीनों गद्दी पर बैठते हैं ।]

शेरख़ाँ—बन्दे पर बडी नवाजिश की शाहशाह ने । कहिए, क्या हुक्म भेजा है ?

सरदार—बादशाह सलामत का खत जनाब की ख़िदमत मे लाया हूँ । (कागज का पोंगरा शेरख़ाँ को देता है ।)

[शेरख़ाँ कागज का पोगरा ले, उसमें से पत्र निकालकर पढ़ता है। पत्र भी फ़ारसी में लिखा है । वह पत्र कितनी जल्दी-जल्दी पढ़ रहा है यह उसकी आँखों को पुतलियों के पंक्ति के एक सिरे से दूसरे सिरे तक तथा एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति पर जाने से ज्ञात हो जाता है । पत्र का प्रभाव उसके हृदय पर किस प्रकार पड़ रहा है यह उसकी पहले क्रुद्ध और फिर निराश मुद्रा से मालूम हो जाता है ।]

शेरख़ाँ—(पत्र पढ़कर अपने को संभालने का पूर्ण प्रयत्न करते हुए, ब्रह्मादित्य से) पडित, बादशाह मेरी चुनार की लड़ाई के

सबब से बहुत खफा हो गये हैं। वह चाहते है कि चुनार फ़ौरन उनके हवाले कर दिया जाय। अगर हमने ऐसा न किया तो ख़त मे जग की धमकी दी गयी है।

ब्रह्मादित्य--(भर्राये हुए स्वर से) ऐसा ! ...ऐसा !

[शेरखाँ फिर से पत्र पढ़ने लगता है। इस बार उसकी निराश मुद्रा फिर क्रोध में बदल जाती है। हुमायूं का सरदार और ब्रह्मादित्य दोनों शेरखां की ओर देखते है। कुछ देर निस्तब्धता।]

[शेरखाँ-- (एकाएक खड़े होकर, उसके खड़े होने के कारण ब्रह्मादित्य और सरदार भी खड़े हो जाते है।) मुझे सोचना होगा, सरदार साहब, कि मुझे सुलह मजूर है या जग। (ब्रह्मादित्य से) पडित, सरदार के ठहरने का ठीक इन्तजाम करदो। (सरदार से) आज शाम तक आपको शहशाह के खत का जवाब मिल जायगा।]

लघु-यवनिका

सातवाँ दृश्य

स्थान--चुनार मे निजाम का कमरा

समय--रात्रि

[कमरा शेरखाँ के कमरे के सदृश ही है। कमरे की एक खिड़की खुली है, जो निजाम के पीछे है। शेष दरवाजे

खिड़कियां बन्द हैं। निज़ाम अपने सामने लाड मलिका के आगरे वाले चित्र को रखे, उसे देखते हुए, सितार बजाकर गा रहा है।]

गीत

मुहब्बत मे मजा क्या आ रहा है
मेरा दिल यह मुझे समझा रहा है

[लाड मलिका चुपचाप आकर खिड़की मे खड़ी हो जाती है। उसे निज़ाम नहीं देख पाता। निज़ाम का मुख उसे नहीं दिखता, पर अपना चित्र दिखता है। निजाम का गाना चलता रहता है।]

नजर मे रात दिन वह फिर रहे है
तसव्वुर रग क्या क्या ला रहा है

[कुछ देर बाद लाड खिड़की से हट जाती है, निज़ाम का गीत आगे बढ़ता है।]

जमाने मे नही कोई किसी का
मुझे यह तजरबा बतला रहा है

[कुछ ही देर में दरवाज़े पर थपकियां सुन पड़ती हैं। निज़ाम गाना बन्द कर सितार रख, तस्वीर पर पर्दा डाल, दरवाज़ा खोलता है। लाड का प्रवेश।]

निज़ाम--(आश्चर्य से) आप ! ··· भाभी··· आधीरात गये आप !

लाड--नींद नही आती थी, तुम गा रहे थे, कितना

दर्द था तुम्हारी शायरी मे, सोचा, थोडा दिल बहल जायगा, चली आयी। गाओ, गाओ न, निज़ाम, तुम बहुत अच्छा गाते हो।

निज़ाम--भाभी! **(सकोच से सिर कुछ नीचा करते हुए)** भाई साहब अब तक नही आये?

लाड--तुम्हारे भाई जान? .. जग की तैयारी के सबब उन्हे कहाँ फ़ुरसत! **(अंतिम वाक्य कहती हुई वह दीवाल पर टँगे हुए चित्रों की ओर बढ़ती है।)**

निज़ाम--**(कुछ चंचल होकर)** तो आपने आने की तकलीफ क्यो गवारा की? लौडी के हाथ मुझे बुला भेजती।

लाड--**(निज़ाम के कथन पर कोई ध्यान न देते हुए एक प्राकृतिक दृश्य के चित्र की ओर देखते हुए)** कितनी अच्छी तस्वीर है!

[निज़ाम सकुचित सा चुपचाप पास ही खड़ा रहता है। लाड दूसरे चित्रो की ओर बढ़ती है।]

निज़ाम--**(कुछ देर बाद, एक चित्र की ओर संकेत करते हुए)** यह .. यह भाई जान की तब की तस्वीर है जब वह अब्बा से खफा होकर भाग गये थे। मैने उनकी जुदाई मे यह बचपना किया था।

लाड--काश, मै भी मुसव्विर होती।

निज़ाम--**(लाड की ओर देख, फिर जल्दी से नज़र नीचे की ओर झुका)** भाभी.. .. ...

लाड--निज़ाम, मेरी ज़िन्दगी मे भी एक मुसव्विर आया

था; उसने मेरी एक तस्वीर बनायी ; **(कनखियों से निज़ाम की ओर देखते हुए, जो सिर झुकाये हुए चुप था)** तस्वीर पूरी हो गयी, पर, निज़ाम, मुसव्विर बडा अजीब निकला; न तो उसने तस्वीर दी और न वादे पर आया ही। मैं कुछ समझ न सकी। **(कुछ रुककर निज़ाम की ओर पूरी दृष्टि से देखते हुए)** निज़ाम !

निज़ाम—(सिर उठाकर, पर दूसरी ओर देखकर) जी !

लाड—तुम भी तो मुसव्विर हो, सच्चे मुसव्विर। तुम्ही बताओ आखिर उसने ऐसा क्यो किया ?

[निज़ाम चुप रहता है। उसका मुख कुछ लाल हो जाता है।]

लाड—(निज़ाम की परेशानी को समझते हुए) तुम नही बता सकते ? अच्छा . ..मैं ही बताती हूँ तुम्हे। मुसव्विर..... वह मुसव्विर बुजदिल था। . .... मुझे याद है तस्वीर बनाते बनाते उसके हाथ काँपने लगे थे और फिर तस्वीर देने को आते हुए उसके पैर काँपने लगे होगे।

निज़ाम—(एकदम भर्राये हुए स्वर में) भाभी.....

लाड—हाँ, हाँ, मैं सच कह रही हूँ, ..और तुम जानते हो, निज़ाम ऐसी हालत किसकी होती है ? ..उसकी . .उसकी जो गुनाह करता है.... . जो गुनाहगार होता है। **(अन्तिम वाक्य कहते कहते लाड परदे से ढके हुए चित्र के पास पहुँच जाती है।)**

निज़ाम—(उसी प्रकार के स्वर में) ग... . ...ना . ..... ह.....गार. ....र ! .....

[उसी समय लाड चित्र के परदे को शीघ्रता से हटा देती है और कुछ उग्रता से चित्र की ओर और फिर निज़ाम की ओर देखती है ।]

लाड--हाँ, गुनाहगार.. .. .मुसव्विर गुनाहगार है ।

निज़ाम--(**उसी प्रकार के स्वर में**) उफ !

[दोनों हाथों से अपने चेहरे को ढाँकते हुए निज़ाम उसी खिड़की की ओर जाता है, जहाँ लाड आकर खड़ी हो गयी थी । उस खिड़की से अब चाँदनी आ रही है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

निज़ाम--(**एकाएक लाड की ओर घूमकर रुँधे हुए गले से**) भाभी ! . भाभी! आप.. . आप चली जायँ.. .....चली जाइए, यहाँ से,... ...जाइए..... ..जाइए..... .जाइए ।

लाड--(**लम्बी साँस लेकर**) माफ करना, निजाम, तुम्हें तकलीफ हुई । मैंने तुम्हारे जख्म को छू दिया, पर.. पर तुमने अपने ही जख्म को देखा, तुम अपने जख्म के दर्द मे दूसरे के जख्मो को देख ही न सके .....

निज़ाम--(**कुछ चिल्लाकर**) बस. . .बस भी करो, भाभी ! .....भाभी ! . ..भाभी.. .....भाभी ! कितने .. .. आह ! कितने नश्तर चुभो रही हो तुम !

[निज़ाम की आँखें छलछला आती हैं और उसके आँसू बहने लगते हैं । लाड उसके नज़दीक जाती है और स्नेह से अपने दामन से उसके आँसू पोंछ देती है । निज़ाम बेसुध-सा लाड की ओर देखने लगता है । लाड उसकी ओर देखती है । आँखें चार होती हैं ।

गाड हँस देती है ।]

लाड--तुम ब तक बच्चे हो !

[लाड निज़ाम का हाथ पकडकर उसे एक चौकी पर बैठाती है । वह चुपचाप बैठ जाता है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

लाड--निज़ाम !

निज़ाम--भाभी !

लाड--(हँसते हुए) अच्छा, देखो, अब मेरी एक तस्वीर और बनाओ।(कुछ रुककर) बोलो, बनाओगे न ?

निज़ाम--आपकी . आपकी तस्वीर, भाभी ? आपकी तस्वीर तो मै नही बना सकता ।

लाड--(अपनी तस्वीर की ओर संकेत कर) और वह किसकी तस्वीर है ?

[निज़ाम कुछ न कह सिर झुका लेता है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

लाड--हाँ, कहो, वह किसकी तस्वीर है ?

[निज़ाम फिर भी कुछ नहीं कहता । उसी प्रकार मूर्ति के सदृश बैठा रहता है ।]

लाड--नही बोलोगे ?

निज़ाम--(एकाएक सिर उठाकर) वह तस्वीर आपकी नही है ।

लाड--(आश्चर्य से) मेरी नही है ?

निज़ाम--नही ।

लाड--(उसी प्रकार) तब ?

निजाम--(भर्राये हुए स्वर में) वह आगरे मे रहने वाली लाड बानू नाम की एक लडकी की है, वह लाड मलिका नही थी, न सूबेदार ताजखाँ की बेगम, न मेरे भाई साहब की बीबी, न मेरी भाभी ।

[निजाम का सिर झुक जाता है । लाड एक कौतूहल पूर्ण दृष्टि से निजाम की ओर देखती रहती है ।]

लघु--यवनिका

आठवाँ दृश्य

स्थान--चुनार के बाहर युद्ध क्षेत्र

समय--तीसरा पहर

[दृश्य मानव शवों, उनके कटे हुए अंगों, गिरे हुए शस्त्रो तथा, हाथी, घोड़े आदि के कटे हुए अंगों से भरा हुआ है । अभी भी मुग़लों और पठानों में युद्ध हो रहा है । पठान सेना मे कुछ हिन्दू सैनिक भी है । नेपथ्य से नाना प्रकार के युद्ध-शब्द भी सुनायी पड़ते है । धीरे-धीरे पठानों की हार हो रही है । कई मरते है कई घायल होकर गिरते है , रहे हुए भागते है । मुग़ल इनका पीछा करते है । शेरख़ाँ और ब्रह्मादित्य का कुछ सैनिकों के साथ प्रवेश । सब सैनिक वेष में है ।]

शेरख़ाँ—बरी. . बुरी तरह हमारी हार हो रही है,

पंडित ।

ब्रह्मादित्य—फिर . फिर हम जल्दी कर बैठे ।

शेरखाँ—(**लम्बी सांस लेकर**) हाँ, हमने जल्दी कर दी ।

ब्रह्मादित्य—जिस प्रकार पुरानी पुश्तैनी जायदाद छोडनी कठिन होती है उसी उसी प्रकार नयी कदाचित नयी प्राप्त की हुई वस्तु देना भी ।

शेरखाँ—लेकिन . लेकिन, पडित, अभी . अभी भी शायद मौका है । अभी भी हम लडाई बन्द कर आगे का रास्ता . .(**कुछ रुककर एकदम जल्दी से**) देखो .. देखो,, तुम फौरन सफेद झडा दिखाने का इन्तजाम करो ।

ब्रह्मादित्य—ऐसा . ऐसा ?

शेरखाँ—(**और जल्दी से**) हाँ, फौरन . फौरन पडित बिना देरी के, जल्दी से जल्दी, एकदम । दुरुस्तगी के लिए वक्त रहते हुए ग़लती दुरुस्त करना ही सबसे बडी अक्लमंदी है ।

यवनिका

चौथा अंक

पहला दृश्य

स्थान--बिहार शरीफ में शेरखाँ के मकान मे शेरखाँ का कमरा

समय--तीसरा पहर

[कमरा वही है जो दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में था। शेरखाँ गद्दी पर बैठा हुआ हुक्का पी रहा है। उसकी मुद्रा अत्यन्त गम्भीर है। वह कभी हुक्के के धुएँ के उठते हुए कुन्डालियों को ध्यान से देखता है, कभी सिर झुका जमीन पर बिछे हुए क़ालीन को और कभी सिर उठाकर छत से लटकते हुए झाड़ों को। ब्रह्मादित्य का प्रवेश। वह आकर गद्दी के एक ओर बैठ जाता है।]

शेरखाँ--कहो, पडित, क्या नयी खबर है ?

ब्रह्मादित्य--आज तो दो बडी बडी खबरे है।

शेरखाँ--एक न होकर दो और दोनो बडी बडी ?

ब्रह्मादित्य--जी हाँ, दो और दोनो बहुत बडी बडी।

शेरखाँ--बताओ ?

ब्रह्मादित्य--पहली खबर तो यह है कि बगाल का बिहार पर आक्रमण हो रहा है और दूसरी यह कि यहाँ के कुछ लोहनी सरदार आपकी हत्या का षडयत्र रच रहे है जिनमे बहत

कर यहाँ का सूबेदार जलाल खाँ भी सम्मिलित है ।

शेरखाँ—(**लम्बी साँस लेकर**) इन दोनो खबरों को सुनकर मुझे कोई खास ताज्जुब नही हुआ । इन दिनो जिस तरह की बाते रोज़ मर्रा सुनने को मिलती थी उनसे मुझे शक था कि बगाल का बिहार पर शायद हमला हो जाय । (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) मेरे खिलाफ तो इस दफा बिहार आते ही नयी नयी साजिशे हो ही रही है, मेरा खून करने की साजिश करने वालो का शायद यह आखिरी दाँव है । (**कुछ रुककर नाक से धुआँ निकालते हुए**) पडित, आजकल की अपनी जिन्दगी से मैं तग आ गया हूँ ।

ब्रह्मादित्य—आपका असन्तोष मैं भली भाति जानता हूँ ।

शेरखाँ—या तो आदमी की तरक्की होती है या वह तनज्जुल होता है , मै तनज्जुल हो रहा हूँ, तरक्की नही कर रहा हूँ । बुजुर्गो की कमाई हुई जागीर गयी, अपना फतह किया हुआ चुनार गया, और बिहार की यह नौकरी इस मर्तबा सच्ची नौकरी है ।

ब्रह्मादित्य—हाँ, सो तो है ।

शेरखाँ—पहले भी नौकरियाँ ही की थी । जौनपुर की नौकरी पहली नौकरी थी । पर वहाँ नये नये काम सीखने और करने के सबब वह नौकरी नौकरी न जान पडी । (**हुक्का गड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) फिर यहाँ नौकरी की, पर शेर से बहार खाँ की जान बचाने की वजह से बहुत जल्दी नौकर से उसका दोस्त हो गया । (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ**

छोड़ते हुए) दूसरी दफा जब यहाँ नौकरी की तो जलाल खाँ बच्चा था इसलिए उस वक्त यह भी न मालूम हुआ कि मैं नौकर हूँ । लेकिन इस इस मर्तबे **(चुप हो जाता है।)**

ब्रह्मादित्य––अब जलाल खाँ बच्चा नही है, इतना ही नही, वह कान का भी बहुत कच्चा है ।

शेरखाँ––इसीलिए तो यह हाल है। (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) जिन्दगी के हम लोगो के बडे-बडे मकसद और अरमान एक तरफ पडे हुए है और हम लोगो का काम हो गया है–इन छोटी-छोटी साजिशो को नाकामयाब बनाने के लिए नयी नयी साजिशे करना ।

ब्रह्मादित्य––तो हम दूसरो के षडयत्रो को सफल हो जाने दे ?

शेरखाँ––नही, सो तो नही हो सकता, लेकिन इस तरह की जिन्दगी बसर करते रहना भी मेरे लिए गैर मुमकिन है। (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) एक यह भी हो सकता है कि हम बिहार छोडकर ही चलदे और अपने अरमान पूरे करने के लिए कोई दूसरा रास्ता ढूँढें ।

ब्रह्मादित्य––सो तो हमने कई बार सोचा है, पर कोई दूसरा स्थान अभी तक तो सूझा नही, और तब तक जो है उसे कैसे छोडा जाय ?

शेरखाँ––पर इस हालत मे अब यहाँ रहना भी मुश्किल है ।

[शेरखाँ सिर झुकाकर गम्भीरता से सोचने लगता है कुछ देर निस्तब्धता; हाँ, यह निस्तब्धता बीच-बीच में हुक्के की गुड़-गुड़ाहट से अवश्य भंग हो जाती है। ब्रह्मादित्य शेरखाँ की ओर देखता रहता है।]

शेरखाँ—(**कुछ देर पश्चात् सिर उठाकर**) देखो, पंडित, मै चाहता हूँ कि एक मर्तबा जलाल खाँ से साफ साफ बात करूँ। कई दफा मैंने यह सोचा, पर रुक गया। अब जब बगाल का हमला ही हो रहा है, तब तो यह करना ही होगा।

ब्रह्मादित्य—आप उससे क्या कहेंगे ?

शेरखाँ—साफ साफ़ कहूँगा कि बिहार के सियासी काम में दल-बन्दी है और लडाई के वक्त यदि बिहार इन दो दलो के बीच इसी तरह उलझा रहा तो जग में उसकी हार तय शुदा बात है। (**धीरे धीरे नाक से धुआं निकालता है।**)

ब्रह्मादित्य—परन्तु दलबन्दी स्पष्ट कहाँ है ? दो ही दल है, यह कैसे कहा जा सकता है ?

शेरखाँ—हमारा एक दल है, यह तो हम जानते है न ? हमारे दल मे कौन कौन है , यह भी हमे मालूम है न ?

ब्रह्मादित्य—हाँ, हमारा दल और उसके व्यक्ति हमारे लिए स्पष्ट है।

शेरखाँ—मैं जलाल खाँ से कहूँगा कि जग का काम या तो वह बिना कोई दखल दिये मेरे ज़िम्मे करे, हमारा दल जिस तरह मुनासिब समझेगा, उसे निपटायगा, या फिर वह लडाई का काम

अपने जिम्मे रक्खे। दूसरे लफ्जो मे इसका मतलब होता है कि लडाई का काम, हमारे खिलाफ जो दल है उनके हाथ मे चला जाय। (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) ऐसी हालत मे जलाल खाँ से कहूँगा कि वह सल्तनत का अन्दरूनी इन्तजाम मेरे जिम्मे कर दे ।

[ब्रह्मादित्य कुछ उत्तर न देकर गम्भीरता से विचारने लगता है। शेरखाँ हुक्का गुड़गुड़ाते हुए उसकी ओर देखता है।]

शेरखाँ—(**कुछ देर पश्चात्**) तुम्हे यह तजवीज पसन्द नही आयी ?

ब्रह्मादित्य—(**सिर उठाते हुए**) हाँ, कुछ बहुत सतोषजनक नही है।

शेरखाँ—यह मै भी मानता हू, मगर फिलहाल जो हालत है उसमे बेहतर हो जायगी या नही ? (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए, कुछ रुककर**) देखो, पडित, सबसे अच्छी बात तो थी बिहार छोड देना, लेकिन जैसा तुमने अभी कहा बिहार छोडकर कहाँ चला जाय, यह हमारी समझ मे नही आता, और बिना किसी मुनासिब जगह को पाये हाथ की जगह छोडना अब मुझे भी ठीक नही जान पडता ।

ब्रह्मादित्य—इससे मै सहमत हूँ ।

शेरखाँ—जग का काम हमारे जिम्मे रहा तो यह लडाई हम जीत सकेगे इसका मुझे यकीन है, क्योकि यह मुगलो से न होकर पठानो से है ।

ब्रह्मादित्य--अच्छा ।

शेरखाँ—**(हुक्का गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए)** उस वक्त सल्तनत का अन्दरूनी इन्तजाम अपने हाथ मे रहने की वजह से सुलह हमारे दल के साथ होगी और इस तरह हमारे दल की अहमियत बढ़ जायगी।

[ब्रह्मादित्य फिर कुछ न कह, सिर झुका कर गम्भीरता से सोचने लगता है। शेरखाँ हुक्का गुड़गुड़ाते हुए उसकी ओर देखता है ।]

ब्रह्मादित्य--**(कुछ देर पश्चात् सिर उठाते हुए)** यद्यपि मुझे अभी भी आपका प्रस्ताव बहुत सतोषजनक नही दिख रहा है, तथापि मै आपको कोई दूसरा मार्ग सुझा भी नही सकता ।

शेरखाँ—तसल्ली बख्श नही है, यह तो मै भी मानता हूँ। लेकिन इससे मौजूदा हालत मे तरक्की होगी या नही ?

ब्रह्मादित्य--**(गम्भीरता से सोचते हुए)** थोडा बहुत सुधार हो सकता है ।

शेरखाँ--और फिर, पडित, लडाई एक ऐसी बात है कि जहाँ उससे मौजूदा चीजो मे से कई का खात्मा होता है, वहाँ उसमे नयी नयी चीजे पैदा भी होती है । बगाल और बिहार का यह जग हमे कहाँ ले जायगा, यह आज हम नही कह सकते । **(हुक्का गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए)**

ब्रह्मादित्य—**(कुछ संतोष से)** हाँ, यह मै भी मानता हूँ। **(कुछ रुककर)** और आपकी हत्या का जो षड्यत्र रचा जा

रहा है, उसके लिए क्या करना है ।

शेरखाँ—(**बेपरवाही से**) वह.. ..वह तो बहुत छोटी सी बात है । उस साजिश को तो हम किसी भी तरह खत्म कर देंगे । (**हुक्का गुड़गुडा कर धुआं छोड़, मुस्कराते हुए**) और फिर, पंडित तुम तो समझते हो न कि मैं बडे बडे, कामो के लिए पैदा हुआ हूं । बिना उन कामो के पूरा हुए मेरा खून कैसे हो सकता है ?

ब्रह्मादित्य—(**मुस्कराकर**) हाँ, सो तो मैं अभी भी कहता हूं । आपके द्वारा बडे बडे काम होंगे, होकर रहेगे ।

[दोनों हँसने लगते है]

लघु—यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ में शेरखाँ के मकान मे लाड का शयनागार

समय—सध्या

[शयनागार अन्य कमरो के सदृश ही है । शयनागार के बीच में लाड का पलंग बिछा है । लाड बीमारी के कारण पलंग पर बेहोश सी लेटी हुई है । उसके पलंग के निकट ही उसकी मैना का पिंजरा टँगा हुआ है । एक लौंडी के साथ निजाम का प्रवेश ।]

लौंडी—देखिए, अभी भी बेहोश है । दवा तो पीतीं ही नही ।

निजाम—(**लाड की ओर देखते हुए, लौंडी से**) अच्छा, तुम

जाकर हकीम जी को बुला लाओ, मैं तमाम बातों का इन्तज़ाम कर दूँगा।

[लौंडी का प्रस्थान। निज़ाम पलंग पर एक ओर बैठ जाता है।]

निज़ाम--(धीरे से) भाभी ! भाभी !

[लाड कोई उत्तर न देकर उसी प्रकार पड़ी रहती है। निज़ाम उसकी ओर देखता रहता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

निज़ाम--(कुछ कातर स्वर में) भाभी ! आपको निज़ाम पुकार रहा है बोलो.. भाभी.. बोलो।

[लाड हिलती सी है, पर बोलती नहीं। निज़ाम लाड की ओर देखता रहता है। कुछ देर फिर निस्तब्धता।]

निज़ाम--भाभी ! भाभी !

नसीम--बानू ! बानू !

[निज़ाम कुछ चौंककर मैना की ओर देखता है। वह एकाएक उदास हो जाता है और अचानक उसके मुख से निकलता है --]

निज़ाम--बा... नू ! बानू !

लाड--(दर्द भरे स्वर में, किन्तु आँखें फिर भी बन्द रहती हैं) बानू !....फिर फिर कहो।

[निज़ाम कुछ विस्मय पूर्ण दृष्टि से लाड की ओर देखता है। लाड की आँखों की कोरों से दो बूँद आँसू ढलक जाते हैं।]

निज़ाम--(काँपते हुए स्वर में) बानू !

लाड--(उसी प्रकार आँखों को बन्द किये हुए) फिर.. फिर कहो।

निज़ाम—बानू !

लाड—रुको मत, कहते जाओ ।

निज़ाम—बानू ! बानू ! बानू !

[लाड आँखें खोल देती है । उसके दोनों हाथ निज़ाम की ओर बढते है । निज़ाम उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर उसके हाथ अपने गालों में मलने लगता है । निज़ाम के आँसू लाड के हाथों को भिगो देते है । दोनों कातर दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखते है ।]

नसीम—मुसव्विर ! मुसव्विर !

[दोनों की दृष्टि मैना की ओर घूमती है, पर तुरन्त ही दोनो फिर एक दूसरे को देखने लगते है । लाड के ओंठों पर एक अपूर्व मुस्कराहट दौड़ जाती है ।]

लाड—निज़ाम ! आज मैं जीत गयी । अब मैं अच्छी हो जाऊंगी ।

निज़ाम—(मुग्ध मुस्कराहट के साथ) बानू ! . . मेरी बानू !.

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ मे शेरखाँ के मकान मे शेरखाँ का कमरा

समय—रात्रि

[शेरखाँ बेचैनी से इधर उधर टहल रहा है। उसका हुक्का भरा हुआ रखा है, पर उसकी ओर उसका ध्यान नहीं है। वह कितना बेचैन है, यह उसकी मुद्रा से जान पड़ता है। उसकी आँखें चढ़ी हुई हैं। ओठ सूख गये हैं, जिन्हें वह बार बार जीभ से गीले करता है। टहलते-टहलते कभी वह खड़ा हो जाता है, फिर घूमने लगता है। कभी शून्य दृष्टि से सामने की ओर देखता है, कभी मुट्ठी बाँधता है, कभी पैरों से जमीन ठोकने लगता है। ब्रह्मादित्य का प्रवेश। उसे देखकर शेरखाँ शीघ्रता से उसकी ओर बढ़ता है।]

शेरखाँ—(जल्दी से) हाँ, क्या क्या खबर है मैदाने जग की ?

ब्रह्मादित्य—बडी विचित्र खबर है—मैदान, मैदान जग न रहकर खाली मैदान ही रह गया है।

शेरखाँ—(आश्चर्य से) याने ?

ब्रह्मादित्य—लडाई हुई ही नहीं।

शेरखाँ—(और अधिक आश्चर्य से) लडाई हुई ही नहीं ?

ब्रह्मादित्य—जी नहीं।

शेरखाँ—तब ?

ब्रह्मादित्य—राज्य का अन्तरग कार्य आपको सौपकर जलाल खा यहाँ के दूसरे दलो के साथ बगाल के सुलतान से युद्ध करने नही गया था।

शेरखाँ—(अत्यन्त आश्चर्य से, पैरों को जमीन पर पटक,

हाथो की मुट्ठियां बांधकर) तब..... तब काहे को गया था ?

ब्रह्मादित्य—बिहार प्रात बगाल के सुलतान को भेंट करने।

शेरखाँ—**(चिल्लाकर)** पडित ! पडित ! पहेलियो में बात न करो, यह वक्त मजाक करने का नही है।

ब्रह्मादित्य—मैं पहेलियो मे बात नही कर रहा हूँ, और मज़ाक शायद ही कभी करता होऊँ, पर बात ही ऐसी आश्चर्यजनक हुई है, जो पहेली भी समझी जा सकती है और मजाक भी। जलाल खाँ ने लडकपन किया है। ऐसा बचपन जैसा इतिहास मे इसके पूर्व कदाचित् किसी ने न किया होगा। आपके सामने अपने को निबल मानकर, आपसे अपना पीछा छुडाने के लिए उसने इस आशा पर कि बगाल का सुलतान बिहार उसे लौटा देगा, बिना युद्ध और बिना सधि की ही किन्ही शर्तों के, बिहार प्रात बगाल के सुलतान को नजर कर दिया, न युद्ध हुआ, न सधि, सैनिक बरखास्त कर दिये गये और अपने दल के मित्रो के साथ जलाल खाँ साहब बगाल के सुलतान के मेहमान हैं।

[शेरखाँ गहरी साँस ले, कुछ न कहकर चुपचाप इधर उधर टहलता है। ब्रह्मादित्य उसकी ओर देखता है। बदहवास सा निजाम जल्दी जल्दी आता है।]

निजाम— **(भर्राये और कांपते हुए स्वर में)** भाई साहब !. ..भाई जान, मुझसे एक गलती. ....बहुत बडी गलती हो गयी है, लेकिन ... लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप मुझे माफ...

शेरखाँ—(**कड़ककर**) ठहरो निज़ाम ! (**ब्रह्मादित्य की ओर घूमकर**) पडित, इस तरह मुल्क नजर नही किये जा सकते, सुना, हरगिज हरगिज नही । मेरे रहते.. शेरखाँ के रहते, जलाल खां .जलाल खाँ क्या कोई.. कोई भी बिहार को बगाल के सुलतान की नजर नही कर सकता । जलाल खाँ के वालिद ने मुझे नौकर रखा था, जलाल खाँ मेरा शागिर्द रह चुका है, इसीलिए मेरे दिल मे उसके लिए मुरव्वत आ जाती थी, लेकिन दुश्मने मुल्क होकर उसी ने जलाल खाँ ने ही मुझे छुटकारा दे दिया । मै अभी ऐलान कराता हूं कि इस तरह मुल्क नजर नही किया जा सकता । इस हरकत के सबब से जलाल खाँ बिहार का सुलतान नही रह गया । बिहार बगाल का न होकर आजाद मुल्क है । इस एलान के बाद ही हम फौरन जग की तैयारी करेगे । अगर बगाल का हमला हुआ तो उस हमले मे हम अपनी हिफाजत करेगे, और अगर हमला न हुआ तो, सुना ही है कि हुमायू गुजरात पर हमला करने वाला है, उसके गुजरात की लडाई मे फँसते ही हमारी फोजे बगाल की तरफ कूच करेगी । इन दिनो हमारे मकसदो की तरफ जाने के हमारे जो रास्ते बद हो गये थे, वह यकायक आज फिर खुल गये । (**प्रसन्नता से**) चलो, पडित, मेरे साथ आओ, मै अभी अभी यह ऐलान कराता हूं ।

[**शेरखाँ बिना निज़ाम की ओर देखे शीघ्रता से जाता है । ब्रह्मादित्य उसके पीछे पीछे जाता है । निजाम**

अत्यन्त निराश दृष्टि से जिस ओर ये दोनों गये हैं उस ओर देखता है। उसकी आँखों में आँसू छलछला आते हैं।]

लघु—यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ में शेरखाँ के मकान में लाड मलिका का कमरा

समय—रात्रि

[कमरा अन्य कमरों के सदृश ही है, उसी प्रकार सजा हुआ। कमरे में एक तरफ़ माणिक, पन्ने और हीरों का एक ढेर लगा हुआ है, इसी ढेर के नज़दीक मोतियों का एक ढेर; मोतियों का ढेर माणिक, पन्ने और हीरों के ढेर से बहुत बड़ा है। मोती के ढेर के नज़दीक सोने के दो ढेर हैं। सोने का एक ढेर मोती के ढेर से भी बहुत बड़ा है और दूसरा इससे बहुत छोटा। लाड मलिका सोने के दोनों ढेरों के नज़दीक बैठी हुई, छोटे ढेर का सोना तोल तोलकर बड़े ढेर में डाल रही है, जिससे जान पड़ता है कि छोटा ढेर इसलिए छोटा हो रहा है कि उसका सोना तुल तुल कर बड़े ढेर में जा रहा है। लाड के हाथ में काँटा भी छोटा नहीं है, बल्कि उसे काँटा न कहकर तखड़ी कहना ही अधिक ठीक होगा। उसके एक पलड़े में पाँच सेर का एक बाट है। लाड मलिका पसीने में भीग गयी है, जिससे जान पड़ता है उसे इस तोल में बहुत परिश्रम हुआ है। वह गा भी रही है।]

गीत

लूट मची है लूट
जग मे, लूट मची है लूट
निर्धन को धनवान सताये, निर्बल को बलवान
यह क्या तेरी लीला है, यह कैसी तेरी शान
मची है कैसी लूट
लूट मची है लूट । जग मे

पानी मे रहकर जो मछली बुझा न पाये प्यास
वह बेचारी, दुख की मारी, क्यो ना रहे उदास
आस गई है टूट
लूट मची है लूट । जग मे

धन दौलत का जो हो लोभी प्रेम भला क्या जाने
सोने औ चाँदी का पुजारी दिल को क्या पहिचाने
किस्मत ही गयी फूट
लूट मची है लूट । जग मे

ए दाता तू मुझसे लेले अपनी सारी माया
इस माया के बदले दे दे प्रेम की ठडी छाया
दुख से जाऊं छूट
लूट मची है लूट । जग मे.

[गाना समाप्त होते होते तोल भी समाप्त हो जाती है । लाड खड़ी होकर एक लम्बी साँस पीकर धीरे धीरे साँस को

हवा को निकालती है, मानों परिश्रम से सुस्ताने का प्रयत्न कर रही हैं। ज्योंही वह हाथ की तराजू रखती है त्योंही निज़ाम का प्रवेश। निज़ाम पीछे से आकर खड़ा हो जाता है। उसकी आहट से लाड कुछ चौंक पड़ती है।]

लाड—कौन ?

निज़ाम—चोर !

लाड—**(उसकी ओर घूमकर, मुस्कराते हुए)** चोर अब क्या लेगा, जब मैं लुट चुकी।

निज़ाम—**(सामने आकर)** भाभी, यह सब क्या है ?

लाड—**(लम्बी साँस लेकर)** मेरी वह तमाम दौलत, जिसकी मुल्क में इतनी शोहरत है।

निज़ाम—मैंने तो इतने जवाहरात और सोना कभी देखे ही नहीं।

लाड—कैसे देखते, निज़ाम, किसी के पास शायद ही इतना हो। जानते हो इनकी तादाद ?

निज़ाम—बहुत है, देख रहा हूं।

लाड—मैं भी, अब तक बहुत है, इतना ही जानती थी, लेकिन आज मुझे ठीक तादाद मालूम हो गयी। **(माणिक, पन्ने और हीरों के ढेरों की ओर संकेत कर)** यह जवाहर डेढ़ सौ है, लेकिन इनकी कीमत करोड़ो होगी। **(मोती के ढेर की ओर संकेत कर)** मोती सात मन है। **(सोने के ढेर की ओर संकेत कर)** सोना है डेढ़ सौ मन !

निज़ाम—ओफ् । ओह ! **(कुछ रुककर)** आज यह सब सामान इकट्ठा क्यों किया गया है, तोला क्यों गया है ?

लाड—तुम्हारे भाई साहब बंगाल पर हमला करने के लिए कल ही कूच कर रहे हैं न ?

निज़ाम—हाँ, कल ही ।

लाड—जाने के वक्त यह सब सामान उनकी नज़र करूँगी । **(लम्बी साँस लेकर)** तुमने कहा था न कि उन्होंने मेरी दौलत के लिए मुझसे शादी की है ?

निज़ाम—**(भर्राये हुए स्वर में)** हाँ . मो तो मोनो.. ।

लाड—**(बीच ही में)** चुनार के सूबेदार ने मेरी दौलत के लिए ही मुझसे शादी की थी ।

निज़ाम—लेकिन लेकिन, भाभी, ताज खाँ और भाई जान का क्या मिलान हो सकता है ? ताज खाँ इस दौलत से ज़ाती फायदे उठाना चाहते थे, भाई जान के लिए 'ज़ाती' ऐसी कोई चीज रह ही नही गयी है, वह तो सब कुछ मुल्क व रिआया

लाड—**(बीच ही मे)** ठीक है, इसीलिए तो पुराने सूबेदार को मैं खुद इसका कोई जुज तक न दे सकी और तुम्हारे भाई साहब को बिना एक जवाहर, एक मोती और एक रत्ती सोना भी अपने पास रखे, सब का सब दे रही हूं । **(कुछ रुककर एक लम्बी साँस लेकर)** और और भी कुछ ऐसी वजूहात है, जिनसे अब मै इस दौलत को एक लमहा भी अपने पास नही रखना चाहती ।

निज़ाम—और भी वजूहात है ?

लाड—(लम्बी साँस लेकर) हाँ, निज़ाम, मैं नही चाहती कि दौलत की वजह से अब मैं फिर जबरदस्ती किसी की बीबी बनायी जाऊँ। **(कुछ रुककर, थोड़ा सा सोना हाथ में उठाकर, उसे उछालते हुए)** यह वजनी भी बहुत होता है। तुम ...तुम. ..नही जानते निज़ाम कि इस वजन को ढोते–ढोते मेरा दिल कितना घबरा गया है, तुम्हे न देखती तो शायद टूट ही जाता, पर ठीक. हाँ, ऐन मौके पर तुम फिर नजर पड गये। .....चुनार के पुराने सूबेदार को मेरा दिल नही, **(सोने को ढेर में डाल, रत्नों को हाथ में ले उछालते हुए)** यह ककर, पत्थर, **(रत्नों को ढेर मे डाल, फिर सोना उठाते हुए)** पत्थरो की यह रूह चाहिए थी। उसे तो न मिल सकी, तुम्हारे भाई जान को भी इन्ही बेजान चीजो की जरूरत थी, खुद के लिए न सही, मुल्क के लिए सही, उन्हे देकर. इस वजन के साथ ही शादी के वजन से भी छुटकारा पाकर क्योकि इसी..... इसीलिए तो उन्होने शादी की थी न, हलकी हो जाना चाहती हूँ। **(सोने को सोने के ढेर में डालती है।)**

निज़ाम—हलकी होकर क्या हज करने जाओगी, भाभी

लाड—(हँसकर) तुम बडे शरीर हो।

निज़ाम—देखो, भाभी, मै मजाक नही कर रहा हू, अगर हज करने जाओ तो मुझे भी साथ ले चलना।

लाड—तुम तुम तो अब हर जगह साथ चलोगे ही। तुम साथ न हुए तो हज क्या बहिश्त मे भी मुझे राहत नहीं मिल सकती।

[निज़ाम का हाथ अपने हाथ में लेकर प्रेम से दबाती है।]

[निज़ाम कुछ नहीं कहता, न हाथ छुड़ाता है। उसका मुख झुक जाता है। लाड उसकी ओर देखती रहती है। कुछ देर निस्तब्धता।]

निज़ाम--(एक बार सिर उठाकर लाड की ओर देख, फिर सिर नीचा करते हुए) भाभी !

लाड--हूँ ! (ओंठों पर स्थिर मुस्कराहट।)

निज़ाम--(कुछ अनमना सा होकर, हाथ छुड़ाने का उपक्रम करते हुए, पर लाड हाथ वैसे ही दबाये रहती है।) मेरी समझ मे एक बात नही आती ।

लाड--क्या ?

निज़ाम--(बात आगे बढ़ने के सिलसिले में निज़ाम का हाथ छूट जाता है।) उस दिन की ही बात ले लीजिए। आप बीमार थी मैंने भाभी भाभी पुकारा आपकी मैना, 'बानू' पुकार उठी। न जाने मेरे मुँह से भी कैसे 'बानू' निकल गया, आह !

लाड--फिर ?

निज़ाम--फिर ?.....फिर क्या हुआ, आप जानती है। हमे इतने नज़दीक नही आना चाहिए था।

लाड--(मुस्कराते हुए) पर अब तो नज़दीक पहुँच ही गये है ।

निज़ाम--(दुःख से) मै उसी वक्त सब कुछ कहने

और माफी माँगने के लिए भाई साहब के पास गया था, पर उन्हे फुर्सत ही न थी, उन्होने मेरी बात भी न सुनी; बाद मे मेरी भी हिम्मत न पडी, बुज़दिल ही तो ठहरा।

लाड---(उदास होकर) नही, नही, निज़ाम, ऐसा नही कहते। दिल को इतना छोटा न बनाओ। माना कि उस दिन हमारे दिल बेकाबू हो गये थे, पर गुनाहगार हम न थे। कौन सी गुस्ताखी की थी हमने ? हम इन्सान हैं, हमारे पास इन्सान के दिल है, जो खुदा की सबसे बेहतरीन नियामत है। खुदा की निआमत हमारी अपनी चीज़ है। ... दिल हसता है, दिल रोता है, और दिल मुहब्बत करता है। निज़ाम, जो मुहब्बत दिल से होती है, वह पाक मुहब्बत है **(कुछ रुककर दृढ़ता से)** हमारी मुहब्बत पाक है, यकीन करो, निज़ाम, हमारी मुहब्बत पाक है।

निज़ाम---(मानो अपने आप से कह रहा हो) हमारी मुहब्बत पाक है ! **(कुछ रुककर रुँधे हुए गले से)** भाभी !

लाड---भाभी ?. निजाम, तुम मुझे भाभी कहकर ही बुलाते हो, पर जानते हो, **(गला भारी हो जाता है आँसू छलछला आते हैं)** जब तुम भाभी कहते हो, मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम मुझे बानू ही कह रहे हो बानू बानू ... बदनसीब बानू!

निज़ाम---(मानो फिर अपने आप से कह रहा हो) बानू !. .भाभी बानू ....भाभी !.. .**(हाथ सिर पर रखकर)** या खुदा ! **(कुछ रुककर, लाड के निकट जा, अपने दोनों हाथ उसके दोनों कन्धों पर रख, लाड की ओर ध्यान से देखते हुए, जो**

उसकी तरफ़ एकटक मुग्ध सी देख रही है।) कुछ समझ मे नही आता ! (कुछ रुककर लाड के कन्धों को छोड़, सिर घुमाते हुए, जो अगले वाक्य के साथ साथ होता है) हम गिर रहे है ! .....भाभी ! हमारी मुहब्बत पाक नही ! ....हम जब तक अपने दिलो पर पूरा काबू न कर ले, हमे मिलना जुलना, सुना, मिलना जुलना ही बन्द कर देना चाहिए । (शीघ्रता से प्रस्थान ।)

लाड—(निजाम के पीछे पीछे जाते हुए) निज़ाम ! . . निज़ाम ! .....सुनो .. ..सुनो तो .

लघु-यवनिका

पाँचवा दृश्य

स्थान—रोहतास गढ के किले मे शेरखाँ का कमरा

समय—दोपहर

[कमरा उस समय के अन्य कमरों के सदृश ही है । शेरखाँ और ब्रह्मादित्य बैठे हुए बातें कर रहे है। शेरखाँ हुक्का पी रहा है ।]

ब्रह्मादित्य—आपकी असाधारण प्रतिभा, उसमे शौर्य, साहस, धैर्य और त्याग के विलक्षण पुट, मै आजकल जिस प्रकार देख रहा हूँ, उस प्रकार इसके पूर्व कभी भी देखने को नही मिला ।

शेरखाँ—ऐसा-ऐसा !

ब्रह्मादित्य--जी हाँ,गुजरात विजय कर हुमायूँ बिहार की ओर रवाना हुआ है, यह सुनते ही बगाल विजय के बडे भारी लोभ का सवरण कर, बगाल विजय का कार्य अधूरा ही छोड, आप तत्काल बिहार लौट आये। हुमायूँ बिहार के कुछ हिस्से को लेकर बंगाल पहुँचा। आपने छल, बल किसी प्रकार रोहतास गढ को ले, स्त्रियो आदि को ऐसे सुरक्षित स्थान मे रख, हुमायूँ के बगाल रहते हुए कन्नौज तक उत्तर भारत के अनेक स्थानो को जीता और ज्योही खबर मिली कि हुमायूँ बगाल से लौट रहा है, त्योही उत्तर भारत के इन जीते हुए स्थानों की परवाह न कर आप बिहार के दक्षिण मे किसी सुरक्षित स्थान मे पहुँच, वहाँ अपनी सेना का सगठन करना चाहते है। प्रतिभा का और कोई प्रमाण चाहिए ?

शेरखाँ--लेकिन यह सब तो जरूरत मुझसे करा रही है।

ब्रह्मादित्य--पर आप उलटी बाते भी कर सकते थे। पहले हुमायूँ के माँगने पर आप अकेला चुनार न लौटा सके थे। असमय ही उससे लड पडे थे, और अब, आपको अपने उद्देश्य के सामने न बगाल की चिन्ता है, न जीते हुए उत्तर भारत के स्थानो की।

शेरखाँ--पंडित, चुनार मे बेवकूफी से लडकर, और उसे खोकर मैंने जो सीखा है, वह मै जिन्दगी भर नहीं भूल सकता। **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए)** गुजरात का जंग इतनी जल्द खतम हो जायगा, यह मै नहीं समझता था, नही तो बंगाल पर इस वक्त हमला ही न करता।

ब्रह्मादित्य--मै भी इतनी दूर तक न देख सका, नही तो आपको यह आक्रमण न करने देता ।

शेरखाँ--गुजरात की जीत के सबब, हुमायूँ की फौज के हौसले बहुत बढ गये थे । (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) रूमी खाँ की मातहती मे उसके तोपखाने ने गुजरात मे जैसा काम किया था, उसने इस हौसले को और बढा दिया था ।

ब्रह्मादित्य--फिर चटगाँव का पुर्तगाली जहाजी बेडा भी हमारे विरुद्ध था ।

शेरखाँ--ठीक, ऐसी हालत मे हुमायूँ के बिहार की तरफ कूच करने पर हमारा बगाल छोडकर न हटना महज बेवकूफी ही होती ।

ब्रह्मादित्य--बिलकुल ।

शेरखाँ--बाबर का हुमायूँ पर कितना असर है, इसका पता इसी से लगता है कि इस मुल्क मे जिस बरसात के मौसम की बाबर ने तारीफ की है, और जो बगाल मे शायद सबसे अच्छी होती है, वह मौसम हुमायूँ ने बगाल मे ही गुजारना चाहा । (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) बादशाह सलामत बगाल मे रम गये है, यह पक्की खबर पाने के बाद हमने शुमाली हिन्द की कन्नौज तक की जगहो को फतह कर कोई गलती नही की ।

ब्रह्मादित्य--बल्कि इसने हमारी धाक जमा दी ।

शेरखाँ--और अब जब हुमायूँ बगाल से लौट रहा है, तब भी हमारा उसके रास्ते से हट जाना मुनासिब है, क्योंकि

अभी भी मुकाबले मे हम उससे लड सकते है यह मै नही मानता।

ब्रह्मादित्य—ठीक, इन जीतो से हमारी जो धाक जम गयी है उसे खो देने के स्थान पर जीते हुए परगनो को छोड देना कही अच्छा है।

शेरखाँ—(**हुक्का गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए**) पडित, ठीक वक्त पर ही मै हुमायूँ का मुकाबला करूंगा, ठीक वक्त के एक दिन भी पहले नही।

ब्रह्मादित्य—तभी तो मै आपकी प्रतिभा की सराहना कर रहा था। मै आपसे सर्वथा सहमत हूँ, स्त्रियो आदि को यही छोड भावी सगठन के लिए हमे बिहार के दक्षिण मे ही हट जाना चाहिए।

शेरखाँ—और वहाँ तैयारी करते हुए ठीक मौके का इन्तज़ार करना चाहिए। लाड मलिका के डेढ़ सौ जवाहर, सात मन मोती और डेढ सौ मन सोने की वजह से हमे अब पैसे की कमी तो हो नही सकती। (**हुक्का गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए**) धीरे-धीरे फौज भी हमारे पास काफी इकट्ठी होती जा रही है।

ब्रह्मादित्य—और हिन्दू तथा मुसलमान दोनो ही सेना में भरती भी हो रहे है।

[कुछ देर दोनों चुप रहते हैं। शेरखाँ हुक्का गुड़गुड़ाता रहता है।]

शेरखाँ—(**गम्भीरता से सोचते हुए**) एक बात जानते हो, पडित ?

ब्रह्मादित्य—क्या ?

शेरखाँ—बाबर की नौकरी करके मैं तो उसकी फौज मे बलवा न करा सका, लेकिन हुमायूँ की नौकरी कर तुम उसकी फौज मे बलवा करा सकोगे, इसकी मुझे उम्मीद है।

ब्रह्मादित्य—(**सोचते हुए, मस्कराकर**) आप ऐसा समझते है ?

शेरखाँ—(**उसी प्रकार विचारते हुए**) हाँ, और मै समझता हूँ कि फिर मोका आ गया है, जब हमे अपने कामो का बटवारा कर लेना चाहिए।

ब्रह्मादित्य—(**विचारते हुए**) तैयार हूं।

शेरखाँ—(**हुक्का गुड़गुड़ाकर, धुआँ छोड़ते हुए, रुककर**) पडित,.. पडित, हालाँकि हम बगाल फतह नही कर सके, हालाँकि शुमाली हिन्द की जीती हुई जगहो को भी हमे छोडना पड रहा है, लेकिन इन दिनो हमने जो कुछ भी किया है, और मामलात जिस तरह बढ रहे है, उन्हे देखते हुए अब मुझे यकीन होता है कि हम इन मुग़लो को मुल्क के बाहर निकाल सकेंगे।

ब्रह्मादित्य—और इसके पश्चात् क्या होगा, जानते है ?

शेरखाँ—क्या ?

ब्रह्मादित्य—आप इस देश के बादशाह होगे।

शेरखाँ—(**उठते और मुस्कराते हुए**) अब तुमने फिर फिजूल की बाते शुरू की। (**कुछ रुककर**) पडित, मै इस मुल्क का

बादशाह नहीं, ख़ादिम, सुना, सच्चा ख़ादिम ही रहना चाहता हूँ ।

लघु–यवनिका

छठवाँ दृश्य

स्थान––रोहतासगढ के अन्दर का आँगन

समय––रात्रि

[सारा दृश्य पूर्ण चन्द्र के प्रकाश से आलोकित है । आँगन के तीन ओर दालानों का बाहरी भाग और उनकी इमारतों के बाहरी हिस्से दृष्टिगोचर हो रहे हैं। दालानों के खम्भे और मेहराब चमेली की बेलों से ढके हुए हैं। हरी हरी वल्लियों पर सफ़ेद चमेली के फूल खिले हुए हैं, जो नीले आकाश में जगह-जगह दिखायी पड़ते हुए तारों से स्पर्धा सी करते हुए जान पड़ते हैं। आँगन में कुछ क्यारियों के कारण आँगन नज़र बाग सा दिखायी देता है । क्यारियों के पौधे भी फूलों से लदे हुए हैं। नज़रबाग़ के एक ओर से क्यारियों के किनारे-किनारे निज़ाम आता है । दूसरी ओर दालान के एक दरवाज़े से काला बुरक़ा पहने हुए एक मानव आकृति आती हुई दिखायी पड़ती है । यह उस ओर जाती है जहाँ से निज़ाम आया था। निज़ाम उसे देखता है पर बुरक़े के कारण पहचान नहीं पाता। निज़ाम मानव आकृति का पीछा करने के लिए उसी ओर घूमता है।]

निज़ाम--(निकट पहुँच कर ज़ोर से) कौन ?

[वह आकृति ठिठककर रुकती है। फिर भागने का सा उपक्रम करती है। निज़ाम दौड़कर उसे पकड़ लेता है।]

निज़ाम--(डाँटकर) कौन हो तुम ?

[आकृति अपने को छुड़ाने का उपक्रम करते हुए कन्धे हिलाती है। निज़ाम जबरदस्ती उसका मुख अपनी ओर कर बुरक़ा हटा देता है। लाड को देखकर निज़ाम स्तम्भित सा रह जाता है।]

निज़ाम--(कुछ देर पश्चात, विस्मय भरे स्वर में) आप ! आप इतनी रात गये कहाँ जा रही थी ?

लाड--और तुम ?

[दोनों एक दूसरे को एकटक देखने के पश्चात् खिल-खिलाकर हँस पड़ते है। निज़ाम लाड का हाथ पकड़कर चबूतरे की ओर ले जाता है। दोनों चबूतरे पर बैठ जाते है।]

निज़ाम--(प्रेम भरे स्वर में) बानू !

लाड--(मुस्कराते हुए) निज़ाम, तुम तो एक के बाद एक अपने सारे अहद तोड रहे हो। न मिलने का अहद न जाने कब का तोड डाला। आज पहले न छूने का अहद छूकर तोड डाला। और अब बानू कह रहे हो, क्या खूब !

निज़ाम--मेरा हर अहद टूट जाता है, भाभी, लेकिन इसमें मेरी ख़ता नही ।

लाड--तो किसकी ख़ता है ?

निज़ाम––तुम्हारी, भाभी की नकाब में छुपी हुई बानू, तुम्हारी।

लाड––हूँ ! तो कुसूर भाभी की नकाब में छुपी हुई बानू का है, तुम्हारा नही ?

निज़ाम––बानू, मैंने तो जिन्दगी मे कुसूर एक ही मर्तबा किया था और उसकी सज़ा भी मुझे मिल चुकी है। याद है आगरे का वह दिन, जिस दिन मेरी रग भरी प्याली ने आपके रगीन दामन को छुआ था और और आपकी सहेली ने अहलकार बनकर मुझे सज़ा दी थी . .

लाड––(बीच ही में) तो मैं आज कुसूरवार हूँ, दीजिए सजा अहलकार साहब।

निज़ाम––खता बडी है, लिहाजा सजा भी बडी होना चाहिए। **(बनावटी मुद्रा में और कुछ ऊँचे स्वर में)** लाड बानू, तुमने दूसरे का अहद तोडकर उसका दिल तोडा है उसका दिल तडप रहा है, तुम्हे एक गाना गाने की सज़ा दी जाती है।

लाड––(उठकर, बड़े अदब से तसलीम करते हुए) जो हुक्म।

[एक फूल के पौधे की ओर चलते हुए लाड गाती है। उसके पीछे-पीछे जाकर निज़ाम दोनों हाथ प्रम से उसकी बाहुओं पर रखता है। गाना बढ़ता है।]

गीत

लाड—लाख हो बहते बीच मे धारे
दोनो एक दरिया के किनारे
तुम हो हमारे हम है तुम्हारे
दुख अपना दिल ही मे कहेगे
जो भी पडे हंस-हंस के सहेगे
जी लेगे यादो के सहारे
तुम हो हमारे हम है तुम्हारे
निज़ाम—हाथ न आया फूल तो क्या गम
लाड—गुल की खुशबू गुल से नही कम
निज़ाम—पाक मुहब्बत पाक नजारे
दोनों—तुम हो हमारे हम है तुम्हारे
दिल की मुहब्बत लब पे न आये
देखो कोई उंगली न उठाये
दिल ही दिल मे दिल यह पुकारे
तुम हो हमारे हम है तुम्हारे

[इनके गाते हुए एक ओर कुछ खटका होता है। निज़ाम चौंक कर सहम सा जाता है। उसके हाथ लाड की बाहुओं को छोड़कर अलग हो जाते है। सामने से बिल्ली निकलती है। लाड गाना बन्दकर हँस पड़ती है।]

लाड—कितना बचपन है तुममे, निजाम? नज़र बाग में बिल्ली वगैरह के सिवा और कौन आ सकता है?

निज़ाम—(**सिर नीचा कर, फिर कुछ रुककर, सिर उठाते हुए गम्भीरता से**) भाभी, यह बचपन नही है !

लाड—तब क्या है ?

निज़ाम—(**लम्बी साँस लेकर**) अगर जरा सी आवाज मुझे इस तरह डरा सकती है, तो फिर मै वही बात कहूँगा—हमारी मुहब्बत पाक नही, हम गिर रहे है ।

लाड—(**कुछ क्रोध से**) बार-बार घूम फिर कर तुम वही सवाल उठाते हो । आज इसका आखरी फैसला ही कर लिया जाय कि हमारी मुहब्बत कैसी है ?

[**लाड निजाम का हाथ पकड़कर उसे चबूतरे पर बिठाती है और फिर खुद बैठती है ।**]

लाड—पाक और नापाक मुहब्बत मे तुम्हारा क्या मतलब है, निजाम ? (**कुछ रुककर**) तुमने पहले पहल मुझे आगरे मे ही देखा था न ?

निज़ाम—(**भर्राये हुए स्वर में**) हाँ, आगरे मे ।

लाड—और मुझे देखते ही तुम्हारे दिल मे मेरे लिए एक अज़ीब किस्म की हलचल पैदा हुई, जिसे तुम मुहब्बत कहते हो ?

निज़ाम—मेरी उस मुहब्बत का सुबूत तो आपकी वह तस्वीर है । बिना सच्ची मुहब्बत के बडे से बडा मुसव्विर भी वैसी तस्वीर नही बना सकता ।

लाड—उस वक्त की उस मुहब्बत को तुम पाक समझते

हा या नापाक ?

निज़ाम-- (गम्भीरता से विचारते हुए) उसे तो मै नापाक नही समझता ।

लाड--मैने भी तुम्हे पहले पहल आगरे के उस बाग मे देखा । उसके पहले मुहब्बत किसे कहते है, मै जानती ही न थी । तुम्हे देखते ही एक अजीब किस्म की हलचल मेरे दिल मे मच गयी । हम दोनो ने जब पहली मर्तबा एक दूसरे को देखा था उसे कितना वक्त गुजर गया । तब से बस मेरे लिए तुम हो और तुम्हारे लिए मै । इसके सिवा हम दोनो के लिए दुनिया मे सब कुछ बेकार है ।

[निज़ाम कुछ न कह, थोड़ा सा मुँह खोल लाड की ओर देखता रहता है । लाड उसकी ओर देखती है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

लाड--तुमने तो मेरे देखने के बाद किसी से शादी ही नही की । मेरी दो शादियाँ बिना किसी मुहब्बत के ज़बरदस्ती हुईं । चूंकि मेरी इस तरह की दो शादियाँ हो गयी सिर्फ इसलिए हम लोगो की मुहब्बत नापाक कैसे समझी जा सकती है ?

[निज़ाम फिर भी कुछ न कहकर उसी प्रकार की मुद्रा से लाड की ओर देखता है और लाड निज़ाम की तरफ। कुछ देर ख़ामोशी ।

लाड--सच्ची मुहब्बत के बाद एक दूसरे से मिलने, एक दूसरे से बात करने की ख्वाहिश तो कुदरती चीज़ है । **(आलिंगन के लिए दोनों बाहें फैलाकर)** और यह सब चीजे गिराती नही,

एक दूसरे को करीब लाती है। **(बाँहों को सिकोड़कर)** हमारे दिल एक दूसरे को चाहते हैं, लेकिन इनके जरिये तो हमारे जिस्म ही हैं। **(कुछ रुककर)** निजाम, जिस मुहब्बत को तुम पाक कहते हो, वह वह शायद हिन्दुओ के निराकार की मुहब्बत है, और उसमे मिलकर जिसे वह मुक्त होना कहते हैं, वह हो सकती है, लेकिन शक्ल वालो की मुहब्बत मे दिलो का मिलना तो तब तक अधूरा ही रहता है, जब तक जिस्म भी न मिल जायं। वगैर मुहब्बत के भी अगर शौहर और बीबी के जिस्मो का मिलना नापाक नही, वह गिराने वाली चीज नही, तो जिनमे सच्ची मुहब्बत है, और उस मुहब्बत की वजह से जो एक दूसरे के नजदीक आने के लिए एक दूसरे से मिलना चाहते हैं, उनकी यह बाते नापाक और गिराने वाली कैसे कही जा सकती है ?

[अब निज़ाम लाड को गले लगाने के लिए हाथ बढ़ाता है।]

नेपथ्य से रहमान का स्वर-- (ज़ोर से) छोटे मियाँ ! छोटे मियाँ कहाँ हो ? क्या कर रहे हो ?

निज़ाम--(चौंककर, हाथ सिकोड़ते हुए, ज़ोर से) कौन ?

नेपथ्य से रहमान का स्वर--(ज़ोर से) हजरते आला का शाट्या गाँव से एक सवार आया है।

[क्रोध से तमतमाती लाड दालान में जाती है। दालान के दूसरी ओर निज़ाम जाकर दरवाज़ा खोलता है।'निज़ाम लम्बी साँस लेकर दुखित मुद्रा से नज़रबाग़ में लौटकर फूलों के पौधों को

देखते हुए इधर उधर घूमता है। कुछ देर में जो दरवाज़ा निज़ाम ने खोला था, उससे रहमान के साथ वर्दी पहने हुए एक सिपाही आता है। सिपाही निजाम के पास आ, सलाम कर उसे एक चिट्ठी देता है।]

निज़ाम--(चिट्ठी लेते हुए) भाई साहब गगा किनारे शाट्या गॉव मे है ?

सैनिक--जी हॉ, और गगा के किनारे ही चौसा उर्फ झूसा गॉव मे बादशाह हुमायूँ मय अपने लश्कर के है। हमारे और मुगल लश्कर के बीच मे सिर्फ थोरा नद्दी नाम का नाला है।

निज़ाम--तो किसी दिन भी जग हो सकता है ?

सैनिक--किसी भी दिन, हुज़ूर, हजरते आला ने सब बातें सिलसिले वार सरकार के खत मे लिखी है।

निज़ाम--तुम अच्छी तरह ठहरो, मैं खत अभी देखता हूं।

[सैनिक जिस दरवाज़े से वह आया था उसी ओर जाता है। निज़ाम जिस ओर लाड गयो उस ओर जाता है।]

लघु-यवनिका

सातवाँ दृश्य

स्थान--चौसा गॉव मे हुमायूँ के शिविर मे हुमायूँ का डे

समय--उष काल

[तीन तरफ़ डेरे के भीतर कपड़े की क़नातें दिखायी पड़ती हैं, जो बहुमूल्य रेशमी छपे हुए वस्त्र की हैं। दरवाज़ों पर भी रेशमी पर्दे पड़े हैं। ज़मीन पर रंग बिरंगे क़ालीन हैं। सोने के पाये के एक पलंग पर हुमायूँ शयनमें मग्न हैं। पलंग के निकट ही सोने के पायों की चौकियों पर पानदान आदि कुछ वस्तुएँ रखी हैं। डेरे में और भी अनेक प्रकार की वेश कीमती सजावट है। शमादान जल रहा है, जिसका प्रकाश हुमायूँ के मुख पर पड़ रहा है। हुमायूँ का वर्णन निरर्थक है, क्योंकि सभी उसके चित्रो को देख चुके हैं। नेपथ्य से गान की ध्वनि आ रही है।]

गीत

पाँव पसारे सोने वाले दुश्मन है बेदार
दुश्मन है बेदार गाफिल, दुश्मन है बेदार
जीवन दीप की जोत हवा है
नीद और मौत के बीच मे क्या है
सासो की दीवार है गाफ़िल, साँसो की दीवार
दुश्मन है बेदार गाफिल, दुश्मन है बेदार
सोने वाले लेखबरो पर, जागरहने वाले अक्सर
कर जाते है वार रेगाफ़िल, कर जाते है वार
दुश्मन है बेदार, गाफिल दुश्मन है बेदार
उठ अपनी शक्ती को जगाले, कोई तुझ पर हाथ न डाले
टोली के सरदार रे गाफिल, टोली के सरदार
दुश्मन है बेदार, गाफिल, दुश्मन है बेदार

[नेपथ्य में एकाएक कोलाहल होता है। धीरे-धीरे कोलाहल बढ़ता है। लड़ाई के ढोल बजने लगते हैं। गान की ध्वनि इस कोलाहल में डूब जाती है। कुछ ही देर में डेरे के पर्दे को उठाकर हुमायूं का सिपहसालार सैनिक वेश में आता है।]

सिपहसालार— (**हुमायूं के पलंग के निकट जाकर जोर से**) जहाँपनाह ! जहाँपनाह ! (**और जोर से**) जहाँपनाह ! जहाँपनाह !

[हुमायूं हड़बड़ा कर उठता है। नेपथ्य का कोलाहल अब जल्दी जल्दी बढ़ता है।]

हुमायूं— (**घबराकर**) क्या, क्या हुआ, सिपहसालार ?

सिपहसालार—हुजूर, शेरखाँ ने एकाएक हम पर हमला कर दिया है।

हुमायूं— (**घबरा कर, खड़े होते हुए**) हमला ? . . धोखा ..दगा. फरेब ! (**कुछ सँभलकर**) उसकी फौज तो महाथा चीरो के बलवाइयो को दबाने के लिए जा रही थी न ? हर रोज जा रही थी।

सिपहसालार—वह सब फरेब था, जहाँपनाह, बडे से बडा फरेब। थोडी थोडी फौज को कई दिनो से उस तरफ भेज और इस तरह की खबरे उडवाकर, वह हमें धोखे मे रख रहा था।

हुमायूं— (**और अधिक घबड़ाकर**) तो ..तो हमारी फ़ौज की तैयारी .

सिपहसालार—मैं हुक्म तो दे आया हूं, तैयारी के ढोल

भी पिट रहे हैं, मगर .. मगर .

हुमायूं--(अत्यन्त क्रोध से) अगर मगर, क्या, हमें लडना है... बहादुरी.... ज़्यादा से ज़्यादा दिलेरी के साथ लडना .. ...

[हुमायूं शीघ्रता से डेरे के बाहर निकलता है। सिपहसालार भी पीछे पीछे जाता है। अब बाहर का कोलाहल बहुत बढ़ गया है।]

यवनिका

अंक पाँचवाँ

पहला दृश्य

स्थान--बिहार शरीफ में सूबेदार के मकान का बैठक-खाना

समय--दोपहर

[बैठकखाने की बनावट सहसराँ की बैठक के सदृश ही है, परन्तु यह बैठक उससे बहुत बड़ी तथा बहुत अधिक सजी हुई है। बैठक हिन्दू तथा पठान अमीर उमरा और सरदारों से भरी हुई है। इन्ही में ईसा खाँ शेरवानी तथा ब्रह्मादित्य भी है। ईसा खाँ शेरवानी की अवस्था लगभग चालीस वर्ष की है। वह गौर वर्ण का ऊँचा-पूरा, मोटा ताज़ा आदमी है। सिर पर पट्टे तथा मुख पर बड़ी बड़ी मूछें तथा दाढ़ी है। अंगरखा तथा पायजामा पहने है। सिर पर पगड़ो लगाये है। वह खड़ा हुआ बोल रहा है। शेष सब व्यक्ति बैठे हुए है।]

ईसाखाँ--हाँ, मै मे तकबीज करता हूँ। कि शेरखाँ साहब को तमाम पठान सल्तनत का बादशाह बनाया जाय। उनके वालिद जनाब हसन सूर मरहूम मेरे वालिद जनाब उमर खाँ साहब मरहूम की नौकरी मे थे, लेकिन इससे क्या ?...इससे यह नही

कहा जा सकता कि पठान सल्तनत की बादशाहत के काबिल मैं हूँ। जिन मुगलो के सामने सुल्तान इब्राहीम लोदी, राणा साँगा, सुल्तान महमूद लोदी और बहादुर शाह के मानिन्द बादशाह और राजा नही ठहर सके, उनके चौसा मे दाँत खट्टे किये हमारे जनाब शेरखाँ साहब ने। एक भिश्ती ने हुमायूँ की जान बचा दी, नही तो हुमायूँ नाम की कोई चीज ही दुनिया मे बाकी नही रहती। पठानो मे इस वक्त सुल्तान महमूद लोदी और सुल्तान बहादुर शाह से ज्यादा ताकतवर और कोई न था। दोनो शाही खानदानो के थे, दोनो के पास पुश्तैनी सलतनते थी, और फौज, लेकिन मुगलो के सामने कोई न ठहर सका। और हमारे सूबेदार जलाल खाँ साहब ने तो बिहार को बगाल की नजर करके लुटिया ही डुबो दी थी। पठानो की ऐसी गयी गुजरी हालतो मे एक मामूली जागीरदार के यहाँ पैदा होकर, बिना किसी पुश्तैनी खिताब, सल्तनत और फौज के शेरखाँ साहब ने जो कुछ किया, वह तवारीख मे एक नया सबक सिखाता है। लेकिन आगरा लौटकर बादशाह हुमायूँ अभी तैयारी करके हम पर हमला करेगे। अगर हम इस हमले का सामना कर, बाहर से आये हुए इन मुगलो को मुल्क से निकाल कर, इस मुल्क मे फिर से इस मुल्क मे ही रहने वालो की सल्तनत कायम करना चाहते है तो यह बिना काबिल और बहादुर बादशाह के मुमकिन नही। शेरखाँ साहब से ज्यादा क़ाबिल और बहादुर शख्स इस वक्त पठान कौम में नही है। हमारे सूबेदार बहार खाँ साहब मरहूम ने फरीद को, फरीद से शेरखाँ बनाया था, हम शेरखाँ को शेरखाँ से शेरशाह

ने आपको बतला ही दिया होगा ?

एक हिन्दू--हम सब आपको अपने सम्राट के रूप में देखना चाहते हैं ।

कुछ व्यक्ति--(एक साथ) हाँ, सब के सब ।

बहुत से व्यक्ति--(एक साथ) सारे हिन्दू मुसलमान !

[शेरखाँ खड़ा होता है । ईसाखाँ बैठ जाता है ।]

शेरखाँ--आप सब हिन्दू मुसलमान भाई इस वक्त मुझ पर कितने खुश हैं, इसे मैं बखूबी जानता हूँ और इसके लिए शुक्रिये के सिवा मेरे पास क्या है, जो मैं आपकी नजर करूँ ? मुझे वह दिन भी याद है जब आप मुझे मुल्क का दुश्मन और मुगलों का गुलाम मानकर मुझ पर अजहद खफा थे । लेकिन न उस नाराजी ने मेरा दिल गिराया था और न इस खुशी से मुझे नशा चढ सकता है । अपने एक छोटे से फर्ज को अदा कर मैं आपका बादशाह होने की काबलियत नहीं रखता । मैं जिन्दगी भर आपका खादिम ही रहकर आपकी खिदमत करना चाहता हूँ । **(बैठ जाता है ।)**

ईसाखाँ--**(खड़े होकर)** लेकिन बिना बादशाह के हमारा काम नहीं चल सकता ।

एक हिन्दू--बिना राजा के कहीं काम चला है ?

शेरखाँ--हिन्दोस्तान और यूनान में तो पुराने जमाने में अच्छी तरह चलता था ।

ब्रह्मादित्य--**(खड़े होकर)** सब समय एक से नहीं होते । जब विदेशी इस देश में मौजूद है, देश को गुलाम बनाने के

प्रयत्न मे बादशाह हुमायूं आगरा लौटकर फिर से युद्ध की तैयारी कर रहे है, तब एक व्यक्ति के हाथ मे सारी सत्ता रहे बिना हमारा काम नही चल सकता। न जाने कितने समय से इस देश की प्रजा को सम्राटो और बादशाहो के दर्शनो का अभ्यास हो गया है। अधिकाश सम्राटो और बादशाहो ने अपने व्यक्तिगत उत्कर्ष के लिए इन पदो को प्राप्त किया था, हुमायू ही क्या कर रहे है ? आपकी इस प्रकार की इच्छाएँ तथा अभिलाषाएँ नही है, यह हम जानते है, किन्तु आपके सिहासनासीन हुए बिना देश का उद्धार और उत्कर्ष दोनो ही सभव नही दिखते। बिना एक केन्द्र की स्थापना के शक्ति का न सग्रह हो सकता है और न ठीक तरह से सचालन।

एक हिन्दू--असम्भव है।

कुछ हिन्दू--(**एक साथ**) सर्वथा असम्भव।

एक मुसलमान--(**एक साथ**) गैर मुमकिन है।

कुछ मुसलमान--कतई गैर मुमकिन।

ईसाखाँ--(**जो अब खड़ा हुआ है**) मुल्क और रिआया के लिए आपको बादशाहत मंजूर करना है। मस्जिद मे आपके नाम का खुतबा पढे बगैर आगे का काम नही हो सकता।

ब्रह्मादित्य--(**जो अब तक खड़ा हुआ है**) और टकसाल मे आपके नाम के सिक्के ढले बिना नही रह सकते।

एक हिन्दू--इस देश के हिन्दुओ के लिए आप यह पद स्वीकार कीजिए।

कुछ व्यक्ति--(**एक साथ**) सब के लिए, सब के लिए।

ईसाख़ाँ तथा ब्रह्मादित्य खड़े-खड़े और शेष व्यक्ति बैठे–बैठे एक टक शेरख़ाँ की ओर देखते हैं। कुछ देर निस्तब्धता]

शेरख़ाँ––(**कुछ देर पश्चात् गम्भीरता से सोचने के बाद खड़े होकर**) अच्छा, देखिए, इस मामले को हम लोग बगाल की फतह के बाद सोचेगे, फिलहाल इसे मुल्तवी कर दीजिए ।

कुछ व्यक्ति––(**एक साथ**) नही, नही ।

कुछ व्यक्ति––(एक साथ) हरगिज नही, हरगिज नही।

शेरख़ाँ––(**सब को आदाब बजाते और जाते हुए**) मानिए कहना मान जाइए ।

लघु–यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान––बिहार शरीफ मे शेरख़ाँ के महल मे निज़ाम का कमरा

समय––रात्रि

[जाड़े के कारण कमरे में एक अंगीठी जल रही है। निज़ाम बैठा हुआ सितार बजाकर गा रहा है ।]

टूट गया है दिल का साज
अब बेजान है यह आवाज
आँखो ने सब खोल दिये
दिल ने छिपाये थे जो राज

काश न उसने सीखे होते
दिल लेने के यह अन्दाज़

निज़ाम--(गीत पूरा होते होते सितार का तार टूट जाता है। सितार को एक ओर पटकते हुए) तू तू भी साथ नहीं देता ! गाता हूं तो गाने अन्दर ही मे गला सा घोटने लगते है ! कलम ने मुसव्विरी छोड दी ! तस्वीरो को देखता हूं तो वह कहकहा लगाकर मजाक सा उडाती है ! खफा है सारी दुनिया !. खफा है दिल ! ...और खफा है मेरी मुहब्बत मुझसे ! **(उठकर शेरखां की तस्वीर के सामने आकर)** उस दिन. उस दिन जब आप से माफी माँगने गया, तब, ,तब भाई जान, आप. आप भी खफा हो गये, मेरी बात तक न सुनी उस दिन अगर आप मेरी बात सुन लेते तो.....तो जो कुछ उसके बाद हुआ है, वह ..वह हरगिज न हो पाता ! . मैं गिर रहा हूँ लगातार गिरता जा रहा हूँ, . नही तो कभी ऐसी बाते भी दिल मे उठ सकती थी, जैसी आजकल उठ रही है ? **(घुटने टेककर)** बगाल के इस मर्तबे के कूच के वक्त एकाएक दिल मे आया कि **(भर्राये हुए स्वर में)** . खुदा न खास्ता जग मे अगर आपको कुछ आपको कुछ जबान से वह गन्दी बात निकलना ही मुश्किल है तो. . तो ताजखाँ के बाद लाड जैसे आपकी हो गयी उसी ...उसी तरह आपके बाद मेरी . उफ ! **(कुछ रुक कर)** और - और आज जब खबर मिली कि बगाल को आपने फतह कर लिया ...वहाँ आपकी तख्त नशीनी हो गयी....अब आप अल् सुलतान-

उल आदिल शेर शाह है, तब तब दिल को कैसी-ठेस सी लगी ! .. इससे ज्यादा नीचे और मैं क्या गिर सकता ? **(आँसू बहाते हुए)** उस दिन तो मैं आपसे माफी माँगने के काबिल था, लेकिन अब तो उसके लायक भी नहीं। **(उठकर, कुछ देर रुक, आँसू पोछते हुए)** आप आप ठीक फरमाते थे मेरी मुहब्बत पाक मुहब्बत नहीं और भाभी के लिए उस उसी नापाक मुहब्बत की वजह से आपके लिए यह गन्दे निहायत गन्दे खयाल उठते है। **(फिर कुछ रुककर)** लेकिन लेकिन, भाई साहब, जब भाभी के सामने जाता हूँ भूल भूल जाता हूँ यह सब। वह वह बहस में यकीन दिला देती है कि हमारी मुहब्बत पाक है, पाक से पाक पर पर फिर यकीन कायम क्यों नहीं रहता ? जब तक भाभी सामने रहती है, यह यकीन रहता है, पर ज्योंही वह सामने से गायब हुई कि सारी पाक इमारत गिर पड़ती है और उसकी जगह गुनाह की खटक नजर आने लगती है। जिस जिस यकीन को कायम रखने के लिए किसी बाहरी सहारे की इस कदर जरूरत रहती है, वह वह यकीन कितने दिनों तक ठहरेगा ? **(कुछ रुककर)** नापाक मुहब्बत ही नहीं, यह यह तो नशा जान पड़ता है ! नशे नशे में ही इस तरह का उतार चढाव होता है और नशे को कायम रखने के लिए अब अब तो भाभी की मौजूदगी की शराब हर लमहे पर जरूरी मालूम होती है। जब तक शराब तब तक नशा, ज्योंही शराब गायब, नशे का लुत्फ खत्म ! इतना इतना ही नहीं, इस नशे की खुमारी तो ऐसा गम पैदा करती है, जिसका जिक्र लफ्जों में नहीं किया जा सकता।

(फिर कुछ रुककर) तो तो इस शराब में इतनी ताकत नहीं है कि यह गम ही न होने दे, और गम गम में इतनी कूवत नहीं कि इस शराब के नजदीक न जाने दे। **(फिर कुछ रुककर)** मुहब्बत . मुहब्बत, भाईजान, आपकी है आपकी मुल्क की मुहब्बत में इतनी ताकत है कि अपने फर्ज को छोड़कर आप सब कुछ भूल गये हैं, अरे ! अपने माँ जाये भाई, और जिसकी दौलत से आपने यह फतह हासिल की उस तक को तख्त नशीनी के मौके पर भी आपने याद न किया। करते भी क्यों ? रिआया, जिस पर आपकी मुहब्बत है , वह वहाँ मौजूद थी। **(फिर कुछ रुककर)** आपकी मुहब्बत मुहब्बत है, वह पाक है, और मेरी मेरी मुहब्बत नापाक मुहब्बत भी नहीं, वह वह तो नशा है, और कैसा कैसा नशा ? ऐसा नशा जिसके सबब से मैं आपकी मौत तक चाह सकता हूं ! **(फिर कुछ रुककर)** मैं गिर रहा हूँ, गिरने की रफ्तार दिनों दिन तेज होती जा रही है ! पूरे पूरे गिरने के बाद तो यह गिरना शायद ऐसा गिरना होगा कि उठना ही मुश्किल हो जायगा। अभी अभी भी शायद वक्त है, अभी भी अगर हट जाऊं यहाँ से ? हमेशा के लिए छोड़ दूँ यह साथ ! **(कुछ रुककर)** लेकिन जिन्दा रह सकूंगा ? **(फिर कुछ रुककर)** मर तो सकता हूं, पूरा गुनाहगार होने के पहले, पाक रहते हुए, जान तो दे सकता हूँ। **(कुछ रुककर)** मुगलों की मदद से जागीर लेने के लिए आपने जागीर को छोड़कर -नजात हासिल की थी, मुझे मुझे उससे ज्यादा जरूरत है नजात की। चाहता था जग मे आपकी

मौत !..इस गन्दी से गन्दी, नापाक से नापाक चाह के लिए तो खुद लडाई मे मर कर ही नजात हो सकती थी। अब... मुगलो से आखरी जग होगा, और इसी मे मेरी नजात। **(फिर कुछ रुककर)** तो तो आ रहा हूं भाई–जान, आपके पास आ रहा हू। **(तस्वीर का संदूकचा उठाकर)** अभी फौरन रवाना हुआ। **(एक तस्वीर उठाकर संदूकचे मे रखते हुए)** लेकिन इसे इसे क्यो साथ ले चल रहा हू ? जागीर छोडते वक्त भी आपने इसे ले चलने की इजाजत दे दी थी, पर अब अब तो मरने आ रहा हूँ। मुमकिन है यह मरने न दे वापस ही लौटा लाये। **(संदूकचे को एक ओर फेककर)** कलम से रुखसत ले ली थी, सितार ने रुखसत दे दी। **(तस्वीर को अंगीठो मे फेकते हुए)** तुम तुम से भी रुखसत **(एक एक तस्वीर को आग में फेकता है। उन्हे जलते देखकर उसके मुख पर उन्माद जैसे चिन्ह दिखने लगते है। अब वह बार बार अट्टहास करता है। लाड के आगरेवाले चित्र को हाथ में उठाकार)** बानू ! नही, नही, भाभी, अब मै तुम्हारी एक न सुनूँगा।.. तुम बानू नही हो सकती और मै भाभी से ऐसी मुहब्बत नही कर सकता ! तुम से भी रुखसत **(चित्र को अगीठी में फेकते हुए चिल्लाकर)** अलविदा, भाभी ! अलविदा, बानू ! अलविदा मेरे दिल की सच्ची मलिका ! **(कहते कहते एक ओर शीघ्रता से जाता है।)**

नेपथ्य से––निज़ाम ! आयी निजाम !

[लाड का दूसरी ओर से प्रवेश। शीघ्रता से आने

के कारण उसके सिर का पल्ला उघड़ गया है और वह कुछ अस्त-व्यस्त सी है।]

लाड—(किसी को न देखकर आश्चर्य से) किसने पुकारा मुझे ? निज़ाम ! निज़ाम की ही तो आवाज थी। **(चारों ओर देखती है। उसकी दृष्टि फटे और जलते हुए चित्र पर पड़ती** है।) निज़ाम ! निजाम ! .यह यह क्या किया तुमने ? .कहाँ कहाँ गये तुम? **(जिस दरवाज़े से निज़ाम गया है उसकी ओर बढ़ते हुए)** निज़ाम ! निजाम ! निजाम ! .क्या सचमुच चले गये तुम ? **(एक हाथ दरवाज़े पर रख चेहरा बाहर निकाल कर, जोर से)** निज़ाम ! निजाम ! **(कुछ देर निस्तब्धता)** चले गये ! आखिर चले गये तुम !

[लाड लौटकर अंगीठी के निकट जाती है और अपने आगरे वाले चित्र को देखकर कुछ स्तब्ध सी रह जाती है।]

लाड—**(कुछ देर पश्चात्)** धीरे धीरे जल रही है। इसे भी जलाकर गये हो यह यह तस्वीर जो तुम्हारी और मेरी मुहब्बत की पहिली निशानी थी, पाक से पाक मुहब्बत की पाक से पाक निशानी ! **(कुछ रुककर)** पर .पर फिर यह तेज़ी से ही क्यो न जले ?

(चिमटे को उठाकर आग इस तरह तेज़ करती है कि उस अँगीठी से ज्वाला निकलने लगती है। एकाएक यह ज्वाला एक परदे में लगती है। आग फैलने लगती है, पर वह उस ओर कोई ध्यान न देकर चुपचाप अंगीठी की ओर ही देखती है। एकाएक

अट्टहास कर) पगले ! दीवाने ! **(आग शीघ्रता से बढती है, कुछ रुककर गम्भीर हो)** तस्वीर मुहब्बत को पैदा कर सकती है, पर तस्वीर का जलना मुहब्बत को फना नही कर सकता। **(आग बहुत बढ़ जाती है, कुछ रुककर)** पागल ! दीवाने ! पागल ! **(अट्टहास कर मर्च्छित हो गिरती है।)**

[रहमान का तेजा से प्रवेश।]

रहमान--(चारों ओर की आग को देखकर चिल्लाकर) छोटे मियाँ ! छोटे मियाँ ! अरे ! अरे ! आग आग लग गयी है। **(लाड को देखकर)** है मलका भी यहाँ ! **(अत्यधिक घबराकर जोर जोर से चिल्लाते हुए)** दौडो ! दौडो ! आग ! आग ! बचाओ !

[नेपथ्य से कई मनुष्यो के दौडकर आने की आहट सुन पड़ती है। आग और बढती है।]

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान--गोडे के राजमहल मे शेरशाह का कमरा

समय--दोपहर

[कमरा यद्यपि उन दिनों के कमरों के सदृश ही बना है तथापि अब तक के सभी कमरों से बडा और कहीं अधिक सजा हुआ है। इस कमरे की दीवालों और छत की चित्रकारी बहुत बढ़िया

है। दीवालो पर कई बडे बड़े शीशे भी लगे है। दरवाजो की चौखेटों और किवाडो की लकडी मे खुदाव का काम है। दरवाजो पर ढाके की मलमल के पतले रगीन परदे पडे है। छत से लटकने वाले झाड बहुत बडे है। ज़मीन पर का कालीन भी अत्यधिक मूल्यवान है। गद्दी और तकियो का चादर तथा खोलियाँ ढाके की इतनी महीन मलमल की है कि उनके नीचे का कमखाब चादर और खालियों के रहते हुए भी खूब जगमगा रहा है। गद्दी के सामने चाँदी की चौकियो पर सोने का हुक्का, पानदान इत्यादि अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ रखी और सजी हुई है। गद्दी पर शेरशाह और उसके सामने कालीन पर ब्रह्मादित्य बैठा हुआ है। सुलतान होने पर भी न शरशाह की मुद्रा मे कोई अतर पडा है और न उसकी पोशाक मे ही। ब्रह्मादित्य भी वैसा ही है। शेरशाह हुक्का पी रहा है।]

शेरशाह—लेकिन, पडित, जो बादशाहत, दो जिगरी दोस्तो के आपसी ताल्लुकात मे भी फर्क होना चाहिए, इसके लिए मजबूर करती है, वह वह क्या कहूं मै?

ब्रह्मादित्य—जहाँपनाह, हृदयो मे अन्तर नही पडना चाहिए। बाहरी व्यवहार के यह फर्क तो पदो की प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक ही नही, अनिवार्य है।

शेरशाह—तो अकेले मे भी तुम्हारे मुझे जहाँपनाह न कहने, गद्दी पर न बैठकर ज़मीन पर बैठने मे ओहदो की इज्जत चली जायगी?

ब्रह्मादित्य—(मुस्कराते हुए) एकान्त मे भी जहाँपनाह

तो मैं इसलिए कहता हूँ कि सबके सामने जहाँपनाह कहने का अभ्यास हो जाय। गद्दी पर इसलिए नही बैठता कि कम से कम दरबान तो किसी के आने की सूचना देने, अथवा अन्य किसी कार्य के लिए आ ही सकता है। नौकरो के सामने पद प्रतिष्ठा की रक्षा जितनी आवश्यक है, उतनी अन्य किसी के सन्मुख नही।

शेरशाह—लेकिन, पडित, फरीद से शेरखाँ होने पर मुझे जितनी तकलीफ हुई उससे कही ज्यादा शेरखाँ से शेरशाह होने मे हो रही है।

ब्रह्मादित्य—देश के लिए आपने तकलीफो का सामना किया है, अब आराम के कष्ट भी भोगिए।

शेरशाह—दुनिया मे मामूली मकान से महल कही आरामदेह चीज समझी जाती है और महल के साथ जो दूसरी चीजे मिलती है, वह उससे भी ज्यादा। (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) पर. पर, पडित, खुदा जानता है कि मुझे यह महल, यहाँ का यह आराम देह सामान सबके सब, न जाने कैसे अटपटे मालूम होते है।

ब्रह्मादित्य—यही. यही तो आप की विशेषता है। मैं जानता हूँ कि बिहार शरीफ मे उस दिन हिन्दू मुसलमानो का एक मत आपका बादशाह बनाने का प्रस्ताव, तथा जनाब ईसाखाँ शेरवानी जिनके पिता के यहाँ आपके पिता नौकर रह चुके थे, उनके द्वारा किया गया प्रस्ताव, आपने दिखावे के लिए अस्वीकृत नही किया था। बगाल-विजय के पश्चात् जब फिर वही बात उठी तब भी आपने

कितनी हिचकिचाहट और कठिनाई से यह पद स्वीकार किया, यह भी मुझसे छिपा नही है। आपके हृदय को मुझसे अधिक और कौन जानता है, साथ ही आपके गुणो के कारण आपके भविष्य को भी सबसे ज्यादा मै ही जानता हूँ। चरणो पर लोटते हुए पदो को अनिच्छा, सच्चे विराग से जो ग्रहण करता है, वही उन पदो से प्राप्त अधिकार का सदुपयोग कर सकता है। यदि वह आपके सदृश प्रतिभावान हो, साथ ही दूरदर्शी, शूर, साहसी, त्यागी और धैर्यवान, तब तो पूछना ही क्या है ? बगाल क्या, वह समय समीप है जब आप समूचे हिन्दुस्तान के सिहासन पर बैठेगे। आपके सिहासनासीन होने के पश्चात् इस देश मे हिन्दू मुसलमानो का सयुक्त राज्य होगा; आर्य, अनार्य के सयुक्त राम-राज्य के समान सुख और समृद्धिशाली। मेरी पुरानी भविष्य वाणियाँ सच निकली है, यह भी सच होकर रहेगी।

शेरशाह—लेकिन, पडित, हुमायूँ बहुत बडी फौज जमा कर रहा है। सुना नही, उसके भाइयो के मदद न देने पर भी उसने काफी फौज जमा कर ली है। उसके मुकाबले मे हमारी फौज तो अभी नही के बराबर है। **(धीरे धीरे धुआँ नाक से छोड़ता है।)**

ब्रह्मादित्य—इसकी अब मुझे अधिक चिता नही है। एक तो उसके सैनिक किराये के टट्टू है, और हमारे सैनिक देशभक्त। दूसरे अब जो सेना वह इकट्ठी कर रहा है, उसमे मुगल कम और इस देश के निवासी अधिक होगे। चौसा युद्ध के

पूर्व आप की आज्ञा से मैं कुछ दिन हुमायूँ की सेना मे रहकर वहाँ की स्थिति से परिचित हो आया हूँ। हुमायूँ की इस सेना में से अधिकाश को मै भडका सकता हूँ। फिर चौसा युद्ध मे उसकी हार और आपकी जीत ने हमारी ऐसी धाक जमा दी है कि मेरा विश्वास है कि जीत फिर भी अपनी ही होगी।

[बहुमूल्य वर्दी पहने हुए दरबान का प्रवेश। वह आकर अदब से सलाम करता है।]

दरबान--जहाँपनाह, एक साहब आये है अपना नाम निजाम बताते है। कहते है--हुजूर के बिरादर है जहाँपनाह से मुलाकात चाहते है।

शेरशाह--हाँ, हाँ, फौरन फौरन उन्हे ले आओ

[दरबान का सलाम कर प्रस्थान।]

शेरशाह--पडित हम लोग तख्त नशीनी के वक्त इन लोगो को बिहार शरीफ से न बुलाकर गलती कर बैठे।

ब्रह्मादित्य--परतु युद्ध के पश्चात राजतिलक इतने शीघ्र हुआ कि इन्हे बुलाना सम्भव ही न था।

शेरशाह--तुम जानते हो, पडित, निजाम मुझे कितना चाहता है, फिर हम यह जग लाड मलिका की दौलत से ही जीत सके। **(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ नाक से छोड़ते हुए)** तख्त नशीनी कुछ वक्त के लिए मुल्तवी करना चाहिए थी। इन्हे बुलाकर, इनके आने पर ही तख्त नशीनी होनी थी।

ब्रह्मादित्य--व्यक्तिगत कारणो से देश के कार्यो को इस

प्रकार आगे नही बढाया जा सकता, जहाँपनाह ।

[दरबान के साथ निज़ाम का प्रवेश । वह बहुत दुर्बल और उद्विग्न दिखायी पड़ता है । दरबान का सलाम कर प्रस्थान । निज़ाम आगे बढ़कर सिजदा करता है । शेरशाह भी उठकर, आगे बढ़, उसे हृदय से लगाता है । निज़ाम की आँखों से आँसू निकल आते हैं । दोनों अलग अलग होते हैं । ब्रह्मादित्य भी खड़ा हो गया है । ब्रह्मादित्य और निज़ाम भी एक दूसरे का अभिवादन करते हैं । सब बैठ जाते हैं । निज़ाम भी ब्रह्मादित्य के साथ गद्दी के नीचे बैठ जाता है ।]

निज़ाम--माफ कीजियेगा, भाईजान, चुनार के मानिन्द यहाँ भी बिना बुलाये ही चला आया । वहाँ शादी की मुबारकबाद देनी थी, यहाँ तख्तनशीनी की । फिर इस दफा तो मुगलों के साथ होनेवाले जंग मे मैं भी शरीक होना चाहता हूँ । आप ने सुना होगा कि हुमायूँ फौज के साथ रवाना हो चुका है ।

शेरशाह--(**ऐसी मुद्रा से, मानो अन्तिम बात सुनकर शेष सब बातें विस्मृत हो गयी हों**) अच्छा, हुमायूँ रवाना हो गया ?

निज़ाम--जी हाँ, मैंने आज ही रास्ते मे सुना । आपके पास शाही खुफिया भी इत्तला लाते ही होंगे ।

शेरशाह--(**उठते हुए ब्रह्मादित्य से**) अच्छा, पंडित, तो हमें भी फौरन दीवाने खास मे चलकर, जंग की तमाम तैयारी के बारे मे सलाह करके एकदम रवाना होना चाहिए ।

[शेरशाह के उठते ही ब्रह्मादित्य और निज़ाम भी खड़े हो

जाते हैं, परन्तु निज़ाम का मुख और उतर जाता है।]

ब्रह्मादित्य--आप तशरीफ ले चलें, जहाँपनाह, मैं (**निज़ाम की ओर संकेत कर**) शाहजादे साहब के ठहरने आदि का प्रबन्ध कर अभी आता हूँ।

शेरशाह--(**चलते हुए**) हाँ, हाँ, तुम पहले इनके ठहरने का इन्तजाम कर दो, लेकिन बहुत जल्द आना। (**कुछ रुक कर निज़ाम की ओर घूम, जैसे कोई बात याद आ गयी हो**) हाँ, अच्छे तो हो निज़ाम? कुछ दुबले नजर आते हो।

निज़ाम--(**भर्राये हुए स्वर में**) बहुत अच्छा हूँ, जहाँपनाह, (**कुछ रुककर**) दुबला तो सफर के सबब से दिखता.

[निज़ाम के अंतिम शब्द के पूरे होने के पहले ही शेरशाह का प्रस्थान। निज़ाम के मुख से एक दीर्घ निश्वास निकल जाती है। ब्रह्मादित्य उसकी ओर देखता है।]

लघु-यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान-- बिहार शरीफ में शेरशाह के मकान में लाड मलिका के कमरे का बरामदा

समय--सध्या

[यह बरामदा करीब करीब वैसा ही है जैसा चुनार का था;

अन्तर है दीवार के रंग और खम्भों तथा दीवार की बनावट में बरामदे के इस ओर लाड मलिका घुटने टेके हुए, आँखे बन्द किये हैं। उस ओर नसीम के पिंजरे का कुछ भाग दिखायी देता है, परन्तु पूरा पिजरा नहीं दिखता और नसीम भी नही।]

लाड—(**कुछ देर बाद दोनो हाथ जोड़कर आगे फैलाकर, सामने की ओर देखते हुए**) ए खुदा ! उन्हें जीत बख्शना ! . आज ईद के दिन यही मेरी इल्तजा है। .वह मुल्क के लिए अपनी जीत चाहते है, मैं निजाम के लिए उनकी फतह चाहती हू । (**कुछ रुककर**) और .. और यह भी मिन्नत करती हूँ कि कन्नौज का यह जग मुगलो से आखरी जग हो, निजाम का बाल बाँका न हो और वह जल्द से जल्द मेरे पास वापस लौट आवे। (**कुछ देर फिर आँखें बन्द कर, फिर खोल कर खड़े हो**) कभी कभी दिमाग मे कैसा कैसा फितूर सा जान पडता है, अल्लाह ! (**फिर आँखे बन्द कर, कुछ देर पश्चात् आँखें बन्द ही किये हुए एकाएक**) मालूम होता है दुआ तुझ तक पहुँच गयी मेरे खुदा ! और और मेरी दरख्वास्त मजूर भी हो गयी ! (**अट्टहास कर आँखें खोलते हुए**) होती कैसे नही ? (**फिर घुटने टेककर**) पाक दरख्वास्त थी, अल्लाह ! (**खड़े होकर**) वह दरख्वास्त मजूर न होना होती तो उस दिन उस जलते हुए महल मे से लौडियाँ मुझे जीता हुआ कैसे निकाल लाती ?.. उसकी पाक मुहब्बत ने मुझे महल की आग से बचा लिया तो क्या मेरी पाक मुहब्बत उसे जग की आग

से न बचायेगी ? **(कुछ रुककर)** कैसे . . कस निज़ाम कहता है कि हमारी मुहब्बत पाक नही, मेरे खुदा ?..... शौहर बीबी की मुहब्बत पाक है ! . . काजी के शादी करा देने के सबब ! .....और शादी . शादी कैसी, परवरदिगार ?.....शौहर उसे तलाक देकर तोड सकता है . हिन्दुओ का विवाह . .उनका पतिव्रत धर्म उसका पाक होना, कुछ दूर तक मेरी समझ मे भी आता है, पर जहाँ शादी टूट सकती है, टूटने के बाद दूसरी हो सकती है, वह पाक कैसी ? . अगर बीबी को भी तलाक का अख्तियार होता तो क्या, अल्लाह, मै अपनी पहली और इस शादी को कायम रखती ? **(कुछ रुककर, फिर आँखें बन्द कर)** क्या . क्या हो रहा है मेरे दिमाग मे ? **(कुछ रुककर, आँखें खोल चिल्लाकर)** ए खुदा ! खुदगर्जो ने मेरे जिस्म का सौदा बिना मेरी मर्ज़ी के किया ! **(धीमे स्वर में, किन्तु जल्दी जल्दी)** मैंने जिस्म का सौदा नही, अपनी तमन्नाओ का सौदा, अपने दिल का सौदा, एक ही बार, एक ही लहमे मे, मैंने एक ही शख्स निजाम से किया था।**(आँखें बन्द कर)** उसने मेरी तस्वीर तख्ते पर खीची थी और मैंने खीची थी अपने आइन्दा ज़िन्दगी के खयाली परदे पर, जो जल नही सकती ! ज़िन्दगी रहते मिट नही सकती। **(आँखें खोलकर)** परवरदिगार ! किस दूसरे को चाहा है मैंने और किस दूसरे को चाहा है निज़ाम ने ? ...फिर भी मै उसे समझा न सकी कि दीवाने, तेरी मुहब्बत पाक है ।.. वह चला गया... तस्वीरे जल रही थी, मुसव्विर की ज़िन्दगी जल रही थी, उसकी आरज़ू जल रही थी.

और वह चला गया.....वह चला गया अपनी हसरतो को लेकर वह चला गया मुहब्बत के शोलो को उछालता हुआ । .. काश मैं उस दिन ही जल जाती ! .....आँखे खोलकर मैंने पुकारा—निज़ाम ! ....सब चुप थे, तकदीर बोली, पगली, अपने दामन को सभाल, वह चला गया, तेरे दामन को मोतियो से भरकर चला गया !

[नसीम की आवाज नेपथ्य से आती है–'मुसव्विर ! मुसव्विर !']

लाड—(चौंककर, सामने देख) मुसव्विर ? मुसव्विर चला गया ! **(सामने देखते हुए, आश्चर्य से)** नसीम ! ....नसीम ! .....

[नसीम का खाली पिंजरा लिये हुए एक लौंडी का प्रवेश ।]

लौंडी—नसीम उड गयी, मलिका !

लाड—नसीम उड गयी ? नसीम भी चली गयी ?

लौंडी—हाँ, मलिका, चली गयी !

लाड—चली गयी, अपनी सहेली से बिना कुछ कहे चली गयी . चली गयी.. मुझे हमेशा के लिए तनहा छोडकर चली गयी ! ..महल हँस रहा है, फूल हँस रहे है, अ ह ह हा ! मलिका हँस रही है. पर लाड की सहेली चली गयी, बानू की सहेली चली गयी, अह ह हा ! बानू की सहेली ईद के दिन चली गयी और वह भी चला गया !

लौंडी–कौन मलिका, कौन चला गया ?

लाड–**(आँखें फाड़कर सामने की ओर पागलों की तरह देखते और हाथ उठाकर उँगली से संकेत करते हुए)** वह...वह....

वह देखो, ..वह . . वह जा रहा है ! नसीम नसीम भी जा रही है !.... .पुकारो, नसीम ! पुकारो, **(कुछ रुककर)** नही नही लौटता ?

लौंडी—(कुछ घबरा कर) कौन नही लौटता, मलिका ?

लाड—(अपनी ही धुन में) नसीम ! नसीम ! कहो न उससे कि मै पुकार रही हूँ, .बानू पुकार रही है.. उसकी तस्वीर पुकार रही है तस्वीरे ! आग ! . आग ! .

लौंडी—(घबराकर) मलिका ! मलिका ! आपको क्या हो गया है ? कहाँ है आग ?

लाड—(एक तस्वीर उतार उसे सामने की ओर फेकते हुए) वह .वह देखो, तस्वीरे जल रही है ।

लौंडी—(एक दम घबराकर जोर से) मलिका ! मलिका !

लाड—(आँखे फाड़ फाड़ सामने की ही ओर देखते हुए) हाँ, हाँ, तस्वीरे जल रही है, . महल जल रहा है ..... सब कुछ जल रहा है ! यह यह देखो, **(अपने दामन को दोनों हाथों से पकड़कर)** यह देखो, मेरे दामन को भी लपटो ने पकड लिया !. अ ह ह हा! अ ह ह हा !

लौंडी—(जोर से) दौडो, दौडो, . कोई आओ, मलिका . मलिका को क्या हो गया !

[लाड का अट्टहास और लौंडी का शोर साथ साथ चलता है ।]

लघु-यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान--कन्नौज मे गगातट पर शेरशाह का शिविर

समय--रात्रि

[दूर पर गगा है । उसके किनारे-किनारे शिविर के डेरो पंक्तियाँ दिखायी देती है, परन्तु रात के कारण गंगा का प्रवाह और डेरे धुंधले-धुंधले दिखायी पड़ते हैं । निकट ही शेरशाह के डेरे का कुछ भाग और उसकी परछी दिखायी देती है । परछी मे गद्दी पर शेरशाह और उसके सामने कालीन पर निज़ाम और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं । शेरशाह हुक्का पी रहा है । परछी के बाहर जो मशाल जल रही है , उसके कारण परछी का दृश्य स्पष्ट है]

शेरशाह--तुमने सचमुच ही गजब किया, पडित ! (**हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए**) हुमायूँ के इतने सिपाही 'चलो भाई घर चले' यह कह कहकर चल देगे, इसे हुमायूँ ही ने क्या. मैने भी न सोचा था। यह हाल देखकर तो मुझे यूनान के सिकन्दर के हमले की याद आती है ।

ब्रह्मादित्य--मुझे दुख यही है,जहाँपनाह, कि इन सैनिको को मे अपनी ओर न कर सका । इनमे घर भागने का तो साहस है, पर मुगलो को छोडकर हमारी ओर से लडने का नही !

निज़ाम--पर लडाई अब होगी कब ?

ब्रह्मादित्य--आप किसी दिन भी मुगलो पर हमला कर सकते है क्योकि हुमायूँ की रही हुई सेना में से भी अधिकाँश युद्ध करने वाली नही है ।

शेरशाह---अच्छा, बची हुई फौज भी नही लडेगी ?

ब्रह्मादित्य---अधिकतर नही। मुगल तो बहुत थोडे हैं, क्योकि हुमायूं को भाइयो से सहायता न मिलने के कारण सारे मुगल सैनिक तो आये ही नही , अधिकतर सैनिक इसी देश के है, जैसा मैने कहा था-किगये के टट्टू । मैंने क्या-क्या किया है इसे अब पूरी-पूरी सफलता मिलने पर आज आपको बताता हूं ।

शेरशाह---(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआं छोड़ते हुए) हाँ, हाँ, ज़रूर, वह बाते तो सुनने के काबिल होगी ।

ब्रह्मादित्य---सुनिए-धीरे धीरे उनके कई मुसलमान सरदारो को मुसलमान नजूमी और इने गिने हिन्दू सरदारो को हिन्दू ज्योतिषी का वेष धारण कर मैने समझाया कि आपका भविष्य क्या है, आपकी जन्म पत्री बनाकर आपके ग्रहो का फल कहा है ।

शेरशाह---(आश्चर्य से) लेकिन मेरी तो कोई जन्मपत्री है ही नही ।

ब्रह्मादित्य---जन्मपत्री नही है तो न सही, कर्मपत्री तो है। आपने अब तक जो कुछ किया है, उससे मैने आपकी जन्मपत्री मे रखे है उनका फल ठीक मिल जाता है ।

शेरशाह---गज़ब किया तुमने ! **(धीरे-धीरे नाक से धुआं निकालता है ।)**

ब्रह्मादित्य---फिर जिनका ज्योतिष पर विश्वास नहीं है उन्हें मुसलमान फकीर और हिन्दू साधु बनकर, और भी न जाने कैसे-कैसे वेष बनाकर, तरह-तरह से समझाया है । किसी को आपकी

वीरता का दिग्दर्शन कराया है, किसी को आपकी सेवाओ का। भविष्य मे आप क्या करने वाले है, उन कार्यों से सबके साथ सैनिकों का भी कितना लाभ होगा, यह भी कहा है। मुगल विदेशी है, उनसे देश का उपकार न होगा, यह भी सिद्ध किया है।

शेरशाह—तुम्हारी कोशिशो का ही यह नतीजा निकला है 'चलो भाई, घर चले' कहकर बहुत मे सिपाही चले गये और चले जा रहे है।

ब्रह्मादित्य—अकेले इस समझाने बुझाने का यह फल हुआ है, यह तो नही कहा जा सकता।

शेरशाह—(**हुक्का गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए**) तब ?

ब्रह्मादित्य—पहले से ही हुमायूँ को लोग विदेशी समझते थे, बाबर ने इस देश और यहाँ के लोगो के लिए जो बाते लिखी है, उन्हे भी कई लोग जानते है। सुलतान महमूद लोदी और सुलतान इब्राहीम लोदी की भी हारा को लोग भूले न थे और इनके कारण भी अब तक क्षोभ था। आपने जौनपूर, बिहार आदि मे प्रजा की जो सेवाएँ की है तथा इधर आपको जो सफलताएँ मिली है, उनसे भी लोग अनभिज्ञ नही थे। वायुमडल मेरे काम के लिए पहले से ही तैयार होता तो मेरे काम का यह फल भी न निकलता। जो नतीजा आप देखते है यह हुआ है सब बातो के इकट्ठे सम्मिलन से।

निज़ाम—(**चिन्ताकुल स्वर में**) तो छोटी मोटी लड़ाई भी न होगी ?

ब्रह्मादित्य—यह कहना तो बहुत कठिन है, क्योकि हुमायूँ भी

बडा बहादुर आदमी है, कुछ मुगल सैनिक भी उसके साथ है, किन्तु उसकी बची हुई सेना के अधिकाश सैनिक चघाटी है, चघाटियो मे कोई युद्ध न करेगे यह निश्चित बात है ।

निजाम--तो, भाई साहब, हम लोगो को अब जल्दी से जल्दी मुगलो पर हमला कर देना चाहिए, क्योकि रहे हुए सिपाही भी 'चलो भाई, घर चले' कहते हुए चल दिये तो

ब्रह्मादित्य--**(मुस्कराकर)** शाहजादा साहब को देश के लिए युद्ध मे भाग लेने की बडी चिन्ता है, जहाँपनाह !

शेरशाह--पर क्यो, पडित, हुमायूँ हम पर हमला क्यो नही करता ?

ब्रह्मादित्य--**(सोचते हुए)** यह कुछ आश्चर्य की बात अवश्य है, किन्तु चौसा मे जो कुछ हुआ उसके कारण जल्दी कुछ भी करने का कदाचित् उसका साहस नही हो रहा है । फिर भाइयो से उसे सहायता न मिली, इसलिए वह जानता है कि इस बार यदि उसकी हार हुई तो या तो वह युद्ध मे मारा जायगा, या उसे सदा के लिए यह देश ही छोड देना होगा ।

[कुछ देर निस्तब्धता ।]

निजाम--**(अधीर होकर)** जो कुछ हो, जहांपनाह, हम को ही उस पर हमला करना चाहिए ।

[कोई कुछ नही कहता । कुछ देर निस्तब्धता ।]

ब्रह्मादित्य--अच्छा, तो फिर मै अपने काम पर जाऊँ; आज्ञा है ?

शेरशाह—(खड़े होते हुए) अच्छी बात है, पर रोज रात को सब हाल सुनाने आ जाया करो।

ब्रह्मादित्य—प्राय आ ही जाता हूँ। (**शेरशाह और निज़ाम दोनों को अभिवादन करके जाता है।**)

शेरशाह—(**निज़ाम से**) तो, चलो, निज़ाम, बहुत रात गयी, हम लोग भी सो रहे।

[**शेरशाह परछी के भीतर डेरे में जाता है। निज़ाम कुछ न कह, एक लम्बी साँस लेकर, धीरे धीरे उसके पीछे जाता है।**]

लघु-यवनिका

छठवां दृश्य

स्थान—कन्नौज का गंगा तट

समय—प्रात काल

[**गंगा के दूसरे किनारे पर हुमायूँ के डेरे दिखायी पड़ते हैं। गंगा का पानी, रेत और सारा दृश्य सूर्य के प्रकाश से आलोकित है। उस पार हुमायूँ की सेना में ऐसी भगदड़ मची है कि न कोई किसी की ओर देखता है और न कोई किसी की बात सुनता है। ऐसा हो हल्ला हो रहा है कि कानों के परदे फट रहे हैं। बिना किसी भी प्रकार के युद्ध के ऐसी भगदड़ और हल्ला एक विचित्र प्रकार का दृश्य है। बहुत से सैनिक बहुत जल्दी-जल्दी गंगा पार करने का प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ तैर कर इस पार आ रहे हैं और कुछ**

तैरते-तैरते डूब भी रहे हैं। जो इस पार उतर रहे हैं उन्हीं में हुमायूं भी उतरता है। उसकी परेशानी अवर्णनीय है। सारे वस्त्र भींग गये हैं, न सिर पर पगड़ी है और न पैरों में जूते।]

लघु-यवनिका

उपसंहार

स्थान--दिल्ली के बाहर का एक मार्ग

समय---प्रात काल

[दूर पर शेरशाह के समय के दिल्ली नगर की कुछ इमारत दिखायी पड़ती है; इनमें सबसे ऊँची कुतुब मीनार और उसी के निकट शेरशाह के वक्त के किले का कुछ बाहरी भाग दिखता है। मार्ग निर्जन है और दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की छाया से आच्छादित। नेपथ्य में गान की ध्वनि सुन पड़ती है। स्वर निज़ाम का है।]

दुनिया है जजाल, रे बन्दे, दुनिया है जजाल
नजर नजर को कदम कदम पर रूप रिझाने वाले
डगर डगर में जाल बिछे हैं मन को फसाने वाले
देख के चलना चाल, रे बन्दे,
दुनिया है जजाल.. .

[गाते गाते निज़ाम का प्रवेश। उसके स्वर से तो वह पहचान

लिया जाता है परन्तु स्वरूप और वेश में इतना अन्तर हो गया है कि देखकर उसको पहचानना बहुत कठिन है। सिर के बाल लम्बे हो गये हैं, जो पीठ और कन्धों पर फैले हुए हैं। मूंछें भी बडी बड़ी हैं और दाढ़ी भी रख ली गयी है। दाढी छाती तक बढ़ आयी है। उसका वेश फ़कीरी है, पर तक लम्बा हरे रंग का चोला, दाहने हाथ में मनका और बायें हाथ मे कमन्डल। इस वेष में भी निज़ाम सुन्दर दिखायी पड़ता है। उसका गीत आगे बढ़ता है।]

दुनिया है जजाल
दुनिया की सुन्दरता फानी, आज का जीवन कल है कहानी
अब तो मन मे बैठ गयी है, अपने गुरू की प्यारी बानी
तोड दे मोह का जाल, रे बन्दे
दुनिया है जजाल ..

निज़ाम—गुरूजी का यह फिकरा 'सर्वखल्विद ब्रह्म' रट. हाँ, अच्छी तरह रट लेने पर भी, इसका मतलब उनके समझाने ....न जाने कितनी दफा अच्छी तरह समझाने पर भी समझ मे न आया लेकिन ...लेकिन जब मे उन्होने यह गीत बनाया है

(गाता है।)

दुनियाँ है जजाल .
मन की आँखे देख रही है जिससे जग मे उजाला
सबसे बडा सुन्दर है सुन्दरता को रचने वाला
उसीसे अपना सवाल, रे बन्दे
दुनिया है जजाल.....

निज़ाम––जब से हर एक आदमी को भाई साहब की शक्ल में हर एक औरत को लाड की सूरत में देखने की कोशिश करायें है तब से इस कोशिश मे जरूर कामयाबी मिल रही है। ...और पूरी..पूरी पूरी कामयाबी के बाद क्या होगा ? **(फिर गाता है।)**

दुनिया है जजाल .
मिट्टी का यह बदन है एक दिन मिट्टी मे मिल जाना
मिटने वाली दुनिया से क्या मन को अपने लगाना
रूह को अपनी सभाल रे बन्दे
दुनिया है जजाल .

निज़ाम––भाई साहब तो अपनी रिआया से ही मुहब्बत कर सकते है, मुगल उनके दुशमन है इसलिए वह उनसे नफरत करते है, लेकिन मेरे मेरे लिए तो सभी आदमी भाई जान और सभी औरते लाड के मानिद प्यार मुहब्बत करने की चीज हो जायगे। हाँ, लाड की मुहब्बत मे, गुरूजी के लफ्जो मे मेरे दिल मे जो 'वासना' थी वह वह इस मुहब्बत मे न रहेगी। **(फिर गाता है।)**

दुनिया है जजाल
मन की आँखो पर जो बँधी थी मोह जाल की पट्टी
जब से खुली है देख रहा हूँ सब धोके की टट्टी
इसका रोग न पाल, रे बन्दे
दुनिया है जजाल. ...

निज़ाम––लड़ाई न हुई। मैं भाई जान के लिए लड़कर

मर सका. लाड के बिना जीना मुश्किल था, खुदकशी करने की कोशिश की, पर उसी वक्त गुरूजी मिल गये और और क्या कर डाला उन्होने मेरा। **(फिर गाता है ।)**

दुनिया है जजाल
हर नारी के रूप मे उसका जलवा देख रहा हूँ
अब अपने दुश्मन को भी भाई सा लेख रहा हूं
सब मे वही जमाल रे बन्दे
दुनिया है जजाल

निज़ाम---धीरे धीरे किस . किस तरह मेरा दिल एक सीढी दूसरी और दूसरी से तीसरी पर चढ रहा है अब गिरना . हाँ, गिरना नही, चढना . चढते ही जाना है, पाक ..पाक से पाक जीने पर। **(फिर गाने लगता है।)**

दुनिया है जजाल. रे बन्दे, दुनिया है जजाल
देख के चलना चाल, रे, बन्दे दुनिया है जजाल
दुनिया है जजाल, रे बन्दे
दुनिया है जजाल

[नेपथ्य में कुछ लोगों की बातचीत का स्वर सुनायी देता जो इसी ओर आ रहा है । निज़ाम गाना बन्द कर कुछ ध्यान से स स्वर को सुनता है । स्वर को बहुत नज़दीक आते हुए सुनकर वह एक दरख़्त की ओट में खड़ा हो जाता है । कुछ ही देर में ई हिन्दू मुसलमान नागरिकों का बातचीत करते हुए प्रवेश ।]

एक हिन्दू---हाँ, हाँ, मै कहता हूँ, शेरशाह के राज्य की

तरह कोई राज्य इस देश मे नही हुआ !

दूसरा हिन्दू—मैं भी मानता हूँ और इसका कारण है कि जिस तरह वह बिना किसी भी भेद भाव के राज्य करते है, उस प्रकार आज तक किसी ने नही किया ।

एक मुसलमान—हाँ, इसमे तो शक नही कि उनके लिए हिन्दू मुसलमान सब एक सा है ।

तीसरा हिन्दू—वे जितना आदर मसजिद का करते है उतना ही मदिर का ।

चौथा हिन्दू—उन्होने गोहत्या भी बन्द कर दी है

दूसरा मुसलमान—उनके दिल मे तो सिर्फ एक खयाल है कि रिआया की तरक्की और उसे आराम किस तरह हो ।

तीसरा मुसलमान—चूंकि रिआया मे ज्यादातर खेती करने वाले है, इसलिए उनके फायदे के लिए कितने कानून बने है ।

पाँचवाँ हिन्दू—और इन कायदो की पाबन्दी राज कर्मचारियों को किस प्रकार करनी पड रही है ।

छठवाँ हिन्दू—अरे ! यह पहला अवसर है जब राज कर्मचारियों को अपने को प्रजा का सेवक मानना पडता है ।

चौथा मुसलमान—और कोई कही किसी भी तरह की ज्यादती करता है तो उसकी शिकायत खुद बादशाह सुनते है सबूत होने पर बड़ी से बडी, कडी से कडी सज़ा देते है ।

पाँचवाँ मुसलमान—फिर सब तरफ़ तरक्की ही तरक्की नज़र आ रही है । क्या नही हो रहा है ?